सत्य प्रकाश

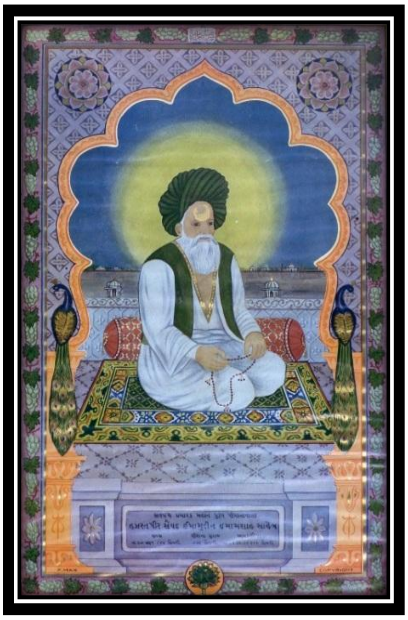
इमामशाही / पीरणा सतपंथ का इतिहास

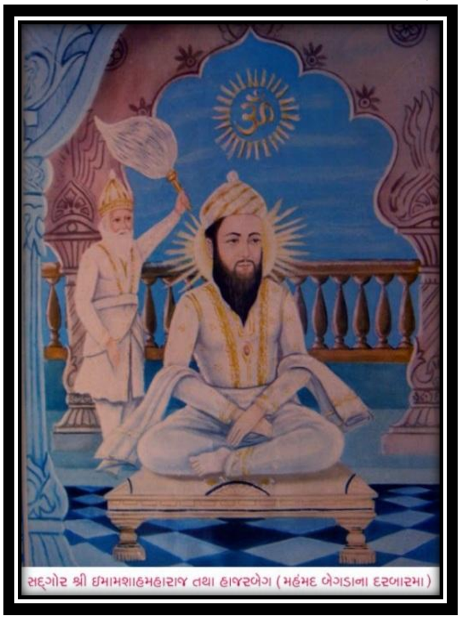
और उसका हिंदू क.क.पा. जाती पर प्रभाव

हिन्दी भाषा में

वर्ष २०११ आवृत्ति २

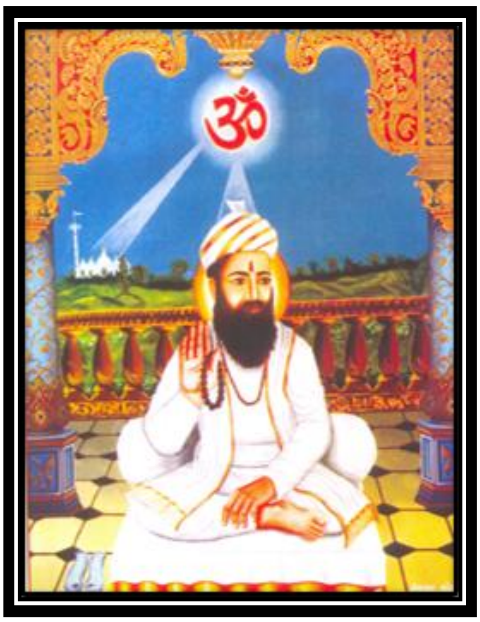






मियाँ या महादेव?

क्या है सच्च?





For Reference See Pages: 78, 87, 110, 161.

सत्य प्रकाश

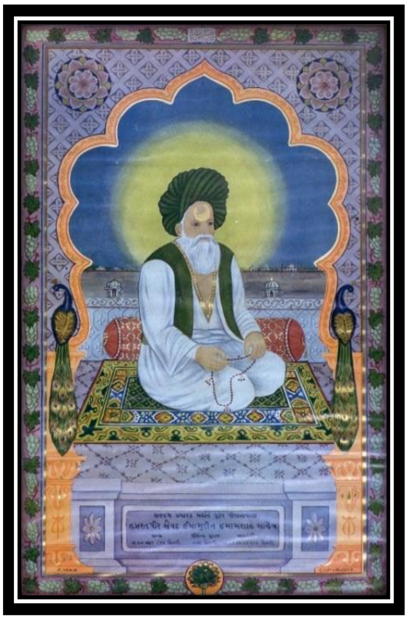
इमामशाही / पीरणा सतपंथ का इतिहास

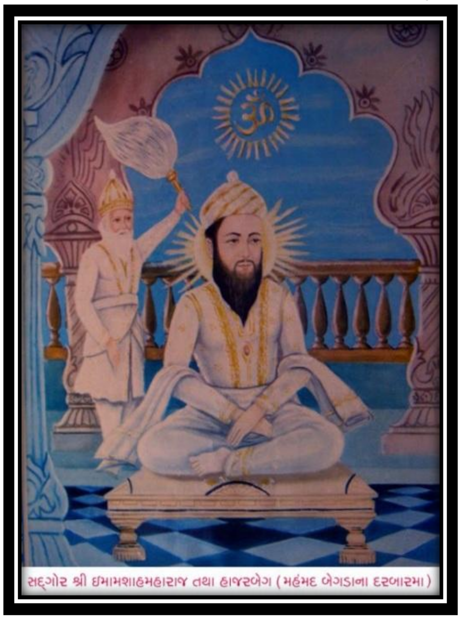
और उसका हिंदू क.क.पा. जाती पर प्रभाव

हिन्दी भाषा में

वर्ष २०११ | आवृत्ति २

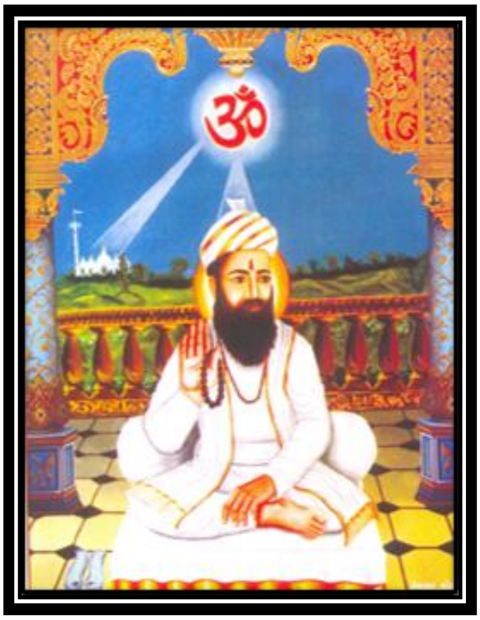


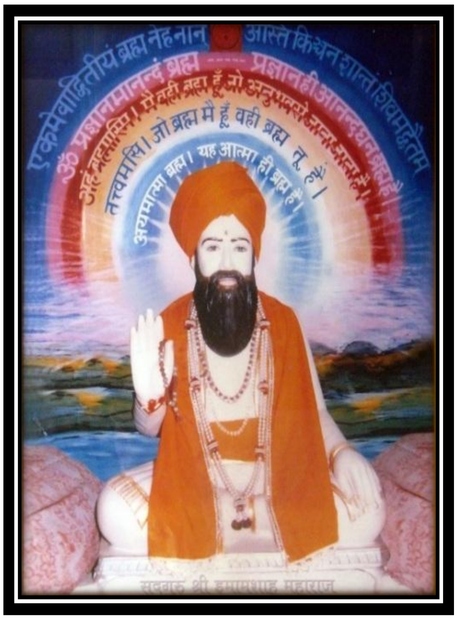




मियाँ या महादेव?

क्या है सच्च?





सत्य प्रकाश

इमामशाही / पीराणा सतपंथ का इतिहास

और उसका हिंदू क.क.पा। जाती पर प्रभाव

हिंदी भाषा में

वर्ष २०११ आवृति २



पीराणा सतपंथ के स्थापक - इमामुद्दीन अबदूर रहीम सैयद / इमाम शाह बावा / इमाम शाह महाराज, हाजर बेग के साथ मुहम्मद बेगड़ा के दरबार में

इस्लाम धर्म के शिया पंथ का एक भाग निजारी पंथ का एक विभाग पीराणा सतपंथ का संक्षिप्त पर व्यापक इतिहास और कच्छ कड़वा पाटीदार लोगों का सामाजिक आओर धार्मिक इतिहास का एक पहेलु दिखाता है।

यह पुस्तक सरकारी दस्तावेजों और अन्य मजबूत प्रमाणों पर आधारित है।

प्रस्तावना

अगर थोड़ा गंभीर होकर विचार करेंगे की - क्या होगा जब हमें पता चले की कोई व्यक्ति “रक्षक” के भेस में हमारे बीच रहता हो लेकिन वह व्यक्ति वास्तव एक “भक्षक” निकले? आम जनता जिसे रक्षक समझती हो, उस रक्षक का छिपा भयानक रूप के बारे में जब आपको पता चले तो आप क्या अनुभव करेंगे? इसी अनुभूति, इसी भय और अपने लोगों को बचाने की चिंता के साथ में यह पुस्तक लिख रहा हूँ।

हिंदू धर्म की सुंदर धार्मिक नगरी के रक्षा का दायित्व लेने वाले हिंदू “रक्षक” के स्वांग में, सतपंथ धर्म के प्रचारक, “भक्षक” बन कर छिपे है। “सतपंथ” यह नाम भले ही एक हिंदू नाम जैसा लगता हो, पर वास्तव में वह एक मुसलमान धर्म है। पाकिस्तान देश के स्थापक मुहम्मद अली जिन्ना इस सतपंथ धर्म को पालते थे। मुहम्मद अली जिन्ना के दादाजी का नाम था “पुंजा”, जो गुजरात के हिंदुओं में एक प्रचलित नाम, और उनकी पत्नी का नाम था “मीठीबाई”। भारत की एक सुविख्यात कंपनी है, जिसका नाम है विप्रो (Wipro), इस कंपनी के चेरमेन का नाम है श्री अज़ीम प्रेमजी। वह भी इसी सतपंथ धर्म को पालते है। अज़ीम प्रेमजी के पिता न नाम है “प्रेमजी”। देखने वाली बात यह है की “पुंजा”, “मीठीबाई”, “प्रेमजी” यह सब हिंदू नाम है, तो क्या वह हिंदू थे? उत्तर है नहीं, वास्तव में, वह सब हिंदू नाम और पहचान अपनाने वाले मुसलमान लोग है। बात आगे बढ़ाते हुए, इसी सतपंथ धर्म के कारण गुजरात में हिंदू लोहाना जाती, सिंध की सुमारा जाती और अन्य कई जाती के लाखों लोग, सतपंथ धर्म को पालन कर धीरे-धीरे उनका सम्पूर्ण रूप से धर्म परिवर्तित होने के बाद आज उनकी अगली पीढ़ी कट्टर मुसलमान बन गई है।

इस सतपंथ धर्म की विशेषता क्या है? उसे हिंदू धर्म का आवरण अपनाने की क्या आवश्यकता है? इस सतपंथ धर्म का मकसद क्या है? ऐसे ही कुछ सवालों के उत्तर देने का प्रयास किया गया है।

१४वी सदी में जब शिया इस्लाम धर्म के प्रचारक भारत आए, तब भारत में मजबूत वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। जिसमें अगर कोई व्यक्ति अपने समाज से अलग हो जाए तो उसका जीना कठिन हो जाता था। ऐसी व्यवस्था के कारण कोई भी व्यक्ति अपना धर्म परिवर्तन कर अपने समाज से अलग होने की हिम्मत नहीं कर पाता था। ऐसी मजबूत व्यवस्था के कारण शिया मुसलमान प्रचारकों हिंदुओं को मुसलमान बनाने के अपने लक्ष्य में कोई खास सफलता नहीं मिल रही थी। इसलिए इस्लाम के चतुर प्रचारकों ने युक्ति पूर्वक एक नया रास्ता बनाया। इस युक्ति के अनुसार, धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्ति को अपने समाज से अलग होने का डर नहीं रहता था। उन्होंने, ऐसे धर्म की स्थापना की जिसमें बाहय तौर पर सब कुछ हिंदू धर्म जैसा लगे, पर वास्तव में उसका मूल इस्लामी हो। इस धर्म का नाम भी हिंदू / भारतीय शब्दों के आधारित - ‘सतपंथ’ रखा।

धार्मिक साहित्यों की बात आई तब उन्होंने भगवान विष्णु के दस अवतार को केंद्र में रखकर, **बनावटी हिंदू धार्मिक पुस्तक बनाए**। उनके नाम भी हिंदू धार्मिक पुस्तकों पर रखे गए। जैसे की

दस "अवतार", "नकलंकी गीता", "मनहर ज्ञान" इत्यादि। उन्होंने असली हिंदू भागवत दसावतार (दस अवतार) साहित्य में बताए गए भगवान विष्णु के अवतारों में मिलावट कर उन्हें भ्रष्ट किया। सबसे ज्यादा मिलावट उन्होने कृष्ण अवतार और बुध अवतार के साथ की। अंत में उन्होने हिंदू मान्यता के अनुसार, भविष्य में यानी कलियुग के अंत में, होने वाले "कल्कि अवतार", को भी भ्रष्ट किया। उन्होंने कल्कि अवतार को, तत्कालीन समय में ही, (दूसरे शब्दों में कहूं तो कलियुग की शुरु वात में ही) अपने बनावटी दस अवतार ग्रंथ में प्रगट करवा दिया। इस बनावटी दस अवतार ग्रंथ को लोगों के सामने झूठ के सहारे उसे असली हिंदू दस अवतार कह कर पेश कर दिया। इस बनावटी दस अवतार के मुताबिक इस्लाम धर्म के स्थापक मुहम्मद पैगंबर के दामाद, **"हजरत अली तालिब"**, को भगवान विष्णु का दसवां अवतार होने का बताया। इस्लाम को कलियुग का सच्चा पथ (सतपंथ) यानी सच्चा हिंदू धर्म बताया गया। हिंदू आसानी से इस्लामी धर्म को अपना सके, इस हेतु से अली तालिब के इस झूठा अवतार को भी **"निष्कलंकी नारायण"** जैसा हिंदू नाम दे दिया। **उनकी रणनीति के अनुसार, जब निर्दोष और अंजान हिंदू सतपंथ धर्म में पूरी तरह से रच पच जाएं तब उन्हें धीरे से कहा जाता है कि उन्होंने जो भी अबतक देखा, समझा और जिसका अनुभव किया है, वह तो केवल सांकेतिक है। वास्तव में मोक्ष पाने के लिए निष्कलंकी नारायण (यानी "अली तालिब") के सच्चे रूप (इस्लामी रूप) को पहचान कर जब उनकी सच्चे मन से उपासना होगी केवल तब ही मोक्ष मिल सकता हैं। इस तरह से लोगों की श्रद्धा के साथ खिलवाड़ किया जाता हैं।**

हिंदू आवरण के साथ पेश किया गया यह शिया इस्लाम धर्म, जिसके "सतपंथ" जैसे हिंदू नाम और उसके हिंदू आवरण के कारण, शिया इस्लाम के प्रचारकों को बड़ी सफलता मिली। बाह्य हिंदू रूप होने के कारण भोले और शंका न रखने वाले हिंदुओं को आकर्षित कर उन्हें इस पंथ में बाँध रखने में इस्लाम के प्रचारकों को सफलता मिली। शुरुआत में अनुयायियों को उनके हिंदू नाम, हिंदू रीत रिवाजों के साथ रहने दिया गया। इस वजह से नए अनुयायी अपने हिंदू समाज के बीच रह कर अपना मुसलमान धर्म पालने लगे। और अन्य हिंदुओं को इसका पाता नहीं चला। हिंदू वर्ण व्यवस्था के मजबूत कवच को भेद ने में शिया इस्लाम के प्रचारक सफल हुए। उनकी रणनीति के अनुसार, समय जाते, धीरे-धीरे कुछ पीढ़ी गुजर जाने के बाद, सतपंथ के प्रचारकों ने अपना असली रूप दिखाया। जिन-जिन प्रचारकों को लगा के अब सतपंथ धर्म की पकड़ उनके अनुयायियों पर मजबूत हो गई है, और उनके अनुयायी अब हिंदू समाज से बिलकुल कट चुके है, जिसके कारण वह हिंदू समाज में वापस नहीं जा पाएंगे, तब उन्होने सतपंथ के हिंदू दिखावे को हटाना शुरू किया और सम्पूर्ण रूप से इस्लामी मूल्यों को प्रस्थापित करते गए। ठीक इसी कारण से मुहम्मद अली जिन्ना के दादा का नाम, उनकी पत्नी का नाम, अज़ीम प्रेमजी के पिता का नाम हिंदू जैसा है, पर वह मुसलमान है|

इसी सतपंथ की एक शाखा गुजरात में आज भी कार्यरत है। सतपंथ के मूल स्थापक पीर सदरुद्दीन, उनके बेटे पीर कबिरुद्दीन और उनके बेटे थे **इमाम शाह बावा** थे। इमाम शाह का पूरा नाम **इमामउद्दीन अब्दुर रहीम सैय्यद** है। इसी इमाम शाह ने गुजरात आकार अहमदाबाद के पास, वर्तमान समय के **"पीराणा"** नामक एक गाँव में बस कर सतपंथ का प्रचार किया। उनके अनुयायी

इस पंथ को पीराणा सतपंथ भी कहते है। इस पीराणा सतपंथ की एक शाखा महाराष्ट्र में जलगांव के पास, **"फैजपुर"** नामक एक छोटे शहर में भी है। समझने वाली बात यह है की हिंदू आवरण अपनाने के कारण आज इमाम शाह को भी हिंदू नाम दिया गया है। उनका हिंदू नाम है **इमाम शाह महाराज।**

इस सतपंथ धर्म से जुड़े हुए अनुयायियों का सबसे बड़ा समूह "कच्छ कड़वा पटीदार" जाती का है। पीराणा सतपंथ का इतिहास ओर उसका कच्छ कड़वा पटीदार जाती पर प्रभाव इस विषय पर बहुत अच्छी जानकारी इस पुस्तक में दी गई है। इस पुस्तक में यह भी बताया गया है की किस तरह से सुनियोजित व्यवस्था के माध्यम से भोले और अंजान हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कराया जाता है और उन्हें पता भी नहीं चलता है। आज भी कई हिंदू लोग और साधु इसके शिकार बन रहे है। कच्छ प्रदेश के कड़वा पटीदार जाती के लोगों का समूह इस पीराणा सतपंथ के चपेट में आने वाला सबसे बड़ा समूह है। किन परिस्थितियों में और किन कारणों को लेकर इन लोगों ने इस शिया मुसलमान धर्म को अपनाया और बाद में उसी समूह के एक बहुत बड़े हिस्से ने कैसे सतपंथ को त्याग कर फिर से मूल सनातन हिंदू वैदिक धर्म को अपनाया। इन सभी बातों पर इस पुस्तक में पूरी जानकारी दी गई है। यह सब कुछ बहुत रसमय और दिलचस्प है। धर्म परिवर्तन के विषय पर अभ्यास करने वाले हर एक व्यक्ति के लिए यह पुस्तक बहुमूल्य है।

इस पुस्तक का आधार सरकारी गेजेटीअर (Gazetteer), विश्व विख्यात संशोधनकारों (World Renowned Researchers), यूनिवरसिटि (University - महाविद्यालय), शब्दकोश (Dictionary), मुसलमानो की संस्थाओं के दस्तावेज़, कच्छ कड़वा पटीदार समाज के दस्तावेज़ इत्यादि पर रखा गया है। यह सभी इसी बात की पुष्टि करते है की सतपंथ एक मुसलमान धर्म है। हिंदुओं का धर्म परिवर्तन का कार्य आसान बनाने के लिए सतपंथ को रचा गया था। हिंदू नामक सागर के एक किनारे से मुसलमान नामक दूसरे किनारे तक लोगों को ले जाने वाली जो नाव हैं, वह सतपंथ है। वह दस्तावेज़ यह भी कहते है की इमाम शाह हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करने का उद्देश्य लेकर गुजरात आए थे। जिसमें वह काफी हद तक सफल भी हुए।

महोदय, मैं एक ऐसी जाती (कच्छ कड़वा पटीदार जाती) से आ रहा हु, जिनके पूर्वज इस सतपंथ धर्म के कपट जाल के शिकार हुए थे और उसमें बुरी तरह से फंसे हुए थे। पीराणा सतपंथ धर्म, हमारे जाती में इतना फैला था कि इस धर्म के मुख्य प्रचारक (जिसे "काका" कहा जाता हैं) अधिकतर हमारे ही जाती के होते है। पर सद-भाग्य से, कुछ दशकों पहले हमारे जाती में बड़ी क्रांति हुई। हमारे दादा-परदादा को पता चल गया की जिस धर्म को वह कलियुग का सच्चा हिंदू धर्म समझ कर पालते थे, वह वास्तव में एक मुसलमान धर्म है। जब हमारे जाती को सतपंथ धर्म के इस कपट के बारे में सही-सही समझ आई और पता चला के सतपंथ हिंदू धर्म नहीं है तब उन्होने सतपंथ धर्म को त्यागना शुरू कर दिया। इसके कारण पीराणा सतपंथ धर्म की हालत दिन ब दिन खराब होने लगी।

अब पीराणा सतपंथ धर्म के प्रचारकों को अपनी बिगड़ती हालत का पता चला तब उन्होने "ताकिया" का प्रयोग करना शुरू कर दिया। मुसलमानों में **"ताकिया"** नाम वाली एक ऐसी प्रणाली है जिसका उपयोग वह अपने धर्म के हित के लिए करते है। इस प्रणाली के अनुसार उन्हें इस्लाम में प्रतिबंधित कोई भी कार्य करने की अनुमति मिल जाती है। जैसे की खुद को मुसलमान न होने का दिखावा करना, झूठ बोलना, छलना, हिंदू साधु का वेश अपनाना और बाह्य तौर पर हिंदू देवी देवताओं का प्रचार करना, दुश्मन का विश्वास जीत कर उसे दगा देना, इत्यादि। हाली में कुछ वर्षो पहले इस ताकिया से लैस होकर सतपंथ के प्रचारकों ने अंजान हिंदू साधुसंत का संपर्क किया। उन्हें यह बताया की हम "नारायण" के उपासक है, जो भगवन विष्णु का दसवां अवतार है। पर उन्होंने यह नहीं बताया की उनका १०वाँ अवतार बनावटी दस अवतार के पुस्तक पर आधारित है। साधुओं को सच्ची जानकारी से वंचित रखा। दूसरी ओर हिंदू धर्म के प्रचार प्रसार के लिए और हिंदू धर्म की रक्षा के लिए साधुओं से मदद मांगी। उन्होने कहा के सतपंथ धर्म के अनुयायी मुसलमान न बन जाए इसलिए वह साधुओं की मदद चाहते हैं। जब की वास्तव में सतपंथ धर्म के अनुयायी, अपनी दिल की आवाज़ सुन कर, सनातन हिंदू वैदिक धर्म को अपना रहे थे। भोले और अंजान साधुओं की मदद से, उन्होंने इमाम शाह की कब्र को समाधि बताकर उस कब्रस्थान के पास साधु सम्मेलन का आयोजन किया। साधुओं के माध्यम से उनके अनुयायियों को यह संदेशा दिया की सतपंथ हिंदू धर्म का भाग है। सतपंथ के प्रचारकों की नज़र में यह युक्ति काम आई। इससे पीराणा सतपंथ को त्यागने वाले लोगों का प्रवाह रुका। जो लोग सतपंथ को त्याग कर हिंदू बनने जा रहे थे, वह इस मुसलमान धर्म में ही टीके रहे। बात इतने से नहीं रुकी बल्कि कुछ लोग जो सतपंथ का त्याग चुके थे वह भी फिर से सतपंथ के साथ जुड़ने लगे। हिंदू लोग मुसलमान बनने लगे। अनजाने में ही सही, हिंदू साधुओं ने हिंदू धर्म को बड़ा नुकसान पहुँचाया।

जो लोग इस सतपंथ को हिंदू धर्म समझने की भूल कर रहे है, उन्हें सच्चाई बतानी जरूरी है। उन्हें बताना चाहिए की उनके साथ धोखा हो रहा है। आज भले उन्हें ऐसा न लग रहा हो, पर उनकी आने वाली पीढ़ी के साथ जरूर धोखा होगा और उनकी आने वाली पीढ़ी उन्हें कदापि माफ नहीं करेगी। जो साधु गण सतपंथ के झूठे प्रचार के शिकार हुए है, उन्हें भी सच्चाई बताकर सतपंथ के प्रचारकों द्वारा आयोजित साधु सम्मेलन और अन्य कार्यक्रमों में जाने से रोकना चाहिए। सतपंथ हिंदू धर्म नहीं है इसका प्रचार प्रसार पूरे जोश के साथ होना चाहिए। लोगों को हिन्दू नामक किनारे से मुसलमान नामक दूसरे किनारे तक ले जाने वाली सतपंथ नामक इस नाव को मिटा देना चाहिए न की उसको बढ़ावा देना चाहिए। हमें विश्वास है इससे हज़ारों हिंदू मुसलमान बनने से बच जाएंगे।

रियल पाटीदार
20-Sep-2011
www.realpatidar.com

मूल इंगरेजी प्रस्तुति (Presentation) का हिंदी भाषा में अनुवाद

सतपंथ / भारतीय इस्माइलीज़म

का इतिहास

इमामशाही पंथ

जिसे

पीराणा सतपंथ / काका पंथ

भी कहा जाता है।

और उसका हिंदू क.क.पा. जाती पर प्रभाव

www.realpatidar.com
mail@realpatidar.com

आवृति: 2 -Draft -Pending
दिवस: 20-Sep-2011

सामान्य

इस प्रस्तुति (Presentation) उन लोगों को ध्यान में रखकर बनाया गया है, के जिनके पास सतपंथ विषय पर पूरी जानकारी नहीं है और उन्हें संक्षिप्त में सतपंथ धर्म का इतिहास, सिद्धांत, साहित्य, मान्यताए इत्यादि के बारे में जानने की इच्छा हो।

- केवल जानकारी और अभ्यास के लिए।
- साफ दिल की चर्चा और विचार के लिए।
- किसी भी प्रकार की धार्मिक और राजकीय प्रचार और विवाद के लिए कोई स्थान नहीं है।
- इस प्रस्तुति को मजबूत आधार वाले दस्तावेजों, जानकारी और प्रख्यात शोधकर्ताओं और लेखकों के काम के आधार पर बनाया गया है।
- सिर्फ कुछ ही जगहों पर क.क.पा. जाति में मौखिक रूप से संभाली कुछ जानकारियो का उपयोग किया गया है।
- खुद की समझ और विवेक बुद्धि का इस्तेमाल करें और इस विषय पर अपनी राय बनाए।
- सच्चे सतपंथ धर्म को अपमानित करने का कोई हेतु नहीं है।
- फिर भी अगर कही कुछ विरोधाभाषी दिखे, तो उसे किसी धर्म अथवा संप्रदाय के खिलाफ न समझे।
- इस प्रस्तुति का उद्देश्य सरकारी दस्तावेजों, शोधकर्ताओं और लेखकों के काम को आधार बना के केवल ऐतिहासिक सच्चाईओं को लोगों के सामने पेश करना है।
- “सतपंथ” और “सतपंथी” शब्दों को इक दूसरे की जगह इस्तेमाल किया गया है। जहां “सतपंथ” लिखा हो, वहाँ “सतपंथी” अर्थ हो सकता है।
- उसी तरह “हिंदू” और “सनातन” शब्दों को भी इक दूसरे की जगह इस्तेमाल किया गये है।
- तारीखों को “DD-MM-YYYY” फोरमेट में लिखा गया है।

2

चरण

इस प्रस्तुति को नीचे बनाये हुए विभाग में विभाजित किया गया है;

1. चरण १: इमाम शाह तक का काल
2. सरकारी दस्तावेजो और संशोधनकारों के निष्कर्ष
3. ताकिया
4. चरण २: इमाम शाह के बाद का काल

3

1. चरण १

इमाम शाह तक का काल

4

मुद्दो

चरण १ में नीचे बताये हुए मुद्दों का समावेश है;

1. सतपंथ का मूल
2. इमाम शाह की भूमिका
3. सतपंथ धर्म का प्रचार
4. धर्म परिवर्तन की पद्धति
5. इमाम और अखंड ज्योत
6. सूफी आवरण
7. सूफी भाव
8. सतपंथ धर्म के सिद्धांत
9. दस अवतार – हिन्दुओके दस अवतार से कितना अलग है?
10. सतपंथ के साहित्यों – गीनान और दुआ / कलमा

5

1.1 सतपंथ का मूल

संक्षिप्त मे...

6

सतपंथ का मूल ...

- इस्लाम के स्थापक मोहम्म्द पेगंबर की मृत्य बाद इस्लाम के दो मुख्य पंथ / संप्रदाय उभरकर सामने आए...शिया और सुन्नी।
- शिया धर्म पालने वाले, शियाओ, मोहम्म्द पेगंबर के दामाद यानि अली को भगवान का अवतार मानते है। इस ब्रह्मांड को बनानेवाली, अखंड ज्योत, का उनमे वास है, ऐसा वह लोग मानते है।
- यह अखंड ज्योत अलौकिक रीत से पितासे पुत्रमे वंश वार उतरती आती है। अलीके वंशजोमे (सीधे वंशमे) एक व्यक्ति के पास अखंड ज्योत हर समय होती है।
- जिस व्यक्ति को अखंड ज्योत का धारक माना जाता है, उसे अपने समय का "इमाम" और उस वजह से अलीका जीवंत अवतार मानने में आता है।
- अलीके वंश में ही, पेड़ी दर पेड़ी, यह अखंड ज्योत उतरती आती है।
- धीरेधीरे समय बदलता गया और आंतरिक झगड़े, मतभेद, खून जैसे कारणों की वजह से शिया पंथ में फूट पड़ी।

7

... सतपंथ का मूल

- इस्लाम -> शिया -> इस्माइली -> निझार पंथ की स्थापना १०९४मे अलामत (वर्तमान ईरान) में एक इस्माइली दाई हसन-ए-सब्बाह द्वारा करने में आई। हसन-ए-सब्बाह, इमाम "निझार" के लिए दाई का काम करते थे, इसलिए "निझार" या "निझारी" शब्द का प्रयोग इस पंथ के नाम में करने में आया है।
- सतपंथ यह निझारी पंथ का उप पंथ है।
- सतपंथ की दो मुख्य शाखाएं है;
  - खोजा – जो आगा खान को इमाम मानते है।
  - इमाम शाही – जो इमाम शाह के वंशजों को इमाम मानते है। इस पंथ को "पीराणा पंथ", "इमामशाही पंथ", "काका पंथ", "मतिया पंथ", "मुमना पंथ" के नामो से जाना जाता है।

8

कार्य प्रणाली

- ध्यान पूर्वक सावधानी से नियुक्त किए "पीर" और "दाई" के द्वारा इमाम अपना काम करता है।
- इमाम खुद पीर को नियुक्त करता है। पीर के कार्य के लिए अमुक भौगोलिक जगह सौंप ने में आती है, जहाँ उसे धर्म प्रचार करना होता है और नए अनुयायियों को बनाना पड़ता है। समय समय पर पीर को इमाम को अपने कार्य की प्रगति की जानकारी देनी होती है।
- सरल भाषा में कहं तो, इमाम की एक राष्ट्रपति के जैसी केंद्रीय सत्ता होती है, जब की पीर उनके नीचे अलगअलग प्रांत के कलेक्टर की सत्ता संभालते है पर अंत में इमाम को जवाब देह होते है।
- दूसरी तरफ दाई का काम, घूमते फिरते रहना और धर्म प्रचार करके पीर की मदद करना होता है।
- इस तरह, इमाम अपना घर छोड़े बगर, काम पर पूरा नियंत्रण रख पता है। क्योंकि उसके पास एक व्यवस्थित संस्था रूपी मसौदा तैयार है।

9

स्थापना – एक छोटी रूपरेखा ...

- पीर शम्स के प्रपौत्र, पीर सदरुद्दीन, सतपंथ के सच्चे स्थापक थे। पीर सदरुद्दीन की कबर उच, पाकिस्तान में है।
- उनके पुत्र और उत्तराधिकारी पीर कबिरुद्दीन (अबू कलंदर हसन कबिरुद्दीन) ने उनके पिता के कम तो आगे बढ़ाया। उनकी कबर भी उच पाकिस्तान में है।
- पीर कबिरुद्दीन के पुत्र, इमाम शाह, पीराणा सतपंथ के स्थापक है।

10

... स्थापना – एक छोटी रूपरेखा

- सतपंथ की स्थापना के पीछे के हिल चाल १४ वी सदिमे इस्माइली धर्म प्रचारकों, जो ईरान (परशिया / फारस) से आए थे, द्वारा शुरू करने में आई।
- चतुर और पढेलिखे धर्म प्रचारको ने सबसे पहेले स्थानिक भाषा और मुख्य तह संस्कृत भाषा का अभ्यास किया। हाथोंहाथ हिंदू धर्म के साहित्यों पर प्रभुत्व हासिल किया।
- हिंदू धर्म और इस्लाम धर्म के सिद्धांतो को युक्ति पूर्वक मिलकर, अनुयायियों को इस्लाम की तरफ ले जाने का रास्ता तैयार किया, जिससे धर्म परिवर्तन कराना आसान होय गया।
- हिंदू धर्म की रचना और सिद्धांतों के वर्णन करते नए पर नकली व्याख्यान तैयार किए गए और संस्कृत भाषा के श्लोकों के ताल को स्थानीय भाषा में ढालकर प्रचार करना शुरू किया।
- शुद्ध सूफी वाद से लेकर शुद्ध हिंदू वाद के विषयों का समावेश करने मे आया।

11

1.2 इमाम शाह की भूमिका

इमाम शाह कौन थे?
क्या वह “इमाम” नियुक्त किए गए थे?
उनका भारत आने के पीछे मकसद क्या था?

12

इमाम शाह की भूमिका ...

- इमाम शाह नाम में "इमाम" शब्द कोई पदवी सूचक नहीं है, या उन्हें जाने "इमाम" नियुक्त किया होय ऐसा भी नहीं है। उनके लिए "इमाम" शब्द तो केवल उनका सम्पूर्ण नाम "इममुद्दीन" का संक्षिप्त रूप है।
- सैय्यद इमाम शाह का (पूर्ण नाम इममुद्दीन अबदूर रहीम सैय्यद) जन्म उच, पाकिस्तान में, हुआ था और १९ वर्ष की आयु में उनके पिता, पीर कबिरुद्दीन, का देहात हो गया था।

लोकवायका के अनुसार, नीचे बताए मुख्य बातें है:

- उनके पिता के मृत्यु समय पर इमाम शाह उचमे नहीं थे, लेकिन चमत्कारिक तरीके से उन्हें अपने पिता की मृत्यु की जानकारी मिली और उनके जनाजा को ले जाने के वक्त पर इमाम शाह वहाँ पहुंच गए।
- तब उन्हें पता चला के उनके १७ भाईयों ने अपने पिता की संपत्ति बाँट ली है और उनके लिए कुछ नहीं बचाया है।
- उन्हें यह भी पता चला के उनके चाचा ताजुद्दीन को पीर की गद्दी का उत्तराधिकारी नियुक्त किये गये है।

13

... इमाम शाह की भूमिका ...

- जनाजा रोककर इमाम शाह ने पिता की संपत्ति में से उनका अपना हिस्सा अपने १७ भाईयों से मांगने लगे।
- जब उनके भाईयों ने इमाम शाह की बात नहीं सुनी, तब जनाजा में से "माला" और "शक्कर" लिए हुए एक हाथ बाहर आया।
- और साथ में एक आवाज आई और इमाम शाह ओर ईरान जाकर अपने काका से अपना अधिकार मांगने कहा।
- इमाम शाह तुरंत ईरान के लिए रवाना हो गये और वह जे गादी पति "इमाम" से मिले. पर खुदको "पीर" की जगह नियुक्त करने में सफल न हो सके।

14

... इमाम शाह की भूमिका

- इमाम शाह भारत लौट आए और गुजरात तरफ रवाना हुए।
- इमाम शाह अमदाबाद के पास "गिरमथा" गाव के बाहर "पीराणा"में (मतलब "पीर का आना") आकार बस गए। इस जगह को इमामपुरा / इमामपुरी भी कहने मैं आता है।
- भारत आने पर उनके पिता और दादाजी का अधूरा कम पूरा करने के कम में लग गए।
- चमत्कारी शक्तियों की मदद से बहुत सारे हिंदुओं को सतपंथ धर्म में परिवर्तित किया।
- ६३ वर्ष की उम्र में वह गुजर गए और उन्हें पीराणा की दरगाह में दफनाया गया है।
- उनकी गादि के उत्तराधिकारी के रूप में उनके पुत्र नूर मोहम्मद् शाह को नियुक्त किया गया। उनके नाम के आगे "नूर" शब्द (Eternal Light) यह दर्शाता है के, पीराणा पंथी (पीराणा सतपंथी) लोगों के लिए वह "इमाम" थे।

15

1.3 प्रचार पद्धति

(प्रोपगंडा/Propaganda)

इस्माइली धर्म प्रचारकों की सफलता के पीछे की ...

एक असरकारक रणनीति

16

शिया धर्म प्रचारकों को भारत में मिली बड़ी सफलता के पीछे मूलभूत प्रचार पद्धति जिसे अंग्रेजी में कहते है...

प्रोपगंडा

(Propaganda)

17

प्रोपगंडा (प्रचार) –पृष्ठभूमि

- इस्लाम हमेशा धर्म परिवर्तन करने वाला रहा है। और आज भी यह प्रवृत्ति नियमित रूप से चल रही है।
- जिस गति से अन्य देशोमें उसका फैलावा हुआ, वह इतिहास में अजोड़ है।
- यहूदी, हिब्रू और अरबी भाषी लोगों के देशो में इस्लाम को खूब सफलता मिली।
- पर जो देशों में, अलग सांस्कृतिक विचार धारा चलती थी, जैसे के यूरोप, भारत, चीन इत्यादि, उन देशों में इस्लाम को खास सफलता नहीं मिली। परंतु सैकड़ों वर्षों के समय अंतराल बाद धीरेधीरे इस्लाम की प्रगति हुई।

18

प्रोपगंडा अवरोध (विघ्न)

- अरबी संस्कृति से अलग संस्कृति वाले देशों में इस्लाम को कैसे अवरोधों का सामना करना पड़ा उस पर एक नजर डालते है;

  1. बिन-अरबी अनुयायी के लिए विदेशी भाषा में बताएं धार्मिक विचारों और विदेशी धार्मिक माप दंड (Standards) को अपनाना जरूरी था।

  2. वर्ण आधारित सामाजिक व्यवस्था, जैसे के भारत में प्रचलित है, उसमें एक समाज या जाति से अलग हुए व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं होती। उन संजोगों में समूहिक धर्म परिवर्तन ही कम कर सकता है। एक व्यक्ति का नहीं पर पूरे समाज या जाति का धर्म परिवर्तन करना जरूरी है।

- इस विचार को न अपनाने के कारण अन्य देशों की तुलना में इस्लाम को भारत में कम प्रति साद मिला।

- कुशल और ठोस रन नीति अपना कर, निझारी धर्म प्रचारकों ने ऐसी पद्धति अपनाई के जिसकी वजह से ऊपर बताएं अवरोधों का हल ढूंढ सके।

19

प्रोपगंडा (प्रचार) –अवरोध के उपाय …

- इन हालातों में धर्म परिवर्तन **दो मुख्य सिद्धांतों** पर निर्भर करता है;

  1. ***इस्लाम के मतलब और संदेश को कडक अरबी आवरण से अलग करने*** की साहसिक व्यूह रचना।

  2. अमुक ***खास जाति को लक्ष बनाकर*** धर्म परिवर्तन के ***प्रयास केन्द्र करना.*** खास तौर से पिछड़े वर्ग पर ध्यान देना। क्योंकि अन्य वर्ग की तुलना में ऐसे वर्ग के लोगों पर समाज या जाति की पकड़ कम मजबूत होती है।

- *इसलाम के धर्म प्रचारकों ने इस्लाम के उच्च आदर्शों को अनुयायियों के पूर्वजों के धर्म (याने हिंदू धर्म) की परिभाषा और संस्कृति अनुरूप समझाया।*

- हिंदू धर्म के प्रचलित और सुंदर आदर्शों, संस्कारों, रित रिवाजों, मान्यताओ, बंधनों इत्यादि को इस्लाम धर्म के उपदेश को केंद्र में रख कर उसके आस पास जोड़ दिया।

20

... प्रोपगंडा (प्रचार) –अवरोध के उपाय ...

- व्यक्तिगत धर्म परिवर्तन और सामूहिक धर्म परिवर्तन, एन दोनों में फर्क धर्म परिवर्तन करने वाला व्यक्ति के लिए सरलता से जुड़ा है। सामूहिक धर्म परिवर्तन की वजह से लोगों को बहुत आसानी होती है। और इसके अलावा संगत का भी असर और प्रभाव भी धर्म परिवर्तन करने में आसानी लाता है।
- सामूहिक रीत से धर्म परिवर्तन हो सके इस कारण धर्म प्रचारकों उनके इस्लामी धर्म के पैरों की चमत्कारिक कहानियाँ कह कर उनकी अलौकिक शक्ति की बातों में लोगों को भ्रमित कर धर्म परिवर्तन का मार्ग सरल बनाया जाता।
- इस तरह नये अनुयायी अपनी ***पसंद नापसंद और विरोध छोड़ कर*** सतपंथ धर्म के ***निष्ठ और चुस्त अनुयायी बनकर*** धर्म प्रचारकों की बातों को मानने के लिए तैयार होय जाते।

21

... प्रोपगंडा (प्रचार) –अवरोध के उपाय ...

- “अलौकिक शक्ति” और “चमत्कारी परचे” भरी कहानियो की मदद से नये अनुयायी तुरंत नया धर्म अपना ले और अपने पसंद नापसंद और शंका, कु शंका छोड़ दे ऐसी व्यवस्था करने में आई है।
- *इस्लाम को, अंतिम युग, याने कलियुग का धर्म* के रूप में लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।
- हिंदु धर्म के सिद्धांतों को इस्लाम में मिलानेका प्रचार सिद्धांत के अनुसार, **“पहला इमाम, अली तालिब”** को भगवान **विष्णु के दसवां अवतार** बनाकर लोगों के समक्ष पेश करने में आया।
- ठीक उसी तरह, इस्माइली संबंध को संभालकर इमाम को (शुरूवात से ही) भगवान विष्णु का अवतार बताने में आया और इमाम को नारायण और नकलंक (निष्कलंकी) नारायण अवतार नाम देकर पहचान दी गई।

22

... प्रोपगंडा (प्रचार) –अवरोध के उपाय

- कुरान को अंतिम वेद (अथर्व वेद) होने की घोषणा करने में आई। अन्य धार्मिक पुस्तकों और साहित्यों को रद्द किया गया है, इस तरह की घोषणा भी की गई।
- दूसरी तरफ भगवान के अवतार की हिंदू परंपरा को आगे बढ़ाया गया।
- झूठी कहानी आगे बढ़ाने के लिए यह बताया गया की अली तालिब, जो १० वा अवतार है, वह कोई साधारण धार्मिक नायक नहीं थे, जो इतिहास में प्रगट होकर अपने चमत्कार बताकर अनंत में गायब हो गए।
- अली की दैवी शक्ति, उसके उत्तराधिकारी इमाम में, कह जाने वाले “निरंतर” रूप में, अवतार लेता रहती है।

23

प्रोपगंडा (प्रचार) –रूढ़िवादी इस्लाम के साथ संलग्न

क्या ऊपर बताएं प्रचार के कारण, नए धर्म की स्थापन हुई है?

यह प्रोपगंडा रूढ़िवादी इस्लाम के साथ कैसे संलग्न है, यह देखेंगे।

24

प्रोपगंडा (प्रचार) –रूढ़िवादी इस्लाम के साथ संलग्न...

<u>इससे पहले बताएं प्रोपगंडा सम्पूर्ण रूप से इस्लाम के सिद्धांतो के साथ संलग्न है।</u>

- हम जानते है के इस्लाम हमेशा, दैवी अवतार को ऐतिहासिक और फिलोसोफिक सिद्धांत के साथ जोड़ कर, भगवान की अवतार धरण करने वाली एक ही प्रक्रिया है, ऐसा मानना पसंद करता आया है।
- यह सब, पहले आदि मानव, बाबा आदम, के साथ शुरू हुआ, जिसे भगवान का एक महान पैग़ामबर और प्रचारक है, ऐसा बताने में आया।
- स्थानीय विचार धारा और परिस्थिति के साथ अड़चन होने की हालत में, ऐसे सिद्धांत को सामने किया जाता है की हिंदू धर्म के देवताओं और महान संतों को, तो भगवान द्वारा “केवल धर्म प्रचार” करने के लिए, इस देश में भिजवाये है।

25

... प्रोपगंडा (प्रचार) –रूढ़िवादी इस्लाम के साथ संलग्न ...

- विषय को एक कदम आगे बढ़ते हुए... हिंदू धर्म के विकास चक्र के अंतिम चरण में इस्लाम को घुसाया गया है। और ऐसा प्रचार करने में आया।
- <u>कुरान, अंतिम और निर्णायक वेद (अथर्व वेद) है, ऐसा बताने में आया और इस कारण अथर्व वेद के श्लोकों का अर्थ घटन कुरान की आयतों के अनुरूप करने में आया।</u>
- जिस वजह से, हिंदुओं के देवों के इससे पहले हुए अवतारों की अव गणना करके, अंतिम यानी दसवां अवतार को सच्चा अवतार होने की घोषणा कर दी। और कहा के उससे पहले हुए सभी अवतारों के ऊपर आधिपत्य है। इस प्रकार से भगवान के अवतार चक्र को पूर्ण होने की घोषणा कर दी।
- *सतपंथ ही “सच्चा धर्म”, ऐसा ठोक कर बैठाने की प्रक्रिया में ऐसा सिद्धांत पेश किया के, ईसाई, यहूदी जैसे अन्य धर्मो की तरह, हिंदू धर्म को भी, इस प्रक्रिया में आरंभिक चरण अथवा पूर्व-तैयारी के रूप में पेश किया।*

26

... प्रोपगंडा (प्रचार) –रूढ़िवादी इस्लाम के साथ संलग्न

- इस तरह से, शुद्ध इस्लामी नजर से देखे तो, इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच अंतर कम करने के लिए, इस्माइली धर्म प्रचारकोंने एक अनूठी पद्धति अपनाई थी, जो इस्लाम के रूढ़िवादी सिद्धांतों और विचार धारा के साथ काही भी टकराती नहीं थी। इसीलिए ऐसे सिद्धांतों के साथ ताल मेल है।
- संक्षिप्त में, प्रोपगंडा ऐसे तैयार करने में आया, जिससे हिंदुओं के धर्म मूल्यों, सिद्धांतों और आचार-विचार को भ्रष्ट कर हिंदुओं का अपने ही धर्म पर विश्वास छुट जाये और सतपंथ को सच्चा मन लें।
- इस तरह से, हिंदुओं को आखिर में इस्लाम तरफ ले जाने वाले रास्ते पर चलता कर देने में आया।

27

संदर्भ ...

- इस्तियाक हुसैन कुरेशी, “धी मुस्लिम कम्यूनिटी ऑफ इंडो-पाक सुब्कोंटीनेंट” (कराची, 1977, pp.41-2) नाम वाले पुस्तक में लिखा है के,

  “दस्तावेजों में बहुत से उदाहरण देखने मिलते है के जिसमें इस्माइली धर्म प्रचारकों, एक हिंदू पुरोहित का रूप धरण करके खुले आम हिंदू सिद्धांतों का विरोध न करके, हिंदू धर्म के बुनियादी धारणाओं को मान्य रख कर, इस्माइली मान्यताओं को परोक्ष और छुपे तौर पर घुसा कर, धीरेधीरे धर्म परिवर्तन के लिए रास्ता तैयार किया”

- सम्पूर्ण और सख्त पालन के अभाव से इस्माइली कभी भी चिंतित नहीं थे क्यूँ की उन्हें पूरा यकीन था के आखिर में अनुयायी सतपंथ धर्म को सम्पूर्ण रूप से स्वीकार लेंगे।

28

... संदर्भ

- अली अहमद ब्रोही ने "हिस्टरी ऑफ टोंबस्टोन्स" (हैदराबाद, 1987, pp. 133-4) में कहा है,

> "इस्माइली धर्म अपनाने वाला कोई भी व्यक्ति इमाम ऊपर श्रद्धा रख कर, पीर और अली के वंशजों को पूज्य मानी, अपने खुद के परंपरागत रीत रिवाजों, नामों, जाति, पहचान रख सकता है। इस उदार नीति के कारण लोहणा, सुमरा, लंगा जैसी बहुत सारी जातियों के लोग इस्माइली सतपंथ के तरफ आकर्षित हुए।"

29

1.4 धर्म परिवर्तन की पद्धति

सतपंथ के स्थापक... पीर सदरुद्दीन द्वारा...
धर्म परिवर्तन कराने के लिए अपनाई हुई पद्धति कैसी थी?

30

पीर सदरुद्दीन की पद्धति

- "इस्लाम इन नॉर्थन इंडिया" (अलीगढ़, 1993, p. 371) में लेखक मुहम्मद उमर लिखते है की,

  "हिंदुओं में इस्लाम लोकप्रिय होने के मुख्य वजह यह हो सकता है की, मुस्लिम प्रचारकों द्वारा नये हिंदू अनुयायियों पर उनके परंपरागत रीत रिवाज छोड़ ने पर मजबूर करने में नहीं आया। उन्होंने ऐसी परिकल्पना की के अनुयायियों अपने आपा धीरेधीरे बिन-इस्लामी रीत रिवाज छोड़ देंगे। इस कारण हिंदुओं द्वारा इस्लाम अपनाने के बाद भी अपने परंपरागत रीत रिवाज पालने के उदाहरण देखने मिलते हैं।

- उसी तरह, गीनान, साहित्यों और परंपरा के मूल सार पर से समझ आता है के पीर सदरुद्दीन का मुख्य उद्देश्य लोगों का धीरेधीरे, तीन (३) चरणों में, धर्म परिवर्तन करना था। जो पद्धति उन्होंने अपनाई थी वह खास धर्म प्रचार करने के ढाँचे पर आधारित थी।

31

पीर सदरुद्दीन की पद्धति
चरण १: गर्भावस्था

- शिष्यों को, नैतिक और सैद्धांतिक मूल्यों के मदद से, सतपंथ धर्म के सरल बोध देने में आते। प्रवचनों, गिनानों और साहित्यों में, लोगों की भाषा और बोली का उपयोग करके, स्थानीय सांकेतिक परिभाषा, जैसे की अलख निरंजन (अवर्णनीय), गुरु ब्रह्मा (मुहम्मद), नर नकलंक (अली), नर (इमाम), घट-पाट, जाप इत्यादि का प्रयोग करने में आया।

- ग्राम जन की भाषा में, उत्तम कुशलता का इस्तेमाल करके, खास गीनान रचने में आए। जिससे लोगों को उनकी परंपरागत भजनों की लज्जत मिली। जिसमे पीर सदरुद्दीन ने खुद को गुरु सहदेव और गुरु हरिश्चंद्र की पदवी दी है।

- हिंदुओं को मुसलमान बनाने की प्रक्रिया को सरल बनाने के पीछे भार देने में आया।

32

पीर सदरुद्दीन की पद्धति
चरण २: मध्यम अवस्था

- दूसरे चरण में, शिष्यों को एकांत में, मध्य रात्रि, जप करने के लिए, गुरु मंत्र / सत शब्द देने में आता है।
- शिष्यों को बताया जाता है की, भगवान विष्णु के दसवें अवतार ने, अली रुप में अरब खंड में जन्म ले लिया है और फिलहाल "इमाम" के रुप मैं ईरान में बस रहें है।
- संक्षिप्त में, नए अनुयायियों सतपंथ को अपनी पुरानी श्रद्धा को मजबूती देता पूरक की तौर पर देखते हो जाए। मुहम्मद पैगंबर और अली को अपने पूर्वजों की परंपरा के साथ जोड़ कर देखने लगते है।

33

पीर सदरुद्दीन की पद्धति
चरण ३: परिवर्तन अवस्था

- शिष्यों को ध्यान में लीन कराने पर भार देने में आता है।
- उसके बाद, नए अनुयायियों को अपने पुराने रीत रिवाजों से विमुख करने का काम पीर सदरुद्दीन शुरू करते है। हिंदुओं की क्रियाओं को तर्क के आधार पर निंदा करने शुरू किया। जैसे के वर्ण भेद, मूर्ति पूजा, धार्मिक स्नान, हिंदू फिलोसोफी की ६ मुख्य विचार धारा चलती शालाएँ और त्याग की परंपरा इत्यादि।
- **सचमुच, पीर सदरुद्दीन ने लोगों की श्रद्धा का सौम्य रूप से इस्लामी कारण कर दिया था। पर हाथोंहाथ उन्होने लोगों की संस्कृति के साथ कभी भी अड़चन खड़ी नहीं ही। इस वजह से हिंदू जन समुदाय ने भारतीय रूप धरण किए हुए इस्लाम के सिद्धांतो को स्वीकार लिया।**

34

धर्म परिवतन का सूत्र

मुंबई हाई कोर्ट १८६६ का सुविख्यात आगा खान केस का निष्कर्ष

- धर्म परिवर्तन के सूत्र रुप में, इस्माइली दाईओं (धर्म प्रचारकों) को निर्देश देने में आया की, "अगर आपको एक ईसाई को प्रभावे में लेकर धर्म परिवर्तन करना हो तो, उन्हें यहूदीयो की जिद्दी स्वभाव और मुसलमानों की अज्ञानत पर लंबीलंबी बातें करनी। ईसाई धर्म के मुख्य सिद्धांतो पर श्रद्धा दिखाकर, धीरेसे इशारा करना के यह सब सांकेतिक है और इनमें कुछ बड़ा रहस्य है। इसकी सच्ची जानकारी सिर्फ इस्माइली धर्म दे सकता है, ऐसी बात कहना। ईसाई लोग कहीं सच्ची बात समझने में चूक कर गए है और सच्चा धर्म वही है जो इस्माइली धर्म प्रचारक बताते है।"
- उसी तरह, एक यहूदी का धर्म परिवर्तन करना होय, तो पहले ईसाई और मुसलमानों के वीरुध बोल कर उसका विश्वास जीत कर कहना के सच्चा "मसीहा" आएगा और वह कोई नहीं पर "अली" होगा।
- **सारांश: योजना ऐसी थी के पहले अनुयायी के अपने पुराने धर्म का प्रचार करना और उसका विश्वास जीत ने के बाद धीर से उसे समझना के वह जो धर्म पाल रहा है वह तो केवल सांकेतिक है। सच्चा भगवान अली है और सच्चा धर्म शिया मुसलमान धर्म है।**

35

1.5 इमाम और अखंड ज्योत, या इस्लामी नूर, के पीछे की धारणा

भगवान विष्णु के जीवंत रूप माना जाता "इमामो" की श्रृंखला...
और ब्रह्मांड की उत्पत्ति के मूल से जुड़ी,
अखंड ज्योत (जिसे इस्लाम में "नूर" कहने में आता है) के पीछे की धारणा

36



इमाम अली

विष्णु का
१०वां अवतार

यह चित्र, नीचे बताएं इटली भाषा की वेबसाइट पर से लेने में आया है।

http://www.tradizionesacra.it/imamali-krishna-vishnu.htm

37

इमाम और अखंड ज्योत ...

- महत्व पूर्ण कार्यों के लिए, मूलभूत रूप से भगवान ने जिसे पसंद किया है, वह पैगंबर और इमाम को इस्लाम और इस्माइलिजम धर्म में प्राधान्य देने में आया है। फिर चाहे वह साधारण नाश वंत मनुष्य ही क्यों न हो।
- ऐसा साधारण मनुष्य केवल बौद्धिक रूप से अन्यों की बराबरी में श्रेष्ठ था।
- समय जाते, यह श्रेष्ठ बुद्धि, धीरेधीरे, ज्यादा से ज्यादा, दैवी होती गई और अन्य विचारधाराओं के प्रभाव और इस्लाम के रहस्यमय सिद्धांतों की वजह से, वह (बुद्धि) अखंड ज्योत (जिसे अरबी भाषा में "नूर" कहा जाता है) बन गई।

38

... इमाम और अखंड ज्योत ...

- जैसे सतपंथी "जमात खाना" (संक्षेप में "खाना") का नाम बदल कर "ज्योतिर धाम" रखने मीन आया, उसी तरह सतपंथी खाना में जलती "इस्लामी नूर" का नाम बदल कर "अखंड ज्योत" रखने में आया। इसका मतलब सतपंथी मंदिरों में जो अखंड ज्योत जल रही है, वह वास्तव में "इस्लामी नूर" है। उसका हिंदू धर्म के साथ कोई संबंध नहीं है।
- "दिव्य होने के कारण, यह नूर, इमाम और पैगंबर में प्रगत हुई, जिसके कारण वह कायमी और अविनाशी बनी"। सिद्धांत इस तरह से बढ़ा के यह नूर, हमेशा इमाम अली के वंश में एक नियमित परंपरा में गादिपति पिता द्वारा उसके नियुक्त उत्तराधिकारी पुत्र में, कुदरती तौर पर उतरती आती है।
- अखंडित परंपरा के मुताबिक, इस वक्त इमाम का अस्तित्व है। वैसे ही भविष्य में भी हमेशा अस्तित्व रहेगा। यह संसार की रचना हुई, उस समय से लेकर इस परंपरा में कभी खंडन नहीं हुआ है।

39

... इमाम और अखंड ज्योत

- इसके परिणाम स्वरुप, अनुयायि ऐसा मानने लगे की श्रृष्टि की रचन के पीछे जो शक्ति है, वही शक्ति "इमामियत" के अंदर है। और इसी कारण पहला इमाम, याने अली, और उसके बाद के इमाम और श्रृष्टि के रचयिता, याने भगवान, यह सब एक ही है।
- इसलिए, तार्किक रूप से, हिंदू मान्यताओं के आधार पर, भगवान विष्णु के अवतार लेने की श्रृंखला चालू रख कर अली के अवतार लेने की बात बैठा दी।

40

1.6 सूफी आवरण

सूफी सिद्धांतो का ग्रहण करना...

41

सूफी आवरण ...

- पहले से तैयार, *भाव व्यक्त करने की सूफी रीत को अपना कर*, लेखकों ने सतपंथ धर्म के साहित्यों में अपनी भावनाए और नैतिक मूल्यों को पेश किया है।
- उसके बाद, सूफी प्रतीकवाद (symbolism) का स्वरूप का इस्तेमाल करके, आंतरिक या बाह्य तौर ओर, *चोरी छुपे* हिंदू धर्म के *प्रतिबंधित* और इस्लाम संबंधी उपदेशों को *सांकेतिक रूप से घुसा दैने में आया है।*
- सतपंथ साहित्यों के लेखकों के संदेश देने के पीछे ध्येय, पहले से जाने बगैर, ऐसे बिन परंपरागत साहित्यों में से सत्य ढूँढना और समझ लेना बहुत ही कठिन है। इसलिए सामान्य वाचक और श्रोताओं उसमें आसनी से फँसने की संभावना होती है।

42

... सूफी आवरण

- सामान्य जीवन में भी सूफी आवरण का सफल उपयोग सतपंथी पैरों द्वारा करने में आता रहा है।
- आज भी “शम्स तबरेझ” जिसे मुल्तान में पीर “शम्स” कहा जाता है, “हसन दर्या” (हसन कबीरुद्दीन) और उच के पास “हाजी सदर शाह” (पीर सदरुद्दीन) को सूफी पीर के तौर पर माना जाता है। वह लोग, इस समय के सतपंथ के स्थापक पीर है।
- **पीराणा के इमाम शाह को भी सूफी पीर की उपमा दी गई है।**

43

1.7 सूफी भाव

सूफी भाव के फ़ायदे और गैरफ़ायदे ...

44

सूफी भाव ...

- सूफी भाव में बाह्य दिखावा पर कभी भी भर देने में नहीं आया। हमेशा सूफी यों द्वारा दिये जाने वाले अन्य उपदेशों को महत्वपूर्ण माना गया है।
- धार्मिक जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक पलों पर भार देने में आया है। सूफी भाव में कभी भी दार्शनिक भाव पर विशेष लक्ष्य नहीं दिया गया।
- यह बात एक तौर से फायदेमंद थी पर दूसरी ओर से उतनी जोखिमी भी थी।
- प्रभु की दैनिक प्रार्थना (नमाज इत्यादि) का पाठ करने पर कोई बंधन न होने के कारण, हिंदू अनुयायियों का धर्म परिवर्तन का काम बहुत सरल बन गया।
- **पर इस्लाम के साथ संबंध वाले बाह्य चिन्हों के अभाव के कारण, हिंदू धर्म की पकड़ अनुयायियों पर कायम रहने की पूरी संभावना बनी रही।**

45

... सूफी भाव

- इस वजह से, जो अनुयायियों सच्चे इस्माइली विचार धारा में मानते थे, (जैसे खोजा) वह लोग, फेर बादल करते-करते शुद्ध इस्लाम धर्म अपनाते गए और हिंदू धर्म और उसके रीत रिवाज छोड़ते गए।
- **दूसरी तरफ, जो लोग, इमाम शाही पीर को मानते थे (खोजा समुदाय से अलग होने के बाद), हिंदुत्व के नियमित दबाव के कारण इस्लाम से दूरी बनाने लगे।**
- इसमें मुख्य मुद्दा यह है के इस्लाम के साथ संबंध रखते बाह्य आचरण के अभाव के कारण लोग हिंदू धर्म के तरफ मुंडे।
- इस मुद्दे के कारण, पीराणा सतपंथ द्वारा **ताकिया** का उपयोग, अपना धर्म के विकास और बढ़ाव के लिए, किस तरह का उपयोग किया जाता है, यह हम आगे देखेंगे।

46

1.8 धर्म सिद्धांत

सतपंथ धर्म सिद्धांत पर एक उड़ती नजर

47

धर्म सिद्धांत ...

- कुरान में बताए सिद्धांतों के अनुसार, सतपंथ में भी एक ही भगवान, श्रृष्टि के रचेता, होने का माना जाता है।
- अखंड ज्योत या “नूर” जो जीवन और अंतरात्मा का मूल है, वह एक जीवंत व्यक्ति पर केन्द्र होता है।
- यह व्यक्ति शरीर से सामान्य मनुष्य जैसे ही होता है।

48

... धर्म सिद्धांत ...

- पर वह अखंड ज्योत, अविभाजित होने के कारण, अलग-अलग जगहों पर, टुकड़ों में नहीं रह सकती। इसलिए भगवान और ज्योत-धारक व्यक्ति के बीच में सम्पूर्ण समीकरण होता है।
- यह दिव्य व्यक्ति और कोई नहीं पर इमाम होता है, जो अली (मुहम्मद पैगंबर के दामाद) के वंशज और चली आती परंपरा के हिसाब से उनके उत्तराधिकारी होते है।
- इमाम को, एक दिव्य तेज धरण करने वाला, लोगों का नेता होने का मानने में आता है और दुनिया में हमेशा इमाम की मौजूदगी होने का मानने में आता है।

49

... धर्म सिद्धांत ...

- हिंदुओं के चार युग के सिद्धांत को लेकर, समय चक्र को ४ युग में विभाजित करने में आया।
- हर एक युग में अलग अलग काल के हिसाब से बांटने में आया है, जिसमे भगवान ने अमुक रूप में अवतार लिया है।
  1. पहला युग, सत युग, और उसमें चार काल में मच्छ, कच्छ, वराह और नरसिंह अवतार हुए।
  2. दूसरा, त्रेता युग और उसमें तीन काल जिसमें तीन अवतार वामन, परशुराम और राम अवतार हुए।
  3. तीसरा, द्वापर युग में दो काल, जिसमे कृष्ण और बुध अवतार हुए।
  4. **अंतिम और निर्णायक युग, कलियुग में, केवल एक काल है, उसमें एक अवतार “अली” का है।**
- इस तरह से, हिंदुओं के १० अवतार के सिद्धांत को समजाने में आया है और अंतिम काल में इस्लाम को ही मनुष्य जाति का धर्म बताने में आया है।

50

... धर्म सिद्धांत ...

- हर एक अवतार के पीछे, भगवान का मुख्य हेतु कोई खास दैत्य को मारने का है।
- उसी तरह से, कलि युग में, "कालिंगा" नाम के दैत्य को "निष्कलंकी (नकलंक) नारायण" नाम वाले इमाम यानि हजरत अली आकार मारेंगे।
- कलियुग के लिए अथर्व वेद के रचना की गई है और बाकी सभी वेदों को रद करने में आया है, ऐसा कहने में आया है।

51





ચાર યુગના પૂજ્ય પાત્રોની યાદી

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥
"ॐ नमो श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनाय भस्मायुधाय विघ्महे दिव्यनेत्राय धीमहि, तन्नोज्वरहरः प्रचोदयात्

અ.નં.	વિગત	પહેલો સતયુગ	બીજો ત્રેતાયુગ	ત્રીજો દ્વાપરયુગ	ચોથો કલિયુગ
૧	વેદ	ઋગ્વેદ	યજુર્વેદ	સામવેદ	અથર્વવેદ
૨	યુગાન્તરસદગુરૂ	શ્રી અમરતેજ ઋષિ	શ્રી વશિષ્ઠ ઋષિ	શ્રી વેદવ્યાસ ઋષિ	શ્રી ઈમામશાહ મહારાજ
૩	ભક્તનું નામ	શ્રી પ્રહલાદ	શ્રી હરિશ્ચંદ્રરાજા	શ્રી યુધિષ્ઠિર	શ્રી કમળાકુંવર
૪	દાનવનું નામ	શ્રી હિરણ્યકશ્યિપ	રાવણ	દુર્યોધન	દુર્હીત કાલીંગો
૫	યજ્ઞનું નામ	હસ્તિદાન યજ્ઞ	અશ્વદાન યજ્ઞ	ગૌદાન યજ્ઞ	વારી યજ્ઞ
૬	આસન ઘટ-પાટ	સોનાના	રૂપાના	ત્રાંબાના	માટીના
૭	જાપ	ૐ શ્રી નરસિંહ	ૐ શ્રી રામ	ૐ શ્રી કૃષ્ણ	ૐ શ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ
૮	વ્રત	સુદ ૧૧ને રવિવાર	સુદ ૧૪ ને મંગળવાર	સોમવતી અમાસ	સુદ ૨ને શુક્રવાર
૯	યુગનો પૂજ્ય રંગ	રક્ત વર્ણ	જરદ વર્ણ	શ્યામ વર્ણ	શ્વેતવર્ણ
૧૦	દિશા	ઉત્તર	પૂર્વ	દક્ષિણ	પશ્ચિમ
૧૧	તીર્થ	૨૪ તીર્થ	૧૮ તીર્થ	૧૪ તીર્થ	૧૨ તીર્થ
૧૨	અવતાર	(ચાર) શ્રી મચ્છ, શ્રી કૂર્મ, શ્રી વરાહ, શ્રી નરસિંહ	(ત્રણ) શ્રી વામન, શ્રી પરશુરામ, શ્રી રામ	(બે) શ્રી કૃષ્ણ, શ્રી બુધ	(એક) શ્રી નિષ્કલંકી (કલ્કી) નારાયણ
૧૩	સ્થળ પૂજા	કાશ્મીર	અયોધ્યા	ગોકુળ	કુંવારીકા ક્ષેત્ર-પીરાણા
૧૪	ક્ષેત્ર	ચરણાપુરી	લંકાપુરી	મથુરા	પંચનદી-વૌઠા
૧૫	આયુધ	નખ	ધનુષ્ય	ચક્ર	તલવાર (ખાંડું)
૧૬	સતીઓના નામ	શ્રી બાઈ	શ્રી તારામતી	શ્રી દ્રોપદી	શ્રી સુરજારાણી
૧૭	નદીઓના નામ	ગંગાજી	સરયુ	યમુનાજી	સાબરમતી
૧૮	મોક્ષપદ પામ્યા	પાંચ કરોડ	સાત કરોડ	નવ કરોડ	બાર કરોડ
૧૯	મનુષ્ય અવતાર	૩૫ અવતાર	૨૫ અવતાર	૧૬ અવતાર	૮ અવતાર
૨૦	મનુષ્ય આયુષ્ય	૧,૨૦,૦૦૦ વર્ષ	૧૨૦૦૦ વર્ષ	૧૨૦૦ વર્ષ	૧૨૦ વર્ષ
૨૧	દાગ	વાયુદાગ	જળદાગ	અગ્નિદાગ	ભુમિદાગ
૨૨	યુગનું આયુષ્ય	૧૭,૨૮૦૦૦ વર્ષ	૧૨,૯૬૦૦૦ વર્ષ	૮,૬૪૦૦૦ વર્ષ	૪,૩૨૦૦૦

હિંદૂ ધર્મ में वारी यज्ञ जैसा कुछ नहीं होता, ऐसा कहा जाता है।

સતપંથ પ્રકાશન સમિતિ
પ્રેરણાપીઠ-પીરાણા, તા.દસક્રોઈ, અમદાવાદ-૩૮૨૪૨૫

... धर्म सिद्धांत ...

- गीनान के मुताबिक, नकलंकी अवतार पश्चिम दिशा से आएंगे (अलामत, ईरान तरफ का संदर्भ)
- उसका मुख्य कार्य दानवों के सामने लड़ना है और खास करके कलिंगा को मार कर उसके पाप का अंत लाना है।
- इमाम महदी के हाथ कलिंगा का वध होगा, यह इस अवतार लेने के पीछे का मुख्य कारण होगा, जिस के बाद कलियुग का अंत होगा।
- उसके बाद, निष्कलंकी नारायण, विश्व कुँवरी (कुंवारीका धरती) के साथ शादी करेंगे।
- जो जगह पर शादी होगी, वह जगह को कुंवारीका क्षेत्र के नाम से जाना जाएगा और वह इमाम शाह की कबर होगी।

54

... धर्म सिद्धांत ...

- कलिंगा को दैत्यों का राजा के रूप में पेश करने में आया है। परंतु उसकी पत्नी सुरजा रानी (हिंदू कलकी पुराण में उसका उल्लेख नहीं है) धार्मिक है और उसने अपना धर्म परिवर्तन करके सतपंथ धर्म अपना लिया है।
- खुद की जिम्मेदारी पूरी करने वाला जो कोई वफादार अनुयायी होगा, वह बच जाएगा और एक गुप्त परंपरा का सभ्य होगा। उसे “रिखीसर” और “मोमिन” कहा जाएगा।
- १२ करोड़ मनुष्य को मोक्ष मिलेगा और प्रभु के बताए रास्ते ओर चलकर अमरापुरी (विशेष स्वर्ग) मिलेगा, जहाँ केवल सच्चे सतपंथी ही जा सकेंगे।

55

... धर्म सिद्धांत ...

- वफादार सतपंथीयों हज़ारों वर्षों तक राज करेंगे। भगवान हर एक जीव के कर्मों का हिसाब रखेंगे और उसके मुताबिक उसे सज़ा देंगे अथवा इनाम देंगे।
- इस मनगढ़न्त कहानी की सुर और व्याख्या को हिंदू पौराणिक कथाओं में से लिया गया है। बाद में भले वह कलकी पुराण हो या भागवत पुराण जैसे अन्य पुराण।
- भारत उपमहाद्वीप में निझारी परंपरा के रिवाजों के हिसाब से, ऐसे हिंदू मूल्यों में फेर बदल करके उसे इस्लामी रंग देने में आया। जिसकी वजह से हिंदू धर्म में इस्लामी मूल्यों शामिल कर दिये गए।

56

... धर्म सिद्धांत ...

- तद् उपरान्त, उनकी अपनी और इस्लामी व्याख्याओं का समांतर प्रयोग चालू रखा। जैसे के निष्कलंकी अवतार जिसे "महदी" और "कायम" भी कहने में आता है। "स्वामी राजा शाह", "रिखीसर" (वफादार), "मोमिन" इत्यादि।
- निष्कलंकी नारायण की सेना में हिंदू पौराणिक कथाओं के पात्रों और इस्लामी व्यक्तियों का समावेश है।
- हिंदुओं में से महाभारत के पात्र जैसे के पाँच पांडव, कुंती, द्रौपदी इत्यादि और अन्य कथाओं में हरिश्चंद्र और भक्त प्रहलाद का समावेश भी है।

57

... धर्म सिद्धांत

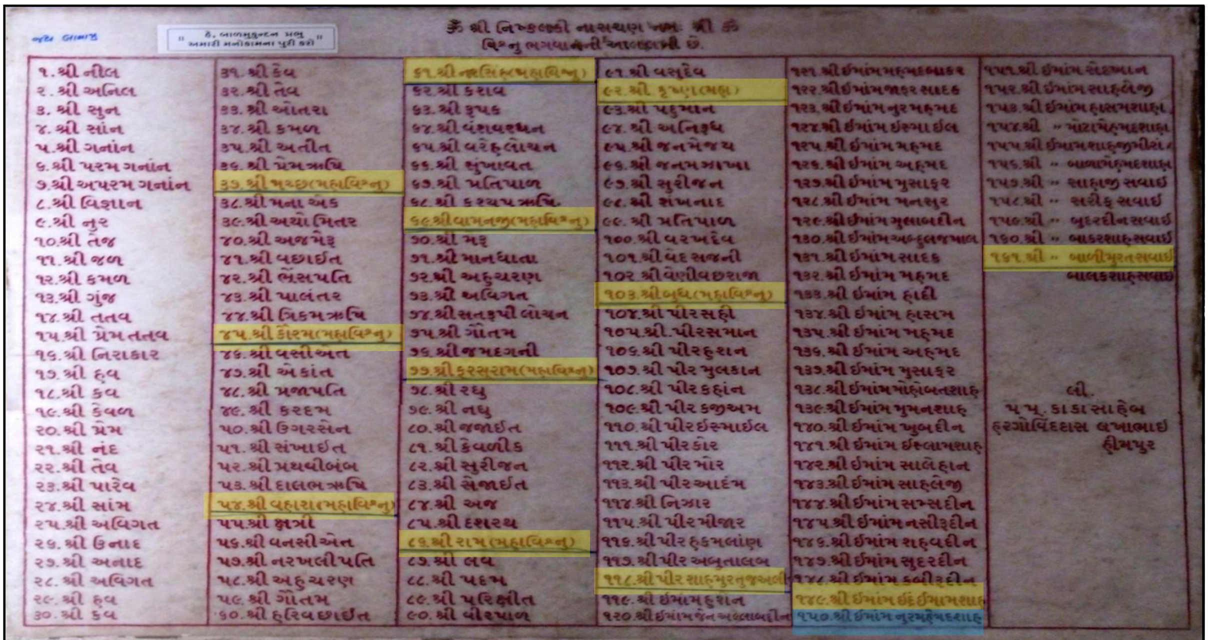
- भयानक सज़ा से बचने के लिए एक वफादार सतपंथी की जिम्मेदारी में;
  - "पावाल" पीना आता है, और
  - ईमानदारी से धार्मिक कर याने "दसोंद" और "अन्य कर" अचूक भरना होता है।
- भारतीय निझारिओं द्वारा सहेजी गई "मरणोपरांत" बातें और "तारणहार" लेखों पर से पता चलता है के हिंदू धर्म की ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं से प्रेरणा लेने में आई है। परंतु उसकी मुख्य शैली, दिशा और अंतिम रंग केवल इस्माइली विचारधारा देती है।

58

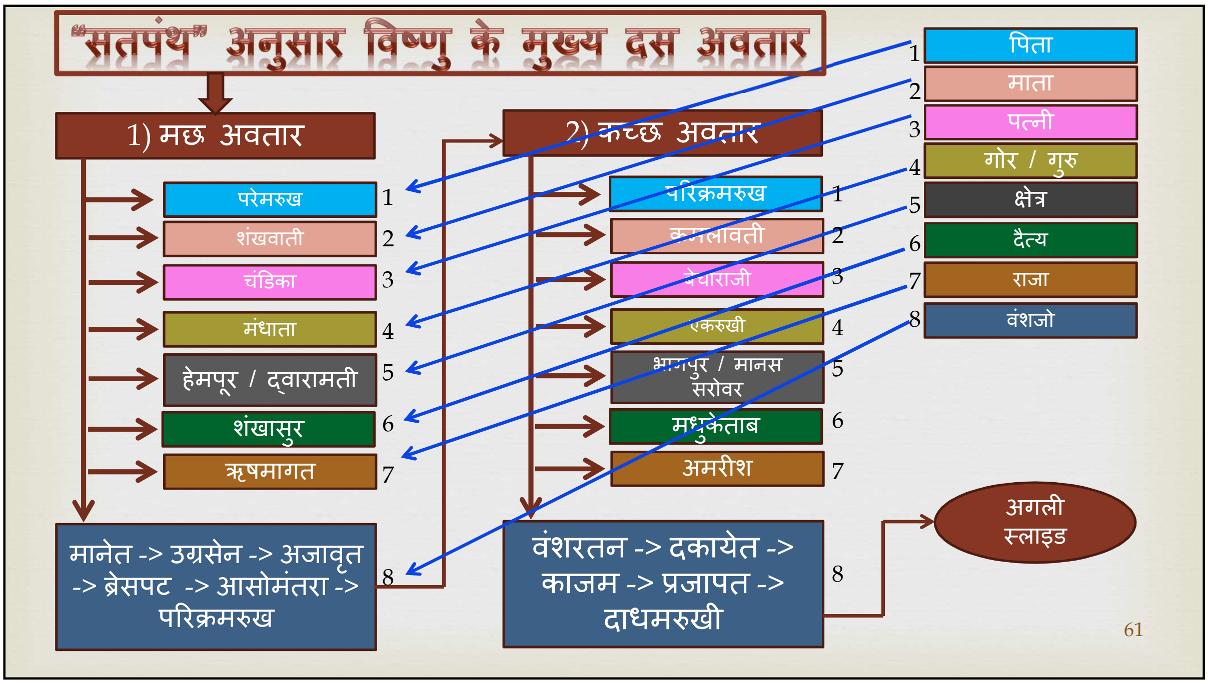
1.9 दस अवतार
(सतपंथी आवृति)

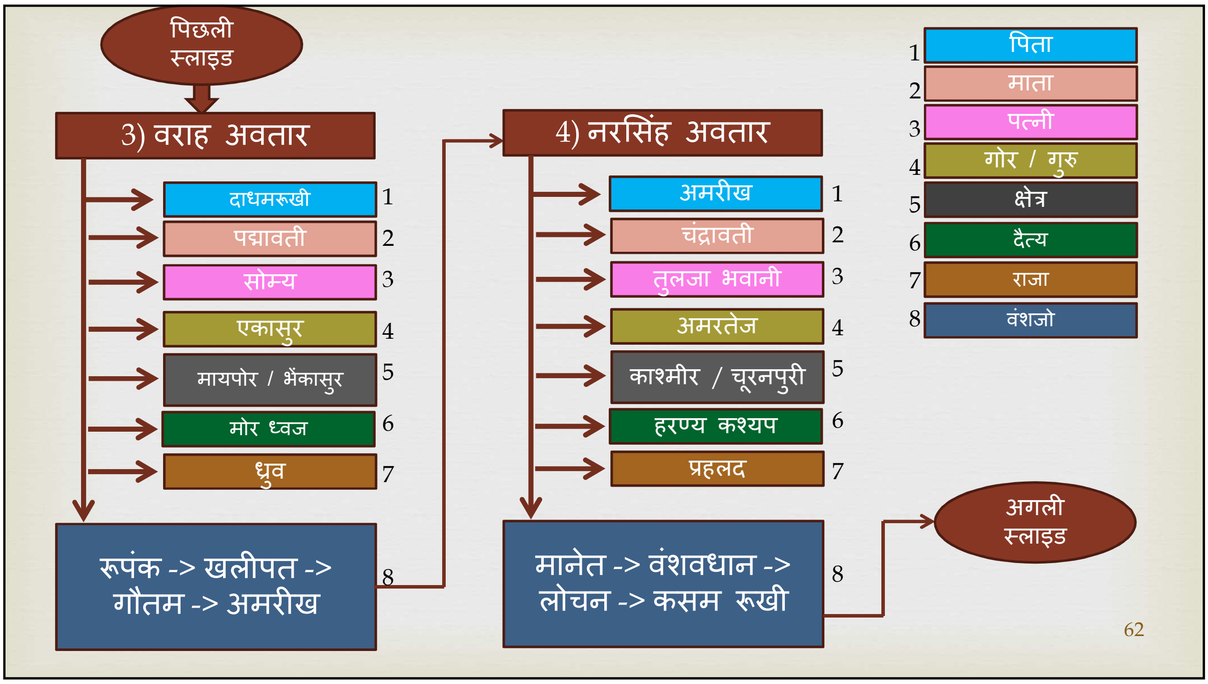
बहार से हिंदू रूप अपनाता हुआ सतपंथी दस अवतार का...
सच्चे हिंदू दस अवतार के साथ...
कोई संबंध न होने के पीछे अमुक कारण और सबूत

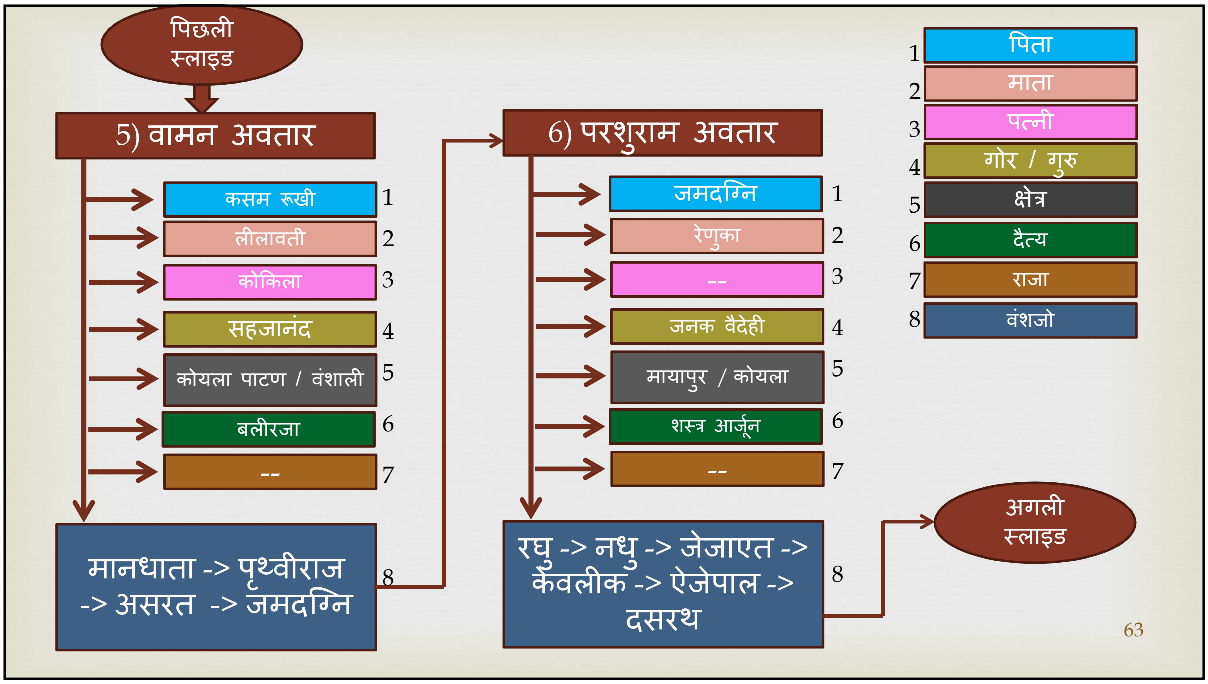
59

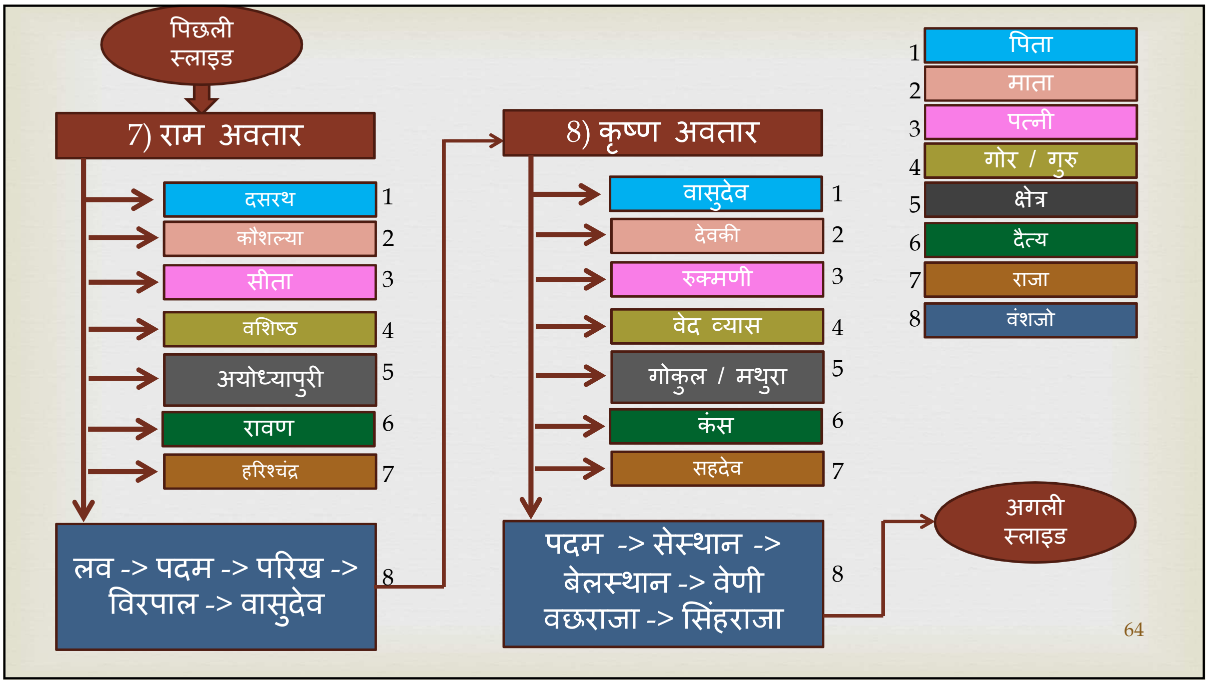


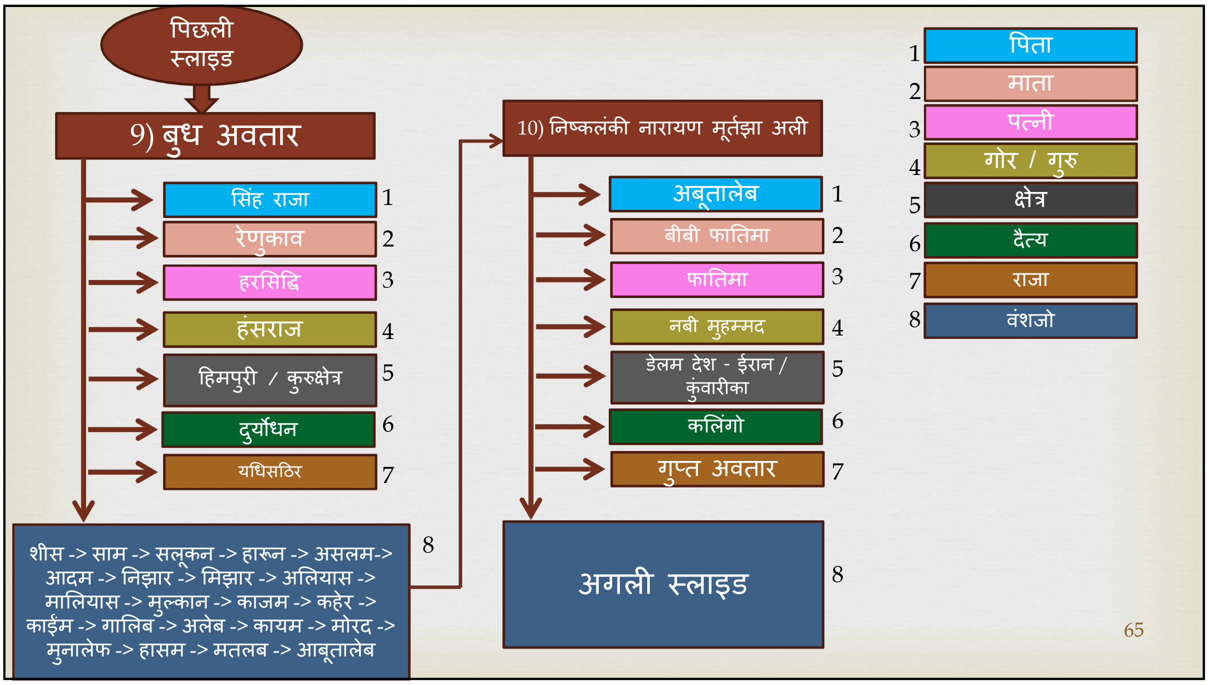
भगवान विष्णु के अवतार (सतपंथी के हिसाब से) दर्शाता शिला लेख

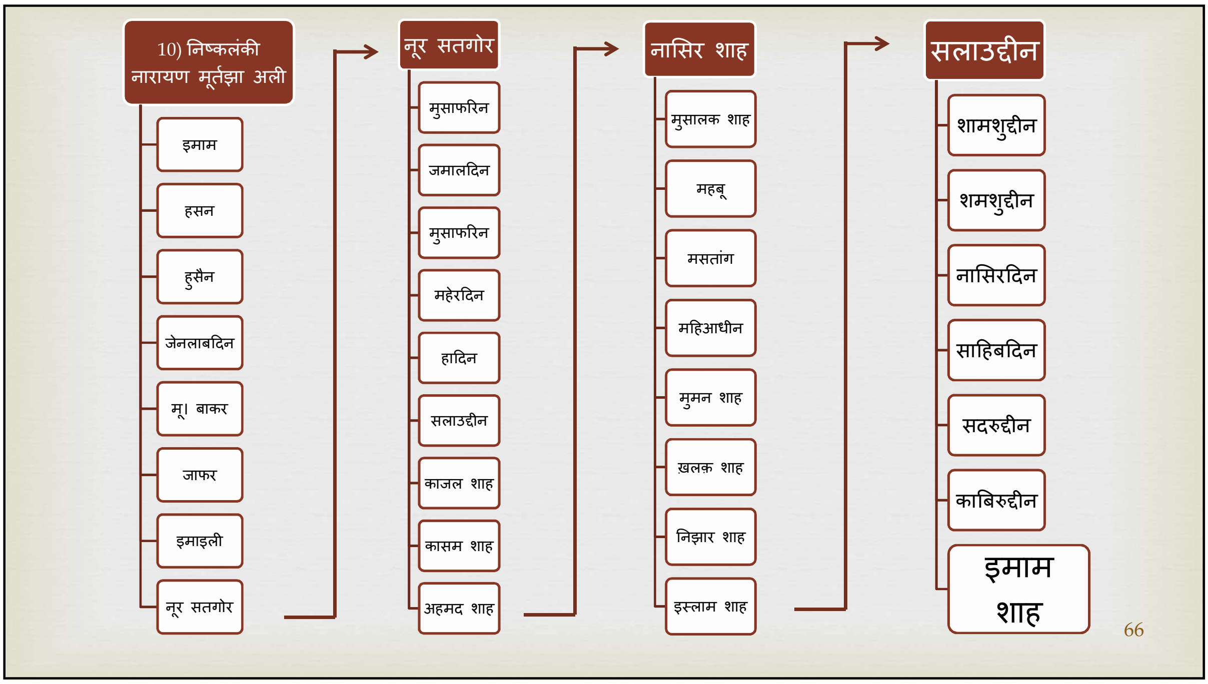

"सतपंथ" अनुसार विष्णु के मुख्य दस अवतार
1) मछ अवतार
परेमरुख
शंखवाती
चंडिका
मंधाता
हेमपूर / द्वारामती
शंखासुर
ऋषमागत
मानेत -> उग्रसेन -> अजावृत -> ब्रेसपट -> आसोमंतरा -> परिक्रमरुख
2) कच्छ अवतार
परिक्रमरुख
कमलावती
एकरुखी
भागपुर / मानस सरोवर
मधुकेताब
अमरीश
वंशरतन -> दकायेत -> काजम -> प्रजापत -> दाधमरुखी
पिता
माता
पत्नी
गोर / गुरु
क्षेत्र
दैत्य
राजा
वंशजो
अगली स्लाइड
61


पिछली स्लाइड
3) वराह अवतार
दाधमरूखी
पद्मावती
सोम्य
एकासुर
मायपोर / भैंकासुर
मोर ध्वज
ध्रुव
रूपंक -> खलीपत -> गौतम -> अमरीख
4) नरसिंह अवतार
अमरीख
चंद्रावती
तुलजा भवानी
अमरतेज
काश्मीर / चूरनपुरी
हरण्य कश्यप
प्रहलद
मानेत -> वंशवधान -> लोचन -> कसम रूखी
पिता
माता
पत्नी
गोर / गुरु
क्षेत्र
दैत्य
राजा
वंशजो
अगली स्लाइड
62


पिछली स्लाइड
5) वामन अवतार
कसम रूखी 1
लीलावती 2
कोकिला 3
सहजानंद 4
कोयला पाटण / वंशाली 5
बलीरजा 6
-- 7
मानधाता -> पृथ्वीराज -> असरत -> जमदग्नि 8
6) परशुराम अवतार
जमदग्नि 1
रेणुका 2
-- 3
जनक वैदेही 4
मायापुर / कोयला 5
शस्त्र आर्जुन 6
-- 7
रघु -> नधु -> जेजाएत -> केवलीक -> ऐजेपाल -> दसरथ 8
1 पिता
2 माता
3 पत्नी
4 गोर / गुरु
5 क्षेत्र
6 दैत्य
7 राजा
8 वंशजो
अगली स्लाइड
63


पिछली स्लाइड
7) राम अवतार
दसरथ 1
कौशल्या 2
सीता 3
वशिष्ठ 4
अयोध्यापुरी 5
रावण 6
हरिश्चंद्र 7
लव -> पदम -> परिख -> विरपाल -> वासुदेव 8
8) कृष्ण अवतार
वासुदेव 1
देवकी 2
रुक्मणी 3
वेद व्यास 4
गोकुल / मथुरा 5
कंस 6
सहदेव 7
पदम -> सेस्थान -> बेलस्थान -> वेणी वछराजा -> सिंहराजा 8
1 पिता
2 माता
3 पत्नी
4 गोर / गुरु
5 क्षेत्र
6 दैत्य
7 राजा
8 वंशजो
अगली स्लाइड
64


पिछली स्लाइड
9) बुध अवतार
सिंह राजा 1
रेणुकाव 2
हरसिद्धि 3
हंसराज 4
हिमपुरी / कुरुक्षेत्र 5
दुर्योधन 6
यधिसठिर 7
शीस -> साम -> सलूकन -> हारून -> असलम-> आदम -> निझार -> मिझार -> अलियास -> मालियास -> मुल्कान -> काजम -> कहेर -> काईम -> गालिब -> अलेब -> कायम -> मोरद -> मुनालेफ -> हासम -> मतलब -> आबूतालेब 8
10) निष्कलंकी नारायण मूर्तझा अली
अबूतालेब 1
बीबी फातिमा 2
फातिमा 3
नबी मुहम्मद 4
डेलम देश - ईरान / कुंवारीका 5
कलिंगो 6
गुप्त अवतार 7
अगली स्लाइड 8
1 पिता
2 माता
3 पत्नी
4 गोर / गुरु
5 क्षेत्र
6 दैत्य
7 राजा
8 वंशजो
65


10) निष्कलंकी नारायण मूर्तझा अली
इमाम
हसन
हुसैन
जेनलाबदिन
मू। बाकर
जाफर
इमाइली
नूर सतगोर
नूर सतगोर
मुसाफरिन
जमालदिन
मुसाफरिन
महेरदिन
हादिन
सलाउद्दीन
काजल शाह
कासम शाह
अहमद शाह
नासिर शाह
मुसालक शाह
महबू
मसतांग
महिआधीन
मुमन शाह
खलक शाह
निझार शाह
इस्लाम शाह
सलाउद्दीन
शामशुद्दीन
शमशुद्दीन
नासिरदिन
साहिबदिन
सदरुद्दीन
काबिरुद्दीन
इमाम शाह
66

ऊपर बताए स्लाइड पर से जानने लायक मुद्दे ...

ऊपर बताए स्लाइड पर से जानने लायक मुख्य मुद्दे इस प्रकार है;

1. भगवान के पहले अवतार से लेकर अंतिम अवतार तक, हर एक अवतार को एक अखंडित सीधी रेखा में दिखाया गया है। इसलिए मछ अवतार से लेकर मुर्तजा अली का आवरण करते हुए, इमाम शाह का वंश (हरिवंश) के सारे अवतार एक ही सीधी रेखा में हुए है। (कुल बदलते नहीं है)
2. दूसरे शब्दों में, भगवान ने परंपरागत तौर पर, एक ही वंश में, पीढ़ी दर पीढ़ी जन्म लिया है।
3. सतपंथ के अनुसार, वंशजों के इस परंपरा को “हरिवंश” कहा जाता है। (“हरिवंश” मुद्दे को खास तौर पर ध्यान में रखे)।
4. भगवान ने पहले 9 अवतार भारत देश में लिए थे।
5. अंतिम 10वां अवतार भगवान ने, ईरान देश में, ले लिया है। कोई भी हिंदू के लिए यह बाद आश्चर्य जनक है।
6. हिंदू दस अवतार के अनुसार, भगवान का दसवां अवतार कलियुग के अंत समय पर ही होगा। पर सतपंथी दस अवतार में भगवान ने दसवां अवतार ले लिया है।

67

... ऊपर बताए स्लाइड पर से जानने लायक मुद्दे

7. 10वां अवतार और कोई नहीं पर इस्लाम के स्थापक, मुहम्मद पैगंबर के जमाई, हजरत अली है। और अली ही पहले इमाम है।
8. मनुष्य के नाशवान शरीर की मर्यादा के कारण, भगवान यानी अली, अपने वंशजों को एक निश्चित परंपरा में उत्तराधिकारी के रूप में बारंबार जन्म लेते रहेंगे।
9. इस परंपरागत रीत को हजरत अली से लेकर, इमाम शाह और उनके पुत्र नर मुहम्मद शाह को जोड़ कर आई है। जिस वजह से नर मुहम्मद शाह ने अपने समय काल में जीवित इमाम, यानी अली का अवतार, यानी विष्णु का अवतार, यानी निष्कलंकी आवार को बताने में आया है।

68

अभी हम सतपंथी दस अवतार
ऊपर गिरा हुआ “हिंदू पर्दा” उठा कर
वास्तविक हकीकत देखेंगे....

69

पर्दा हटा कर देखें ...

- पहला अवतार, मछ अवतार, यानी मछली के वंश में मनुष्य का जन्म और उसमें कछ यानी कछुआ और फिर से मनुष्य का जन्म। उसके बाद वराह यानी सुअर और उसके वंश में मनुष्य और उसके बाद नर+सिंह।
- हिंदू धर्म, में हम सब जानते है की नरसिंहा अवतार में भगवान के कोई माता या पिता नहीं थे। जब प्रह्लाद को उसके पीता ने आग से धधकते लोहे के खंभे को गले लगाने कहा तब लोहे के खंभे को फाड़ कर भगवान के नरसिंहा अवतार लिया। भगवान जन्मे नहीं थे, प्रगत हुए थे।
- हिंदू शास्त्रों में भगवान नरसिंहा के माता पिता का कहाँ भी उल्लेख नहीं है।

70

... पर्दा हटा कर देखें ...

- इसके बाद, सतपंथी दस अवतार में, नरसिंहा वंश में फिर से मनुष्य जन्मे।
- भगवान परशुराम ने कभी भी शादी नहीं की थी। यह बात तो प्रचलित है। वह अखंड ब्रह्मचारी थे। पर सतपंथी दस अवतार में उनकी भी शादी हुए और उनका भी वंश है।
- हिंदुओं के अनुसार, परशुराम अवतार, विष्णु देव का अंश अवतार थे और उनका अवतार राम अवतार के समय काल में हुआ था। पर सतपंथीयों के अनुसार, परशुराम अवतार के वंश में ७वी पीढ़ी में राम जन्मे थे।
- हिंदुओं के लिए यह बात पूरे पूरी झूठी है और स्पष्ट तौर पर बनावट है।
- हम सभी जानते है के भगवान परशुराम तो एक ब्राह्मण थे, तो उनके वंश में भगवान राम, जो सूर्य वंशी थे, कैसे जन्मे?!

71

... पर्दा हटा कर देखें ...

- आगे बढ़ते हुए..., सतपंथी दस अवतार कहता है के राम ने रावण को मार कर राजा हरिश्चंद्र को तारा।
- राजा राम और राजा हरिश्चंद्र की कथाएँ हम सब ने सुनी है। दोनों कथाओं के बीच कोई संबंध नहीं है। तो फिर सतपंथी दस अवतार में कहाँ से संबंध पैदा हो गया।
- उसके बाद बात आती है, भगवान राम के वंश में भगवान कृष्ण का अवतार।
- हिंदू पुराणो के अनुसार, भगवान कृष्ण चंद्रवंशी थे और भगवान राम सूर्यवंशी। इसका अर्थ दोनों भगवान एक वंश के नहीं थे। पर सतपंथी दस अवतार में दोनों को एक ही वंश में जन्मा दिया है।
- सतपंथी धर्म प्रचारकों ने फिर से बड़ी भूल कर दी।

72

... पर्दा हटा कर देखें ...

- वंश आगे बढ़ते वह कहतें है की भगवान कृष्ण के वंश में पदुमन, उनके बाद, सेस्थान और बेलस्थान वागेरे जन्मे।
- पर पदुमन पदमन के पुत्र अनिरुद्ध को तो भूल ही गए। यहाँ पर फिर से चूक कर गए।
- कृष्ण के ८वे वंश में बुध अवतार को जनम दिया। पर हम सब जानते है की कृष्ण और बुध के बीच
- કૃષ્ણના ૮ માં વંશમાં બુદ્ધ અવતાર જન્માવી દીધા. પણ આપણે સહુ જાણીએ છીએ કે કૃષ્ણ અને બુદ્ધ વચ્ચે ૨૫૦૦ વર્ષોનું અંતર છે. સાધારણ રીતે ૮ પેઢી ૨૦૦ થી ૩૦૦ વર્ષોમાં થઇ જાય. પણ અહીં અંતર ૨૫૦૦ વર્ષનું છે. આ પણ સાબિત કરે છે કે સતપંથ ધર્મનો બુદ્ધ અવતાર એ સાચો બુદ્ધ અવતાર નથી, માત્ર ગપગોલુ છે.
- સતપંથી દસ અવતાર કહે છે કે ભગવાન બુદ્ધએ દૂર્યોધનને માર્યો. થોડી વાર આ વાતને સાચી માની લઈએ તો પણ કૃષ્ણના ૮ મી પેઢીમાં દૂર્યોધનને માર્યો. જયારે આપણને ખબર છે કે દૂર્યોધન કૃષ્ણના સમયમાંજ પાંડવોએ માર્યો હતો.

73

... पर्दा हटा कर देखें

- सतपंथी दस अवतार यह कहता है की भगवान बुध ने पांडवों को गाय मार कर “गौ मेध यज्ञ” करने कहा।
- सारी दुनिया जानती है की, “अहिंसा परम धर्म” का सूत्र देने वाले भगवान बुध थे। तो फिर भगवान बुध किसी जानवर को मारने की सलाह कैसे दे सकते है और वह भी गाय मारने की सलाह?
- पांडवों और भगवान बुध के बीच वार्तालाप के बातें, जिस पर सतपंथ धर्म खड़ा हुआ है, उसकी हिंदू शास्त्रों में कहीं उल्लेख नहीं है। भगवान बुध का अवतार हिंदुओं के अनुसार कलियुग में हुआ है, पर सतपंथीयों ने उन्हें द्वापर युग में जन्म दिया है। (कलियुग में केवल एक अवतार बताया है।)
- आगे बदते हुए, भगवान बुध के वंश को मुसलमानों के साथ जोड़ ने में आया।
- विष्णु का तथाकथित दसवां अवतार, अली, को भगवान बुध के वंश के साथ जोड़ दिया। हिंदुओं के लिए कितनी बड़ी आघात जनक बात है।

74

भगवान ने १० में से ९ अवतार हिंदुओं के बीच, भारत में लिया, तो फिर, सतपंथीओं के अनुसार १०वां अवतार मुसलमानों के बीच, ईरान देश में, कैसे लिया?

75

मुसलमानों के बीच १०वां अवतार क्यों? ...

- पहले ९ अवतार भारत में हिंदुओं के बीच लेने के बाद, भगवान को 10वां अवतार मुसलमानों में ईरान में क्यों लेना पड़ा? ऐसा सवाल हिंदू लोग पूछ सकते है, ऐसे अपेक्षा सतपंथ के संस्थापकों को थी।
- इस वजह से एक बिन-बुनियादी, उपजाई और झूठी कहानी तैयार की, को इस प्रकार है।
- महाभारत के युद्ध, जिसमे भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया और कृष्ण भगवान की सलाह के अनुसार, पांडवों ने अपने कौरव भाईयों का वध किया।

76

... मुसलमानों के बीच १०वां अवतार क्यों?

- पर ब्राह्मणों यह बात समझ न सके और पांडवों को पाप का भागीदार धर लिया। इसलिए पाप से मुक्ति पाने के लिए, "राजसुय यज्ञ" कराने की बात कही। (यह सब पीर सदरुद्दीन की जमाई हुई बातें है)
- जब भगवान कृष्ण को पांडवों द्वारा राजसूय यज्ञ कराने की बात का पता चला, तब वह बहुत नाराज हो जाते है। गीता का बोध देने के बावजूद मुझे भूल गए... और ब्राह्मणों की बात को सच मान लिया...यह बात जान कर क्रोधित हुए।
- **इसलिए भगवान ने घोषणा की के भले मैं १०वां अवतार हिंदुओं के बीच लेने वाला था, पर अब मैं १०वां अवतार, मुसलमानों में हजरत अली के नाम से अरब खंड में लूँगा।**
- यह सब बातें पीर सदरुद्दीन के दिमाग की उपज है, उसका हिंदू शास्त्रों मीन कहीं भी उल्लेख नहीं है।
- इस जगह पर एक और बात बताना जरूरी है की ब्राह्मणों गीता का बोध न समझ सके और पांडवों के हाथ राजसुय यज्ञ करवाया, इसलिए ब्राह्मणों को सच्चे वेद का ज्ञान नहीं है, ऐसा एक नया सिद्धांत बनाया। **इस सिद्धांत की वजह से, ब्राह्मणों को अज्ञानी बताकर कर, सतपंथी लोग उनकी पुजा और कर्मकांड ब्राह्मणों के हाथ नहीं कराते।**

77

सतपंथ धर्म को एक "सनातन" धर्म के तौर पर पेश करने का प्रपंच

78

“सनातन” कड़ी से जोड़ ने का प्रयत्न

सतपंथ धर्म सनातन काल से अस्तित्व में है, ऐसे बात मनाने के लिए एक नया प्रपंच (हिंदुओं के नजर से) तैयार करने में आया, जो इस प्रकार है;

- धरती का पहल मनुष्य, बाबा आदम के वंश बेल, उनके कहने जाने वाले पुत्रों सिस्साम, श्लोकाम इत्यादि, को लेकर, मुर्तजा अली और इमाम शाह को जोड़ ने में आया है। हिंदू धर्म में इस बात तो समर्थन देता हुआ कोई साहित्य नहीं है।
- इस तरह सतपंथ धर्म को सनातन धर्म के साथ जोड़ ने को कोशिश की गई है।
- उसके बाद, विष्णु के निराकार अवतार को इमाम शाह के पुत्र नर मुहम्मद शाह के साथ जोड़ ने में आया।
- **इस बात के पीछे हेतु इतना ही है की अंजान हिंदुओं को बेवकूफ बनाकर सतपंथ धर्म हिंदु धर्म है, ऐसा उनके मन में बैठा कर उन्हें सतपंथ धर्म पीलते कर देना और धीरेधीरे मुसलमान धर्म में परिवर्तित कर देना था।**

79

1.10 सतपंथ के साहित्यों

सतपंथ साहित्यों पर उड़ती नजर

80

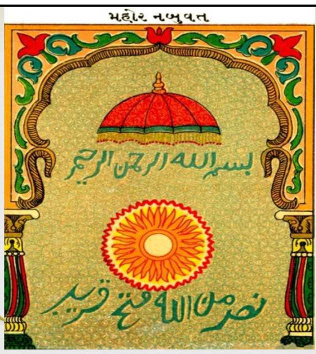
किसी भी धर्म का अभ्यास,
उसके साहित्यों के अभ्यास किए बिना अधूरा है।

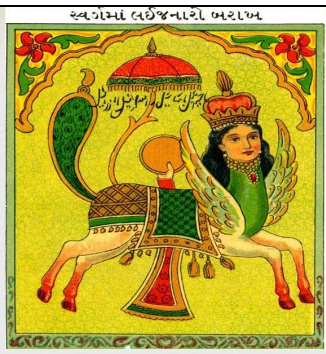
धर्म कैसे चलता है? उसका पालन किस रीत से होता है?
उसका मर्म क्या है? इन सवालों का जवाब धर्म के
साहित्यों पर से मिल आता है।

81

<u>महोर नाबूवत:</u>

अली की मुहर



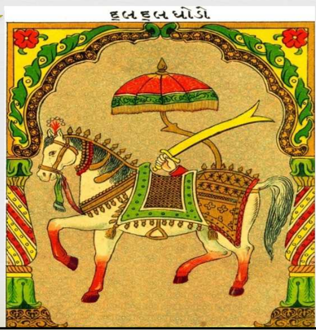


<u>बराख:</u>

अमरपुरी
(सतपंथी स्वर्ग)
ले जाने के
लिए वाहन

<u>दुल दुल घोडा:</u>

अली, निष्कलंकी
अवतार में इस
घोड़े पर बैठ कर
कलिंगा दैत्य के
सामने लड़ेंगे।





ज़ुलफीकार:

**अली की
दोधारी तलवार**

साहित्य

- सतपंथ साहित्य मुख्य तौर पर दो प्रकार में देखने मिलते हैं;
  1. गीनान
  2. दुआ / कलमा

83

1.10.1 गीनान साहित्य

गीनान साहित्य – संक्षिप्त में

84

गीनान साहित्य ...

- सतपंथीओं के लिए, धार्मिक गीनान परंपरा को, मुसलमानों की कुरान और हिंदुओं के वेदों जितनी, सत्ता और मार्गदर्शन देता हुआ माना जाता है।
- गीनान साहित्य कवि रूप में है, जिसमे नीचे बताए मुद्दों को समावेश है;

1) नैतिक उपदेश।
2) चमकारी कहानियाँ (जिसकी वजह से पीर और इमाम पर लोगों की श्रद्धा जमे)।
3) दंत कथायें और भावविभोर एवं तल्लीन कविताए।
4) हिंदुओं की धार्मिक भावनायें को ठेस पहुंचने, उस तरह से हिंदू धर्म के मूल्यों, जैसे की भगवान के अवतारों, मूर्ति पूजा, यात्रा स्थल इत्यादि, को भ्रष्ट कर, इस्लामी मूल्यों को उच्च बताना।
5) निष्कलंकी नारायण और नकलंकी अवतार के नाम पर अली की प्रशंसा।
6) इमाम और पीर की प्रशंसा।

85

... गीनान साहित्य

7) गीनान, पीर और इमाम पर किसी भी तरह की शंका न रखने की सूचना।
8) पीर और इमाम ने दिये हुए बोध पर अंध-विश्वास रखने की सूचना।
9) मोक्ष मिलने के लिए एक मोमिन (अनुयायी) को क्या करना चाहिए।
10) अपनी कमाई में से १०वां हिस्सा, यानी दसोंद, और अन्य धार्मिक कर, ईमानदारी से चुकाने के बातें।
11) दसोंद न देने पर भयंकर दुष्परिणाम होने की चेतावनी दी गई है।
12) अगर अनुयायी अपने मन में किसी भी प्रकार की शंका तो स्थान देता है, तो मृत्यु के बाद अमरापुरी न पाने का डर और चेतावनी भी दी गई है।
13) गीनान में कुरान का निचोड़ भी शामिल है।

86

गीनान -धर्म के साथ बाँध रखता तत्व...

- प्रत्येक मुरीद/मोमिन की जिम्मेदारी में गीनान का पालन करना आता है। इस महत्व को नीचे बताए भावनात्मक तत्वों की मदद से बांधने में आया है।

1. **फरमान का पालन करना, यह पहली जिम्मेदारी में आता है। इस वजह से प्रत्येक मुरीद तक गीनान पहुँचना चाहिए।**

   (पहेले पालो ते सतगुरुनी वाचा / પહેલે પાળો તે સતગુરૂની વાચા)

2. ગીનાન, અખંડ જ્યોત (નૂર) થી ભરપૂર છે. આ અખંડ જ્યોતના અભાવે જમાત (સતપંથ પાળનારા લોકોનો સમુદાય) નહિ ટકે.

   (गीनान बोलो रे नीत नुरे भर्या / ગીનાન બોલો રે નીત નૂરે ભર્યા)

87

... गीनान -धर्म के साथ बाँध रखता तत्व ...

3. **गीनान में, अखंड ज्योत से निकले शब्द है, इसलिए उसे** पढ़ना

   (जीरे वीरा सतपंथ सटे जिलिए / જીરે વીરા સતપંથ સતે જીલીયે)

4. **गीनान पढ़ना जरूरी है। अगर कोई फरमान नाहिं मानेगा, तो अमरापुरी नहीं जा पाएगा।**
   - *एजी फरमान आमरो जे ना मानसे,*
     એજી ફરમાન અમારો જે નાં માનશે,
   - *वली नहीं मानसे वात;*
     વલી નહિ માનશે વાત;
   - *ते तथाम किया नहीं पामसे,*
     તે તથામ કિયાં નહિ પામશે,
   - *नहीं मलसे गुर-नर ने साथ*
     નહિ મળશે ગુર-નર ને સાથ

88

... ગીનાન –ધર્મ સાથે બાંધી રાખતો પરિબળ ...

5. गीनान और फरमान ज्ञान जरूर पढ्न। पीर और इमाम एक ही है।
6. फरमान का आज्ञा पालन करने से ही मुक्ति मिलती है।

मोमीन चेतामणी कहता है:

एजी लाख चोरसी तो छूटिए - એજી લાખ ચોરાશી તો છૂટીએ,
जो रहिए आपणा सतगुरु के फरमान माहे - જો રહીએ આપણા સતગુરુ કે ફરમાન માહે,
दर्सोंद दिजे सतगुरु मुखे - દસોન્દ દીજે સતગુર મુખે,
तो वासो होवे अमरपुरी माहे - તો વસો હોવે અમરાપુરી માંહે.

7. किसी भी प्रकार की **"शंका"** करने की आजादी नहीं है।

89

1.10.2 दुआ और कलमा

सतपंथ की धार्मिक क्रिया (पूजा) के समय पर पढे जाने वाले
दुआ और कलमे...
पर एक झलक

90

दुआ और कलमा ...

इस जगह पर हमें एक बात ध्यान में रखनी चाहिए की हजरत अली, जो इस्लाम के स्थापक मुहम्मद पैगंबर के दामाद है, उन्हें सतपंथी लोग अपना देव मानते है। और उन्हें "विष्णु का १०वां अवतार" और "निष्कलंकी नारायण" या कभी केवल "नारायण" के नाम से संबोधन करते है।

- "दुआ" शब्द अरबी भाषा का एक शब्द है।
- सतपंथी पूजा और अन्य धार्मिक क्रियाओं में दुआ और कलमा पढ़ें जाते है।
- सतपंथ की पूजा ब्राह्मणों के हाथ नहीं की जाती। मुखी (जमात-खाना / खाना में पूजा करने वाला पुजारी) या सैय्यद के हाथों करने में आती है।
- सैय्यदों को अपने आध्यात्मिक गुरु मानते है और धार्मिक बातों में सर्वोच्च मानते है।
- मनुष्य के जन्म से लेकर, धर्म अंगीकार से लेकर, मृत्यु और मृत्यु के बाद दफन क्रिया तक के प्रत्येक छोटे बड़े अवसरों के लिए अलग-अलग दुआएं है।

91

... दुआ और कलमा ...

- प्रत्येक छोटे बड़े अवसरों के लिए अलग-अलग दुआएं है, जैसे की;
  1) क्रिया से पहले "देव स्थापन मंडान"
  2) मुखी की तौबा
  3) कलश को धूप और लोबान लगाने की दुआ
  4) ब्रह्मा / विष्णु / महेश / शक्ति इत्यादि को भोजन करने की दुआ
  5) मुखी की पावल पिलाने की दुआ
  6) शुक्रवारी दूज के चन्द्र को देखने की दुआ
  7) नादे आली की दुआ
  8) मुर्दे को दफना ने के पहले और बाद की दुआ
  9) पाँच कलमा
  10) मुहर नाबूवत (आली की मोहर) की दुआ
  11) अली की अरजी इत्यादि... इत्यादि...

92

... दुआ और कलमा ...

- प्रत्येक धार्मिक पूजा, क्रिया और अन्य प्रसंगों के आरंभ केर ने से पहले, एक मूलभूत और अति महत्व का "श्लोक" (दुआ) बोलने में आती है। वह श्लोक है...

  "फारमजी भिस्मिल्लाह हर रहेमान नर रहीम

  सतगोर पात्र ब्रह्मा इंद्र इमाम शाह आद

  विष्णु निरंजन नर अली मुहम्मद शाह आपकी दुआ"

93

... दुआ और कलमा ...

- और प्रत्येक दुआ इससे पूरी होती है;

  "सतगोर इमामशाह नर अली मुहम्मद शाह

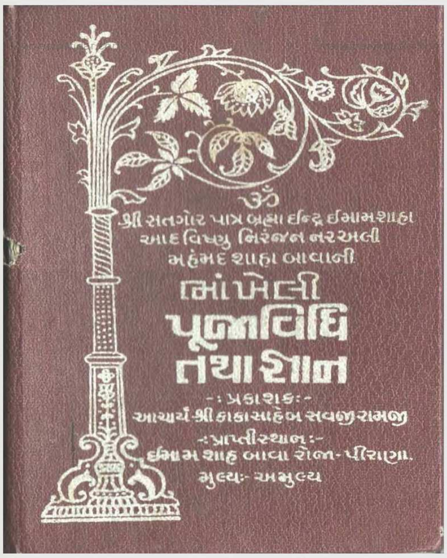
  हक लाएलाहा इल्लल्लाहों मुहमदूर रसूलील्लाहे"

94

... दुआ और कलमा

- साल १९८२ में, उस समय के पीराणा के काका, सवजी रामजी ने “भांखेली पूजा विधि” नाम की पुस्तक प्रकाशित की थी।
- सतपंथीओं की मुख्य संस्था “धी इमाम शाह बावा रोजा संस्थान कमेटी ट्रस्ट” के चेरमेन पद पर हमेशा काका ही होते है। यह संस्था इमाम शाह की दरगाह की देख रेख करती है। इस संस्था के काका ने यह पुस्तक प्रकाशित की है।
- दुआ और कलमों का इस पुस्तक में बहुत अच्छा संकलन है।
- अगले स्लाइड में, उस पुस्तक के कुछ पन्ने और उसके अंदर की विषय वस्तुओं पर एक नजर करेंगे।

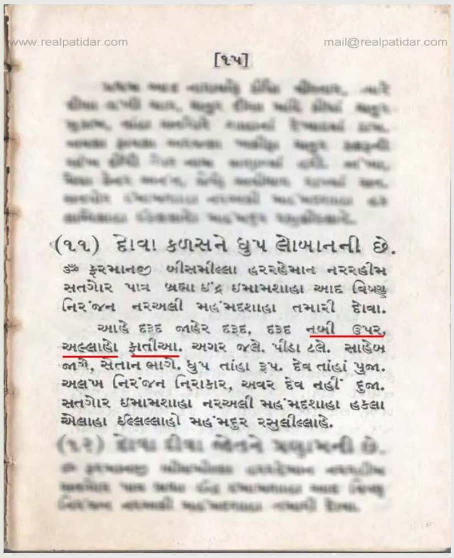
95



भांखेली पूजा विधि तथा ज्ञान

<u>प्रकाशक:</u> काका सवजी रामजी,
इमामशाह बावा रोजा - पीराणा

96



[૧૫]

(૧૧) દોવા કળસને ધુપ લોબાનની છે.

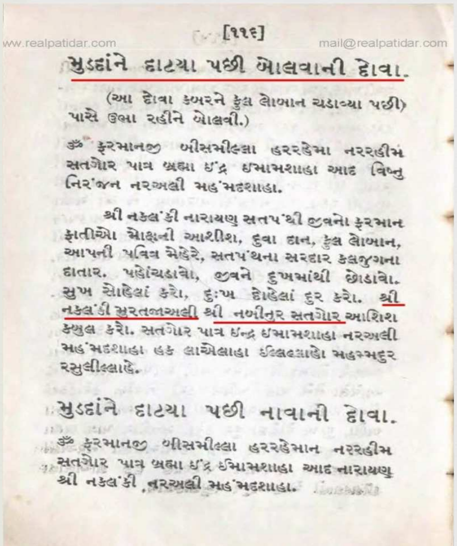
ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહેમાન નરરહીમ સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઇંદ્ર ઇમામશાહા આદ વિષ્ણુ નિરંજન નરઅલી મહંમદશાહા તમારી દોવા.

આહે દરદ જાહેર દરદ, દરદ નબી ઉપર, અલ્લાહો ફાતીઆ. અગર જલે. પીડા ટલે. સાહેબ જાગે, સેતાન ભાગે. ધુપ તાંહા રૂપ. દેવ તાંહાં પુજા. અલખ નિરંજન નિરાકાર, અવર દેવ નહીં દુજા. સતગોર ઇમામશાહા નરઅલી મહંમદશાહા હકલા એલાહા ઇલ્લલ્લાહો મહંમદુર રસુલીલ્લાહે.

कलश को धूप लोबान लगाने की दुआ

नबी (मुहम्मद पैगंबर) और अल्लाह के लिए प्रार्थना

97


[૧૧૬]

મુડદાંને દાટયા પછી બોલવાની દોવા.

(આ દોવા કબરને ફુલ લોબાન ચડાવ્યા પછી) પાસે ઉભા રહીને બોલવી.)

ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહેમા નરરહીમં સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઇંદ્ર ઇમામશાહા આદ વિષ્નુ નિરંજન નરઅલી મહંમદશાહા.

શ્રી નકલંકી નારાયણ સતપંથી જીવનો ફુરમાન ફાતીઓ મોક્ષની આશીશ, દુવા દાન, ફુલ લોબાન, આપની પવિત્ર મેહેરે, સતપંથના સરદાર કલજુગના દાતાર. પહોંચડાવો, જીવને દુખમાંથી છોડાવો. સુખ સોહેલાં કરો, દુઃખ દોહેલાં દુર કરો. શ્રી નકલંકી સુરતજાઅલી શ્રી નબીનુર સતગોર આશિશ કબુલ કરો. સતગોર પાત્ર ઇન્દ્ર ઇમામશાહા નરઅલી મહંમદશાહા હક લાએલાહા ઇલ્લલ્લાહો મહમ્મદુર રસુલીલ્લાહે.

મુડદાંને દાટયા પછી નાવાની દોવા.

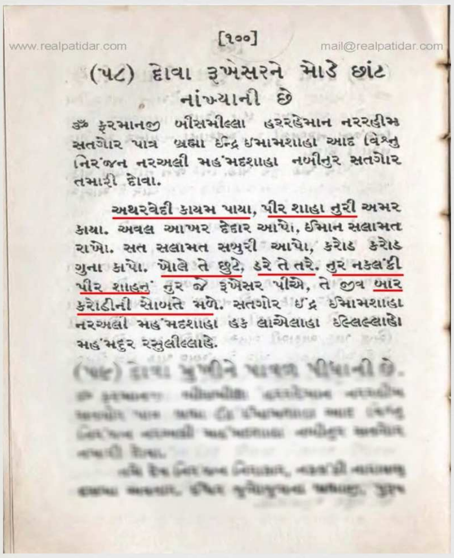
ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહેમાન નરરહીમ સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઇંદ્ર ઇમામશાહા આદ નારાયણ શ્રી નકલંકી ,નરઅલી મહંમદશાહા.

मुर्दे को दफनाने के बाद बोलने वाली दुआ

नीचे बताए देवों के लिए प्रार्थना हैं;

1) श्री निष्कलंकी मुर्तजा आली, और
2) नबी-नूर सतगोर (यानी मुहम्मद पैगंबर)

98



[૧૦૦]

(૫૮) દોવા રૂખેસરને મોડે છાંટ નાંખ્યાની છે

ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહેમાન નરરહીમ સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઈન્દ્ર ઈમામશાહા આદ વિશ્નુ નિરંજન નરઅલી મહંમદશાહા નબીનુર સતગોર તમારી દોવા.

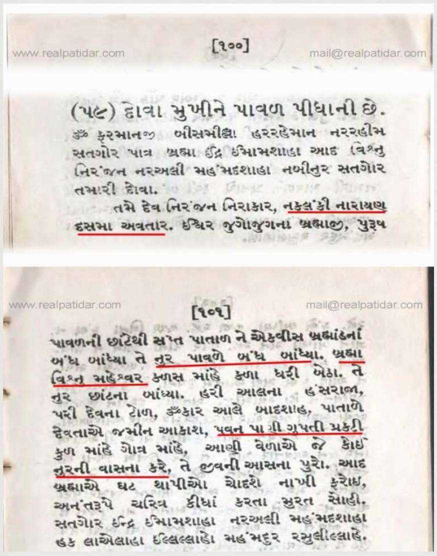
અથરવેદી કાયમ પાયા, પીર શાહા નુરી અમર કાયા. અવલ આખર દેદાર આપો, ઈમાન સલામત રાખો. સત સલામત સબુરી આપો, કરોડ કરોડ ગુના કાપો. બોલે તે છુટે, ડરે તે તરે. નુર નકલંકી પીર શાહનું નુર જે રૂખેસર પીએ, તે જીવ બાર કરોડીની સોબતે મળે. સતગોર ઈંદ્ર ઈમામશાહા નરઅલી મહંમદશાહા હક લાએલાહા ઈલ્લલ્લાહો મહંમદુર રસુલીલ્લાહે.

रुखेसर (वफादार मुरीद) के मुह पर पानी छिड़कने की दुआ

नोंध:

- अथर वेदी... पीर शाह
- नूर (अखंड ज्योत)
- डरे ते तारे (डरे सो तर जाए)
- बार करोड़ी की सोबत पाए

99



[૧૦૦]

(૫૯) દોવા મુખીને પાવળ પીધાની છે.

ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહેમાન નરરહીમ સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઈંદ્ર ઈમામશાહા આદ વિશ્નુ નિરંજન નરઅલી મહંમદશાહા નબીનુર સતગોર તમારી દોવા.

તમે દેવ નિરંજન નિરાકાર, નકલંકી નારાયણ દસમા અવતાર. ઈશ્વર જુગોજુગના બ્રહ્માજી, પુરૂષ

[૧૦૧]

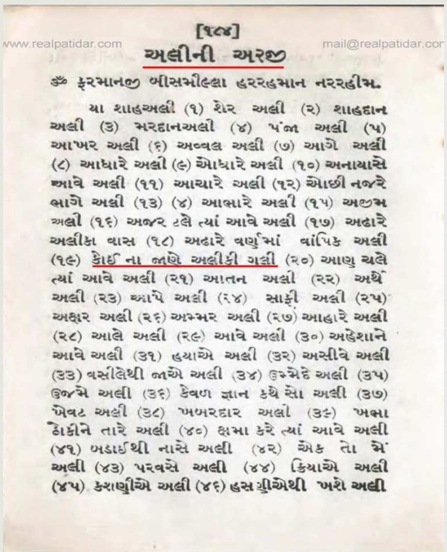
પાવળની છાંટથી સપ્ત પાતાળ ને એકવીસ બ્રહ્માંડનાં બંધ બાંધ્યા તે નુર પાવળે બંધ બાંધ્યા. બ્રહ્મા વિશ્નુ મહેશ્વર કળસ માંહે કળા ધરી બેઠા. તે નુર છાંટના બાંધ્યા. હરી આલના હંસરાજા, પરી દેવના ટોળ, ૐકાર આલે બાદશાહ, પાતાળે દેવતાએ જમીન આકાશ, પવન પાણી ગુપતી પ્રકરી કુળ માંહે ગોત્ર માંહે, આણી વેળાએ જે કોઈ નુરની વાસના કરે, તે જીવની આસના પુરો. આદ બ્રહ્માએ ઘટ થાપીઓ ચોદશે નાખી ફેરોઈ, અનંતરૂપે ચરિત્ર કીધાં કરતા સુરત સોહી. સતગોર ઈન્દ્ર ઈમામશાહા નરઅલી મહંમદશાહા હક લાએલાહા ઈલ્લલ્લાહો મહંમદુર રસુલીલ્લાહે.

पावल पीने की दुआ

नोंध:

1. देखो किस तरह से हिंदू देव जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश के नामों को निष्कलंकी नारायण के साथ जोड़ कर इस्तेमाल किया गया है।
2. पावल को नूर के साथ जोड़ दिया गया है।

100



[૧૮૪]

અલીની અરજી

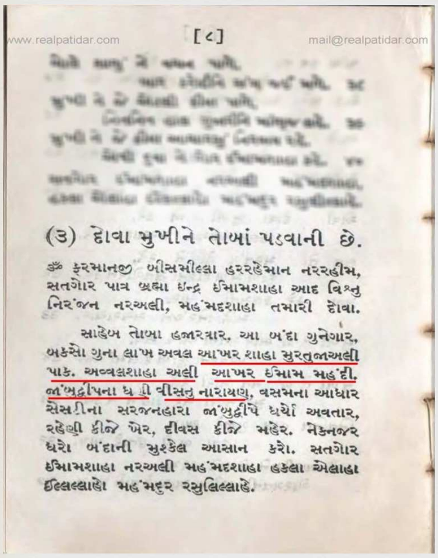
ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહમાન નરરહીમ.

યા શાહઅલી (૧) શેર અલી (૨) શાહદાન અલી (૩) મરદાનઅલી (૪) પંજા અલી (૫) આખર અલી (૬) અવ્વલ અલી (૭) આગે અલી (૮) આધારે અલી (૯) ઓધારે અલી (૧૦) અનાયાસે આવે અલી (૧૧) આચારે અલી (૧૨) ઓછી નજરે ભાગે અલી (૧૩) (૪) આભારે અલી (૧૫) અજીમ અલી (૧૬) અજર ટલે ત્યાં આવે અલી (૧૭) અઢારે અલીકા વાસ (૧૮) અઢારે વર્ણમાં વાંપિક અલી (૧૯) કોઈ ના જાણે અલીકી ગલી (૨૦) આણુ ચલે ત્યાં આવે અલી (૨૧) આતન અલી (૨૨) અર્થે અલી (૨૩) આપે અલી (૨૪) સાફી અલી (૨૫) અક્ષર અલી (૨૬) અમ્મર અલી (૨૭) આહારે અલી (૨૮) આલે અલી (૨૯) આવે અલી (૩૦) અહેશાને આવે અલી (૩૧) હયાએ અલી (૩૨) અસીવે અલી (૩૩) વસીલેથી જાએ અલી (૩૪) ઉમ્મેદે અલી (૩૫) ઉજમે અલી (૩૬) કેવળ જ્ઞાન કથે સો અલી (૩૭) ખેવટ અલી (૩૮) ખબરદાર અલી (૩૯) ખમા ઠોકીને તારે અલી (૪૦) ક્ષમા કરે ત્યાં આવે અલી (૪૧) બડાઈથી નાસે અલી (૪૨) એક તો મેં અલી (૪૩) પરવસે અલી (૪૪) ક્રિયાએ અલી (૪૫) કુરાણીએ અલી (૪૬) હસ ગ્રીએથી ખશે અલી

अली की अरजी

खास नोंध:

कोई न जाने अली की गली



[૮]

(૩) દોવા મુખીને તોબાં પડવાની છે.

ૐ ફુરમાનજી બીસમીલ્લા હરરહેમાન નરરહીમ, સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઇન્દ્ર ઈમામશાહા આદ વિશ્નુ નિરંજન નરઅલી, મહંમદશાહા તમારી દોવા.

સાહેબ તોબા હજારવાર, આ બંદા ગુનેગાર, બકસો ગુના લાખ અવલ આખર શાહા મુરતુજાઅલી પાક. અવ્વલશાહા અલી આખર ઈમામ મહંદી. જાંબુદ્વીપના ધણી વીસનુ નારાયણ, વસમના આધાર સેસ઼ીના સરજનહારા જાંબુદ્વીપે ધર્યો અવતાર, રહેણી કીજે ખેર, દીવસ કીજે મહેર. નેકનજર ધરો બંદાની મુશ્કેલ આસાન કરો. સતગોર ઈમામશાહા નરઅલી મહંમદશાહા હકલા એલાહા ઈલ્લલ્લાહો મહંમદુર રસુલિલ્લાહે.

मुखी की तौबा

नोंध:

1) अंतिम अवतार – शाह मुर्तजा अली
2) आखिरी इमाम – इमाम महदी
3) अली को जांबुद्वीप (भारत उपखंड) का स्वामी और विष्णु, नारायण के नाम के सम्बोधन किया है।

सारांश – चरण १ ...

1) सतपंथ का मूल:
   - सतपंथ, शिया मुस्लिम धर्म की निझारी इस्माइली शाखा, का एक पंथ है।
2) इमाम शाह की भूमिका:
   - इमाम शाह का भारत आने के पीछे का मकसद इस्लाम का विस्तार करना था और उसमें उसे सफलता भी मिली।
3) प्रोपगंडा / प्रचार पद्धति:
   - *इस्लाम के धर्म प्रचारकों ने इस्लाम के उच्च आदर्शों को अनुयायियों के पूर्वजों के धर्म (यानी हिंदू धर्म) की परिभाषा और संस्कृति में समझाया।*
   - हिंदू धर्म में प्रचलित और सुंदर आदर्शों, संस्कारों, रीत रिवाजों, मान्यताओं, बंधनों इत्यादि को इस्लामी गर्भ / आत्मा / बीज के आस पास जोड़ने में आया।
   - धर्म परिवर्तन का कार्य आसानी से पूरा हो सके इस लिए सावधानी पूर्वक और सुनियोजित प्रपंच रचने में आया।

103

... सारांश – चरण १ ...

4) इमाम और अखंड ज्योत:
   - अली को पहला इमाम और विष्णु का दसवां अवतार माना जाता है और उनके अंदर नूर (अखंड ज्योत) का वास है।
   - यह नूर (अखंड ज्योत) पीढ़ी दर पीढ़ी, पिता इमाम द्वारा इमाम की गद्दी का उत्तराधिकारी पुत्र में कुदरती तौर पर उतरता आता है।
5) सूफी वाद:
   - सतपंथ धर्म के प्रचारकों ने सूफी वाद के सिद्धांतों को अपना कर संगीत द्वारा अनुयायियों को आकर्षित किया।
   - ऐसा उनके साथ कोई और न करे इसलिए, शायद आज भी जुनूनी मुसलमानों संगीत, सिनेमा इत्यादि के विरोधी है।
   - उनका मुख्य उद्देश्य हमेशा से लोगों का धर्म परिवर्तन करना ही रहा है।

104

... सारांश – चरण १

6) धर्म सिद्धांत:

- सतपंथ धर्म सिद्धांत यह कहता है के विष्णु का १०वां अवतार एक अरब देश में हो गया है और सही समय पर प्रगट होकर कलिंगा नोम के दैत्य का वध कर कुंवरीका धरती के साथ लग्न होगा। उसके बाद हर एक मोमिन हज़ारों साल तक धरती पर राज करेगा।

7) दस अवतार:

- हिंदू दस अवतार को भ्रष्ट कर उसमें इस्लामी तत्वों को मिलने में आया और हजरत अली को भगवान विष्णु का १०वन अवतार होने की घोषणा की।

8) गीनान साहित्य:

- गीनान दवारा ऐसा सुनिश्चित करने में आया की अनुयायी किसी भी प्रकार की शंका न करे और सतपंथ के प्रचारकों पर अंधा विश्वास रखें।

9) दुआ और कलमा

- दुआ और कलमों को इस प्रकार से रचने में आए के हिंदू तत्वों का उपयोग करके उनका मूल इस्लामी रखने मीन आया है। जिससे अनुयायी आखिरी में इस्लाम धर्म पालते हो जाए और इस्लाम को ही सच्चा धर्म समझे।

105

<u>खास नोंध / अवलोकन / निरीक्षण</u>

चाहे कितने भी हिंदू तत्वों का उपयोग किया गया हो...
आखिर में सतपंथ पालने वालों का रास्ता इस्लाम तरफ जाता है।

हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचकर उनका धर्म खड़ा किया गया है।

106

चरण १ समाप्त

107

2.1 सरकारी दस्तावेज़ और शोधकर्ताओं के निष्कर्ष

शोधकर्ता और सरकारी दस्तावेजों का क्या कहना है, इसे ध्यान में लें।

108

<u>हम अव तक जो कुछ भी समझा है, उसे नीचे बताए सूचना के आधार पर पुष्टि करेंगे...</u>

1) शोधकर्ता और विद्वानों के निष्कर्ष...

और

2) सतपंथ विषय पर सरकारी दस्तावेज

109

व्याख्या ...

- सतपंथ, यानी "सच्चा पंथ" या मोक्ष के लिए सच्चा रास्ता, यह इसलाम के एक पंथ का नाम है, जिसमें हिंदू और शिया मुसलमानों के धार्मिक सिद्धांत शामिल है।

  -वाल्दिमीर इवानोव, प्रख्यात रूसी विद्वान

- खोजा मुसलमानों का पंथ

  -"जोडणी कोश", गुजरात विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित

110

... व्याख्या ...

- सतपंथ यह धर्म है इस्माइली खोजा, मतीया पंथ, इमामशाही पंथ, निझारी पंथ का

  - भग्वद्गोमंडल, गुजराती एनसाइक्लोपीडिया (Encyclopedia)

- सतपंथ यह खोजा मुसलमानों का पंथ है।

  - गुजराती लेक्सीकोन –गुजराती शब्दकोश (Dictionary) www.gujaratilexicon.com

111

... व्याख्या ...

- मुमना / मोमना:

  1. कणबी जाति का एक भाग
  2. हिंदुओं का एक भाग जो पीराणा पंथ का मुसलमानी धर्म पालता है।
  3. ऐसे लोगों का समुदाय जिनका पीराणा के सैय्यद इमाम शाह ने धर्म परिवर्तन करा कर शिया मुसलमान बनाया।
  4. उनके रीत रिवाज, क्रियाएँ और आचरण अर्ध हिंदू और अर्ध मुसलमानों जैसे हैं।
  5. ... ... इत्यादि

- गुजराती लेक्सीकोन, गुजराती भाषा का एक बड़ा और व्यापक शब्दकोश।

112

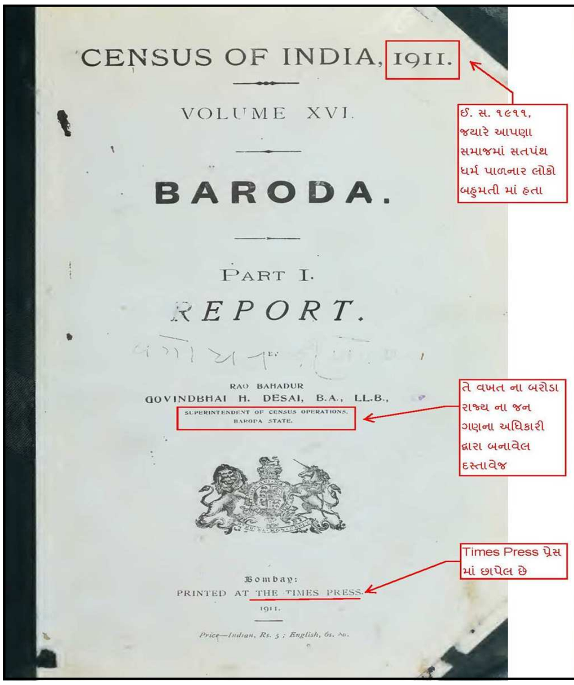
... व्याख्या

- पीराणा पंथ:

काका पंथ, मतीया पंथ, सतपंथ जिसकी इमाम शाह ने १५वी सदी में स्थापना की... ...

- गुजराती लेक्सीकोन

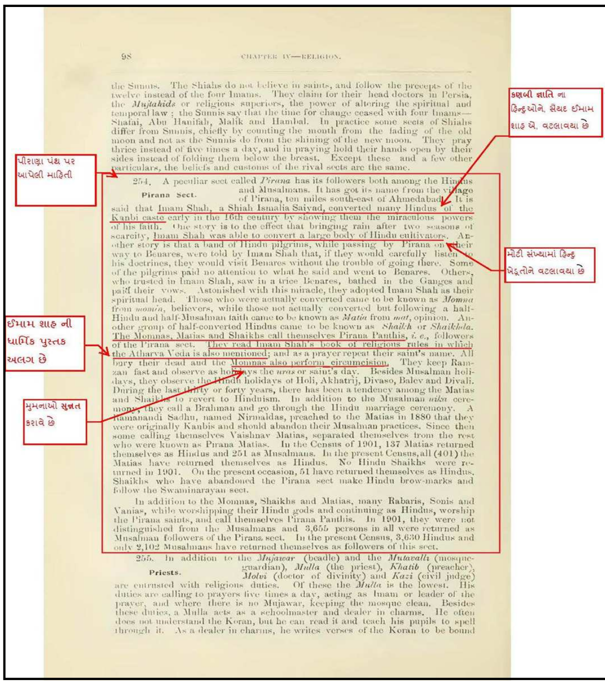
113



भारतकी जन गणना -1911 –खंड XVI –बरोड़ा –भाग 1 -1/3

अँग्रेज़ सरकार ने भारत की जन गणना की थी। उसमें पीराणा पंथ पर जानकारी दी है और पीर तथा मुरीद के बीच के संबंध के बारे में लिखा है।

114



98 CHAPTER IV—RELIGION.

the Sunnis. The Shiahs do not believe in saints, and follow the precepts of the twelve instead of the four Imams. They claim for their head doctors in Persia, the *Mujtahids* or religious superiors, the power of altering the spiritual and temporal law; the Sunnis say that the time for change ceased with four Imams—Shafai, Abu Hanifah, Malik and Hambal. In practice some sects of Shiahs differ from Sunnis, chiefly by counting the month from the fading of the old moon and not as the Sunnis do from the shining of the new moon. They pray thrice instead of five times a day, and in praying hold their hands open by their sides instead of folding them below the breast. Except these and a few other particulars, the beliefs and customs of the rival sects are the same.

Pirana Sect.

254. A peculiar sect called *Pirana* has its followers both among the Hindus and Musalmans. It has got its name from the village of Pirana, ten miles south-east of Ahmedabad. It is said that Imam Shah, a Shiah Ismalia Saiyad, converted many Hindus of the Kanbi caste early in the 16th century by showing them the miraculous powers of his faith. One story is to the effect that bringing rain after two seasons of scarcity, Imam Shah was able to convert a large body of Hindu cultivators. Another story is that a band of Hindu pilgrims, while passing by Pirana on their way to Benares, were told by Imam Shah that, if they would carefully listen to his doctrines, they would visit Benares without the trouble of going there. Some of the pilgrims paid no attention to what he said and went to Benares. Others, who trusted in Imam Shah, saw in a trice Benares, bathed in the Ganges and paid their vows. Astonished with this miracle, they adopted Imam Shah as their spiritual head. Those who were actually converted came to be known as *Momna* from *momin*, believers, while those not actually converted but following a half-Hindu and half-Musalman faith came to be known as *Matia* from *mat*, opinion. Another group of half-converted Hindus came to be known as *Shaikh* or *Shaikhda*. The Momnas, Matias and Shaikhs call themselves Pirana Panthis, *i. e.*, followers of the Pirana sect. They read Imam Shah's book of religious rules in which the Atharva Veda is also mentioned; and as a prayer repeat their saint's name. All bury their dead and the Momnas also perform circumcision. They keep Ramzan fast and observe as holidays the *uras* or saint's day. Besides Musalman holidays, they observe the Hindu holidays of Holi, Akhatrij, Divaso, Balev and Divali. During the last thirty or forty years, there has been a tendency among the Matias and Shaikhs to revert to Hinduism. In addition to the Musalman *nika* ceremony, they call a Brahman and go through the Hindu marriage ceremony. A Ramanandi Sadhu, named Nirmaldas, preached to the Matias in 1880 that they were originally Kanbis and should abandon their Musalman practices. Since then some calling themselves Vaishnav Matias, separated themselves from the rest who were known as Pirana Matias. In the Census of 1901, 137 Matias returned themselves as Hindus and 251 as Musalmans. In the present Census, all (401) the Matias have returned themselves as Hindus. No Hindu Shaikhs were returned in 1901. On the present occasion, 51 have returned themselves as Hindus. Shaikhs who have abandoned the Pirana sect make Hindu brow-marks and follow the Swaminarayan sect.

In addition to the Momnas, Shaikhs and Matias, many Rabaris, Sonis and Vanias, while worshipping their Hindu gods and continuing as Hindus, worship the Pirana saints, and call themselves Pirana Panthis. In 1901, they were not distinguished from the Musalmans and 3,655 persons in all were returned as Musalman followers of the Pirana sect. In the present Census, 3,630 Hindus and only 2,102 Musalmans have returned themselves as followers of this sect.

Priests.

255. In addition to the *Mujawar* (beadle) and the *Mutavalli* (mosque-guardian), *Mulla* (the priest), *Khatib* (preacher), *Molvi* (doctor of divinity) and *Kazi* (civil judge) are entrusted with religious duties. Of these the *Mulla* is the lowest. His duties are calling to prayers five times a day, acting as Imam or leader of the prayer, and where there is no Mujawar, keeping the mosque clean. Besides these duties, a Mulla acts as a schoolmaster and dealer in charms. He often does not understand the Koran, but he can read it and teach his pupils to spell through it. As a dealer in charms, he writes verses of the Koran to be bound

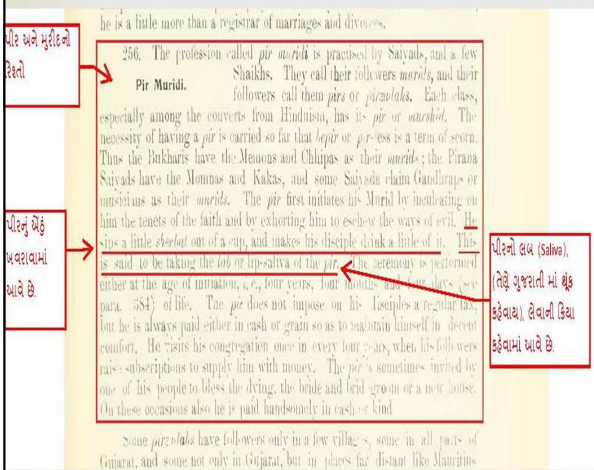
भारतकी जन गणना
-1911 –खंड XVI
–बरोड़ा –भाग 1 -2/3

पन्ना ९८ में पीराणा पंथ पर जानकारी देख सकते है।

<u>महत्व के कुछ मुद्दे:</u>

1) कणबी जाति के हिंदुओं को इमाम शाह ने परिवर्तित किया
2) इमामशाहीओं का धार्मिक पुस्तक, अथर्व वेद, यह अलग है।
3) मुमना लोग (अनुयायी) सुन्नत कराते हैं।

115



he is a little more than a registrar of marriages and divorces.

Pir Muridi.

256. The profession called *pir muridi* is practised by Saiyads, and a few Shaikhs. They call their followers *murids*, and their followers call them *pirs* or *pirzadahs*. Each class, especially among the converts from Hinduism, has its *pir* or *murshid*. The necessity of having a *pir* is carried so far that *bepir* or *pir*-less is a term of scorn. Thus the Bukharis have the Memons and Chhipas as their *murids*; the Pirana Saiyads have the Momnas and Kakas, and some Saiyads claim Gandhraps or musicians as their *murids*. The *pir* first initiates his Murid by inculcating on him the tenets of the faith and by exhorting him to eschew the ways of evil. He sips a little *sherbat* out of a cup, and makes his disciple drink a little of it. This is said to be taking the *lab* or lip-saliva of the *pir*. The ceremony is performed either at the age of initiation, *i.e.*, four years, four months and four days (see para. 384) of life. The *pir* does not impose on his disciples a regular tax, but he is always paid either in cash or grain so as to maintain himself in decent comfort. He visits his congregation once in every four years, when his followers raise subscriptions to supply him with money. The *pir* is sometimes invited by one of his people to bless the dying, the bride and bridegroom or a new house. On these occasions also he is paid handsomely in cash or kind

Some *pirzadahs* have followers only in a few villages, some in all parts of Gujarat, and some not only in Gujarat, but in places far distant like Mauritius

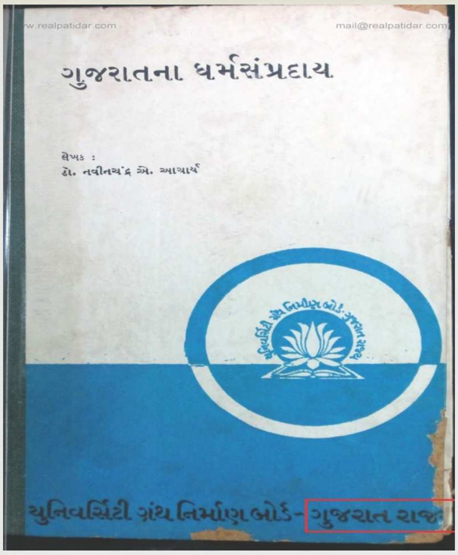
भारतकी जन गणना
-1911 –खंड XVI
–बरोड़ा –भाग 1 -3/3

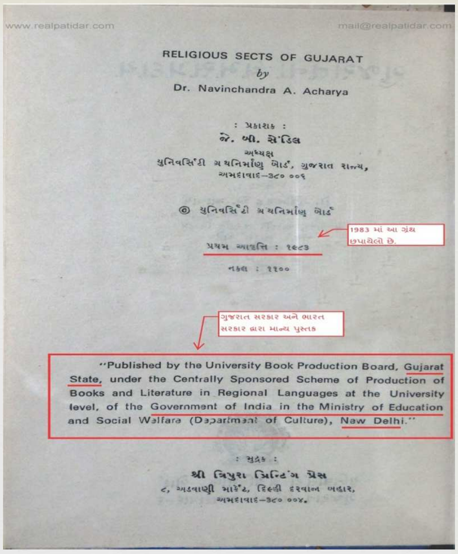
पीराणा के <u>पीर और मुरीद</u> के बीच के संबंधों के बारे में ९९ पन्ने में देखने मिलेगा।

<u>खास मुद्दे:</u>

1) "शरबत" को पीर जूठा करता है और उसके बाद अनुयायी (मुरीद) उसे पीते है।
2) इस क्रिया को "लब" या "थूक" लेने की क्रिया कहते है।

116





RELIGIOUS SECTS OF GUJARAT
by
Dr. Navinchandra A. Acharya

: પ્રકાશક :
જે. બી. સેંડિલ
અધ્યક્ષ
યુનિવર્સિટી ગ્રંથનિર્માણ બોર્ડ, ગુજરાત રાજ્ય,
અમદાવાદ–૩૮૦ ૦૦૬

© યુનિવર્સિટી ગ્રંથનિર્માણ બોર્ડ

પ્રથમ આવૃત્તિ : ૧૯૮૩

1983 માં આ ગ્રંથ છપાયેલો છે.

નકલ : ૧૧૦૦

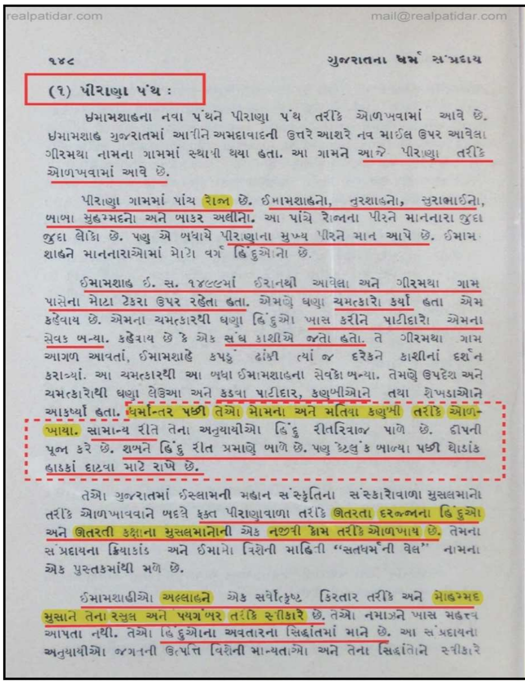
ગુજરાત સરકાર અને ભારત સરકાર દ્વારા માન્ય પુસ્તક

"Published by the University Book Production Board, Gujarat State, under the Centrally Sponsored Scheme of Production of Books and Literature in Regional Languages at the University level, of the Government of India in the Ministry of Education and Social Welfare (Department of Culture), New Delhi."

: મુદ્રક :
શ્રી ત્રિપુરા પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ
૮, અડવાણી માર્કેટ, દિલ્હી દરવાજા બહાર,
અમદાવાદ–૩૮૦ ૦૦૪.

"गुजरात के धर्म संप्रदाय"; वर्ष १९८३ में, गुजरात यूनिवर्सिटी द्वारा, केंद्रीय सरकार की एक योजना के अंतर्गत, प्रकाशित की गई है।

117



૧૪૮ ગુજરાતના ધર્મ સંપ્રદાય

(૧) પીરાણા પંથ :

ઇમામશાહના નવા પંથને પીરાણા પંથ તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. ઇમામશાહ ગુજરાતમાં આવીને અમદાવાદની ઉત્તરે આશરે નવ માઈલ ઉપર આવેલા ગીરમથા નામના ગામમાં સ્થાયી થયા હતા. આ ગામને આજે પીરાણા તરીકે ઓળખવામાં આવે છે.

પીરાણા ગામમાં પાંચ રોજા છે. ઈમામશાહનો, નુરશાહનો, સુરાભાઈનો, બાબા મુહમ્મદનો અને બાકર અલીનો. આ પાંચે રોજાના પીરને માનનારા જુદા જુદા લોકો છે. પણ એ બધાયે પીરાણાના મુખ્ય પીરને માન આપે છે. ઈમામશાહને માનનારાઓમાં મોટો વર્ગ હિંદુઓનો છે.

ઈમામશાહ ઈ. સ. ૧૪૯૯માં ઈરાનથી આવેલા અને ગીરમથા ગામ પાસેના મોટા ટેકરા ઉપર રહેતા હતા. એમણે ઘણા ચમત્કારો કર્યા હતા એમ કહેવાય છે. એમના ચમત્કારથી ઘણા હિંદુઓ ખાસ કરીને પાટીદારો એમના સેવક બન્યા. કહેવાય છે કે એક સંઘ કાશીએ જતો હતો. તે ગીરમથા ગામ આગળ આવતાં, ઈમામશાહે કપડું ઢાંકી ત્યાં જ દરેકને કાશીનાં દર્શન કરાવ્યાં. આ ચમત્કારથી આ બધા ઈમામશાહના સેવકો બન્યા. તેમણે ઉપદેશ અને ચમત્કારોથી ઘણા લોકો અને કડવા પાટીદાર, કણબીઓને તથા શેખડાઓને આકર્ષ્યા હતા. ધર્માન્તર પછી તેઓ મોમના અને મતિયા કણબી તરીકે ઓળખાયા. સામાન્ય રીતે તેના અનુયાયીઓ હિંદુ રીતરિવાજ પાળે છે. દીપની પૂજા કરે છે. શબને હિંદુ રીત પ્રમાણે બાળે છે. પણ કેટલુંક બાળ્યા પછી થોડાંક હાડકાં દાટવા માટે રાખે છે.

તેઓ ગુજરાતમાં ઈસ્લામની મહાન સંસ્કૃતિના સંસ્કારોવાળા મુસલમાનો તરીકે ઓળખાવવાને બદલે ફક્ત પીરાણાવાળા તરીકે ઊતરતા દરજ્જાના હિંદુઓ અને ઊતરતી કક્ષાના મુસલમાનોની એક નજીવી કોમ તરીકે ઓળખાય છે. તેમના સંપ્રદાયના ક્રિયાકાંડ અને ઈમામો વિશેની માહિતી "સતધર્મની વેલ" નામના એક પુસ્તકમાંથી મળે છે.

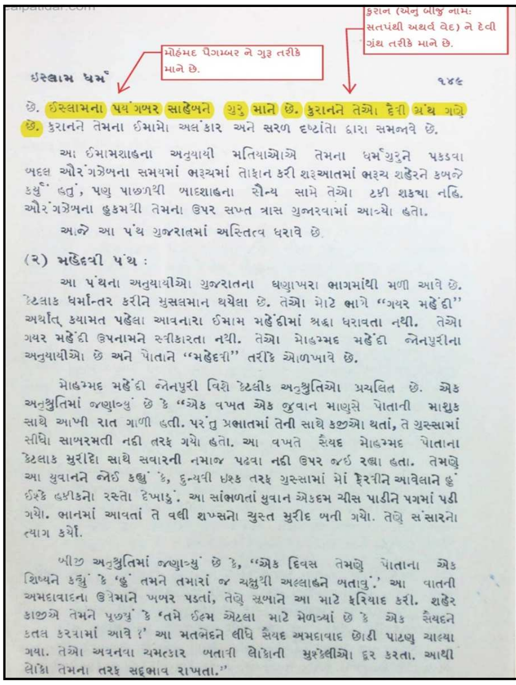
ઈમામશાહીઓ અલ્લાહને એક સર્વોત્કૃષ્ટ કિરતાર તરીકે અને મોહમ્મદ મુસાને તેના રસુલ અને પયગંબર તરીકે સ્વીકારે છે. તેઓ નમાઝને ખાસ મહત્ત્વ આપતા નથી. તેઓ હિંદુઓના અવતારના સિદ્ધાંતમાં માને છે. આ સંપ્રદાયના અનુયાયીઓ જગતની ઉત્પત્તિ વિશેની માન્યતાઓ અને તેના સિદ્ધાંતોને સ્વીકારે

पन्ना १४८: पीराणा पंथ

मुख्य मुद्दे:

1) पीराणा में ५ कब्रें है; इमाम शाह, नूर शाह, सुराभाई, बावा मुहम्मद और बाकर अली की।
2) इमाम शाह ईरान से आए थे और बहुत से पाटीदारों का धर्म परिवर्तन कराया था।
3) धर्मांतरण बाद, वह "मोमना" और "मतीया" कणबी के तौर पर पहचाने जाने लगे।
4) उन्हें उतरते दर्जे के हिंदू और उतरती कक्षा के मुसलमान होने की पहचान मिली।
5) "अल्लाह" को सर्वोत्कृष्ट किरदार मानते है।
6) मुहम्मद मूसा को अल्लाह का पैगंबर होने का स्वीकार करते है।

118

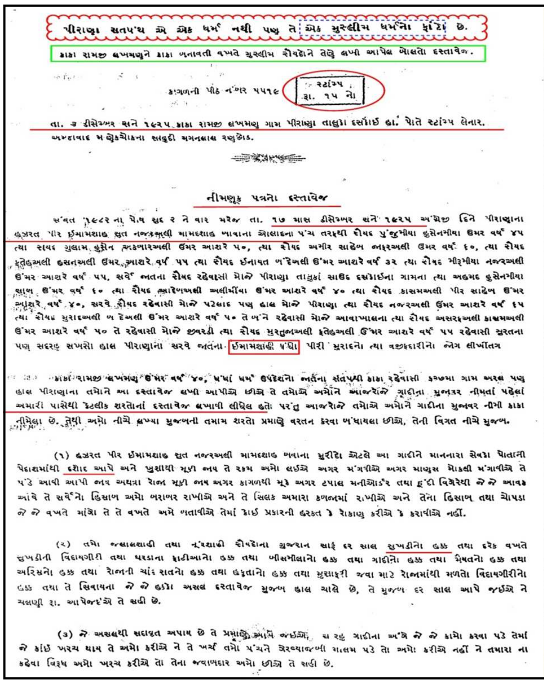


पन्ना १४९: पीराणा पंथ

...मुख्य मुद्दे

7) मुहम्मद पैगंबर को गुरु मानते है
8) कुरान को (जिसे सतपंथ लोग अथर्व वेद भी कहते है) दैवी ग्रंथ मानते है।

119

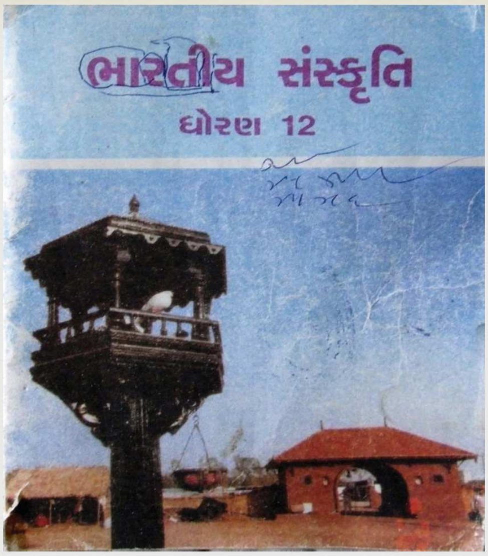


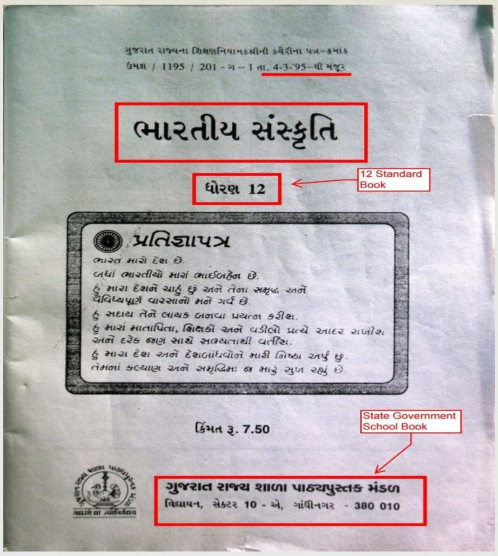
काका की नियुक्ति समय...
पीराणा के सैयदों और काका रामजी लक्ष्मण के बीच....
तारीक ०३-१२-१९२५ का करार

मुख्य मुद्दे:

1) इस करार की आरंभ में ही यह लिखा है कि "पीराणा सतपंथ यह एक धर्म नहीं पर वह एक मुस्लिम धाम का भाग है"
2) काका अनुयायियों के पास से "दसोंद" इकठ्ठा कर के सैय्यदों को सौंप देंगे।
3) वह दूसरी रकम भी इकठ्ठा कर के सैय्यदों को देंगे।

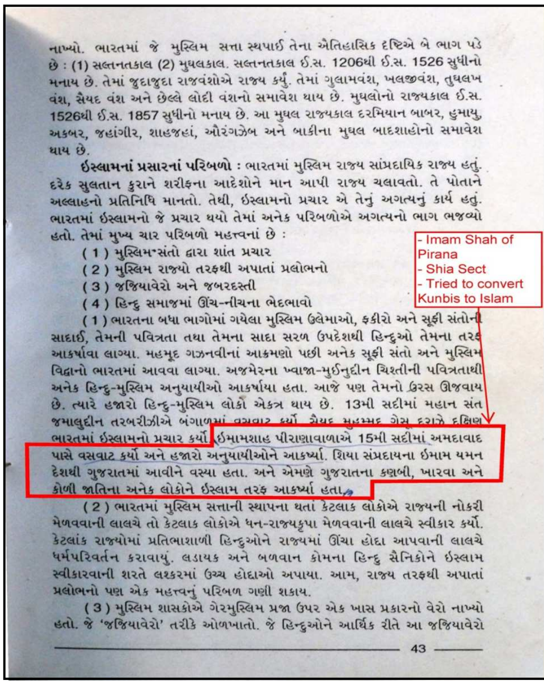
120





"भारतीय संस्कृति" वर्ग १२ का पाठ्य पुस्तक – गुजरात सरकार द्वारा वर्ष १९९५ में प्रकाशित किया गया था।

121


નાખ્યો. ભારતમાં જે મુસ્લિમ સત્તા સ્થપાઈ તેના ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ બે ભાગ પડે છે : (1) સલ્તનતકાલ (2) મુઘલકાલ. સલ્તનતકાલ ઈ.સ. 1206થી ઈ.સ. 1526 સુધીનો મનાય છે. તેમાં જુદાજુદા રાજવંશોએ રાજ્ય કર્યું. તેમાં ગુલામવંશ, ખલજીવંશ, તુઘલખ વંશ, સૈયદ વંશ અને છેલ્લે લોદી વંશનો સમાવેશ થાય છે. મુઘલોનો રાજ્યકાલ ઈ.સ. 1526થી ઈ.સ. 1857 સુધીનો મનાય છે. આ મુઘલ રાજ્યકાલ દરમિયાન બાબર, હુમાયુ, અકબર, જહાંગીર, શાહજહાં, ઔરંગઝેબ અને બાકીના મુઘલ બાદશાહોનો સમાવેશ થાય છે.

ઈસ્લામનાં પ્રસારનાં પરિબળો : ભારતમાં મુસ્લિમ રાજ્ય સાંપ્રદાયિક રાજ્ય હતું. દરેક સુલતાન કુરાને શરીફના આદેશોને માન આપી રાજ્ય ચલાવતો. તે પોતાને અલ્લાહનો પ્રતિનિધિ માનતો. તેથી, ઈસ્લામનો પ્રચાર એ તેનું અગત્યનું કાર્ય હતું. ભારતમાં ઈસ્લામનો જે પ્રચાર થયો તેમાં અનેક પરિબળોએ અગત્યનો ભાગ ભજવ્યો હતો. તેમાં મુખ્ય ચાર પરિબળો મહત્ત્વનાં છે :

(1) મુસ્લિમ સંતો દ્વારા શાંત પ્રચાર
(2) મુસ્લિમ રાજ્યો તરફથી અપાતાં પ્રલોભનો
(3) જજિયાવેરો અને જબરદસ્તી
(4) હિન્દુ સમાજમાં ઊંચ-નીચના ભેદભાવો

(1) ભારતના બધા ભાગોમાં ગયેલા મુસ્લિમ ઉલેમાઓ, ફકીરો અને સૂફી સંતોની સાદાઈ, તેમની પવિત્રતા તથા તેમના સાદા સરળ ઉપદેશથી હિન્દુઓ તેમના તરફ આકર્ષાવા લાગ્યા. મહમૂદ ગઝનવીનાં આક્રમણો પછી અનેક સૂફી સંતો અને મુસ્લિમ વિદ્વાનો ભારતમાં આવવા લાગ્યા. અજમેરના ખ્વાજા-મુઈનુદ્દીન ચિશ્તીની પવિત્રતાથી અનેક હિન્દુ-મુસ્લિમ અનુયાયીઓ આકર્ષાયા હતા. આજે પણ તેમનો ઉરસ ઊજવાય છે. ત્યારે હજારો હિન્દુ-મુસ્લિમ લોકો એકત્ર થાય છે. 13મી સદીમાં મહાન સંત જમાલુદ્દીન તરબરીઝીએ બંગાળમાં વસવાટ કર્યો. સૈયદ મુહમ્મદ ગેસૂ દરાઝે દક્ષિણ ભારતમાં ઈસ્લામનો પ્રચાર કર્યો. ઈમામશાહ પીરાણાવાળાએ 15મી સદીમાં અમદાવાદ પાસે વસવાટ કર્યો અને હજારો અનુયાયીઓને આકર્ષ્યા. શિયા સંપ્રદાયના ઈમામ યમન દેશથી ગુજરાતમાં આવીને વસ્યા હતા. અને એમણે ગુજરાતના કણબી, ખારવા અને કોળી જાતિના અનેક લોકોને ઈસ્લામ તરફ આકર્ષ્યા હતા.

(2) ભારતમાં મુસ્લિમ સત્તાની સ્થાપના થતાં કેટલાક લોકોએ રાજ્યની નોકરી મેળવવાની લાલચે તો કેટલાક લોકોએ ધન-રાજ્યકૃપા મેળવવાની લાલચે સ્વીકાર કર્યો. કેટલાંક રાજ્યોમાં પ્રતિભાશાળી હિન્દુઓને રાજ્યમાં ઊંચા હોદ્દા આપવાની લાલચે ધર્મપરિવર્તન કરાવાયું. લડાયક અને બળવાન કોમના હિન્દુ સૈનિકોને ઈસ્લામ સ્વીકારવાની શરતે લશ્કરમાં ઉચ્ચ હોદ્દાઓ અપાયા. આમ, રાજ્ય તરફથી અપાતાં પ્રલોભનો પણ એક મહત્ત્વનું પરિબળ ગણી શકાય.

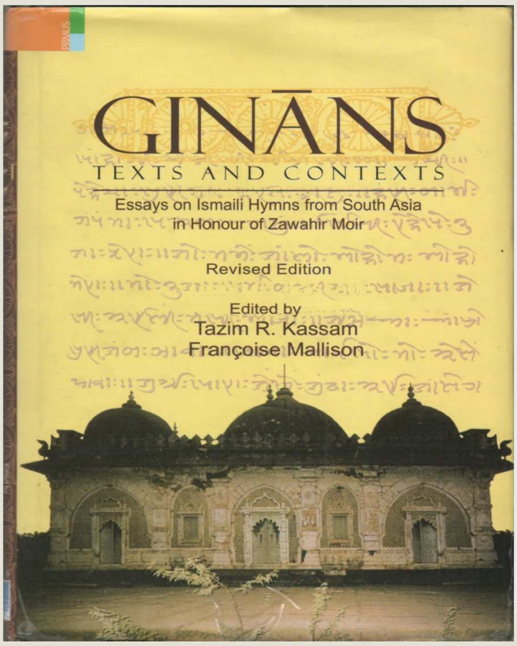
(3) મુસ્લિમ શાસકોએ ગેરમુસ્લિમ પ્રજા ઉપર એક ખાસ પ્રકારનો વેરો નાખ્યો હતો. જે 'જજિયાવેરો' તરીકે ઓળખાતો. જે હિન્દુઓને આર્થિક રીતે આ જજિયાવેરો

43

पन्ना ४३ – भारतीय संस्कृति का इतिहास

इमाम शाह पीराणा वालेने १५वी सदी में अहमदाबाद के पास बस कर "कणबी" लोगों को शिया मुस्लिम धर्म दिया।

122

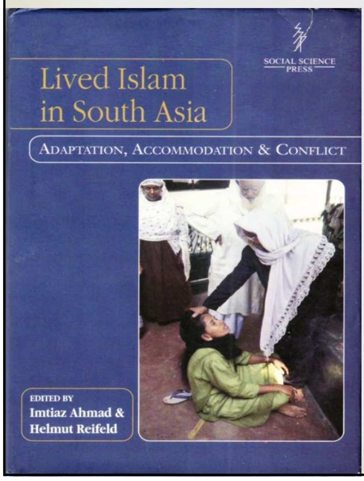


गीनानस टेक्स्टस और कोनटेक्स्टस
(Ginans; Texts and Contexts)

- विद्वानों का, गीनान पर लेखों का सुंदर संग्रह इस पुस्तक में है।
- सतपंथीयों द्वारा गाये जाते गीनानों पर संक्षिप्त जानकारी इस पुस्तक में है।

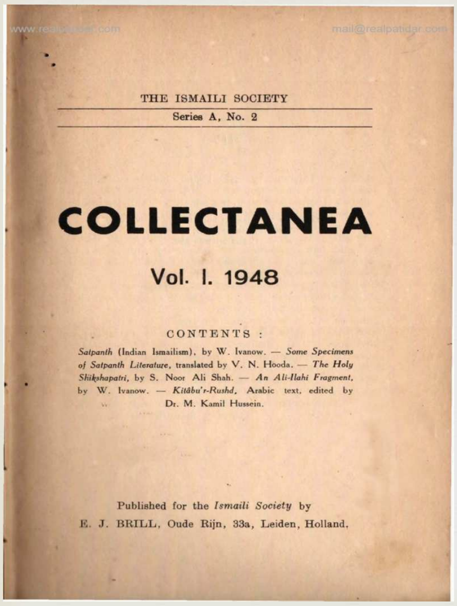
123

लीव्ड़ इस्लाम इन साउथ एशिया
भाग IV, चेप्टर 11



1) पन्ना २१४: सतपंथ यह एक सुनियोजित धर्मांतरण कराने की योजना है।
2) **पन्ना २२०: वर्ष १९७६ के एक कोर्ट केस में सतपंथीयों ने कोर्ट के सामने कहा के निष्कलंकी नारायण विष्णु का दसवां अवतार है। इमाम शाह का पुत्र मुहम्मद शाह को वह "आदि विष्णु" और माता को "आदि शक्ति" मानते है।**
3) पन्ना २२१: इमाम को विष्णु का १०वां अवतार और फातिमा को देवी शक्ति मानते है।
4) पन्ना २२५: सन १९९८ में एक कोर्ट केस में उत्तर देते हुए, करसन काका ने कोर्ट में कहा के पीराणा संस्था "बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट १९५०" अंतर्गत "केटेगरी E" में रजिस्टर्ड है। करसन काका ने कहा के इसका मतलब ऐसा होता है के ट्रस्ट बिनधर्मी है। (एक बिन हिंदू और बिन मुसलमान ट्रस्ट)
5) पन्ना २२६: "... पीराणा में पूजा के लिए ३-आयामी (3 dimensional) मूर्ति नहीं स्थापित की गई है। दीवारों पर बनाए चित्र केवल शोभा बढाने हेतु है."
6) पन्ना २२७: "... इस्माइली संबंध बनाए रख कर इमाम को हमेशा विष्णु का अवतार मानने में आता है और खोजा और पीराणा सतपंथ के साहित्यों में उसे नारायण और निष्कलंकी नारायण अवतार के रुप में माना जाता है।
7) पन्ना २२७: "ॐ चिन्ह को दोहरा अर्थ निकाल कर सतपंथी पुस्तकों में इस तरह से छापने में आया है के हिंदुओं के ॐ को दाहिने से बाएं पढे तो "अली" उर्दू पढ़ने में आए।
8) पन्ना २३०: पीराणा सतपंथी लोगों को उनके धर्म के बारें में पुछें के हिंदू या मुसलमान?, तो जवाब मिलेगा के दोनों। धर्म से मुसलमान और रीत रिवाजों से हिंदू।

124



THE ISMAILI SOCIETY
Series A, No. 2

COLLECTANEA

Vol. I. 1948

CONTENTS :
Satpanth (Indian Ismailism), by W. Ivanow. — Some Specimens of Satpanth Literature, translated by V. N. Hooda. — The Holy Shikshapatri, by S. Noor Ali Shah. — An Ali-Ilahi Fragment, by W. Ivanow. — Kitābu'r-Rushd, Arabic text, edited by Dr. M. Kamil Hussein.

Published for the Ismaili Society by
E. J. BRILL, Oude Rijn, 33a, Leiden, Holland.

कलेक्टेनिआ

ले. वाल्दिमीर इवानोव

Collectanea by Wladimir Ivanow



जन्म से रूसी, वाल्दिमीर इवानोव, सतपंथ विषय पर संशोधन करने वाले पहले आधुनिक जमाने के लेखक है।

<u>इस पुस्तक के मुख्य मुद्दे:</u>

1) सतपंथ को कलियुग का धर्म के तौर पर पेश करने का प्रयास है।
2) पहला इमाम, अली, को भगवान का 10वां अवतार के तौर पर पेश किया गया है।
3) कुरान को अंतिम वेद होने की घोषणा की और अन्य के वेदों और साहित्यों को रद हो जाने की घोषणा की।
4) पुस्तक के मुख्य विषय:
    1) इतिहास
    2) प्रोपगंडा
    3) धर्म सिद्धांत
    4) साहित्य
    5) गरबी गीनान (नवरात्रि के गरबा गीतों पर आधारित)
    6) पीर शम्स के चमत्कारों

125



पीराणा सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश

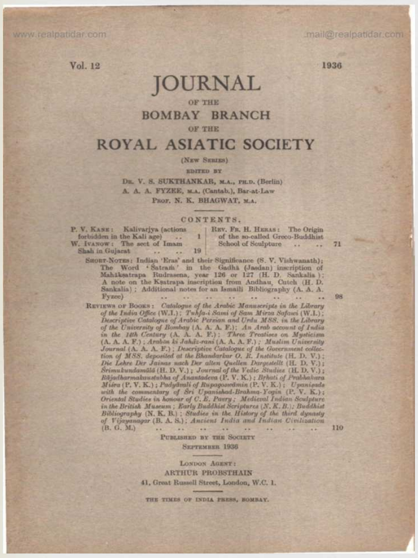


હિંદુ ધર્મને નામે ચાલતા, અર્ધદગ્ધ, કબ્રસ્તાની
પીરાણા-''સતપંથ'' ની પોલ;
અને
સત્યનો પ્રકાશ.
ભાગ ૧ લો.

લેખક અને પ્રકાશક:
પટેલ નારાયણજી રામજીભાઈ કોન્ટ્રાક્ટર
ઠે. વીરાણી. તા. નખત્રાણા (કચ્છ)

1) नारायणजी रामजी लींबाणी / कोंटराकटर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वर्ष १९२६ में पीराणा सतपंथ के छिपे भेदों और रहस्यों को बाहरी दुनिया के सामने लाया।
2) बहुत गहराई से संशोधन करने के बाद यह पुस्तक तैयार किया गया है। इस पुस्तक में, हिंदुओं को बेवकूफ बनाकर परोक्ष तौर पर इस्लामी तत्व घुसा कर उन्हें मुसलमान बनाने का षड्यंत्र दुनिया के सामने खुल्ला किया है।
3) सतपंथ हिंदू धर्म न होने के बावजूद, उसके अनुयायियों पर हिंदू धर्म होने का जबर्दस्ती थोपा जाता है।
4) बहुत सारे गीनान इस पुस्तक में छापे है। सतपंथीयों के लिए गीनान जानने का एक बड़ा साधन बन गया।
5) उनकी जाति को फिर से हिंदू धर्म में परिवर्तित करने की उनकी लड़ाई के बारे में जानकारी दी है।
6) वाल्दिमीर इवानोव सहित बहुत सारे महान विद्वान, अपने काम के दरम्यान, इस पुस्तक का संदर्भ लेते रहते है।
7) सतपंथ की सच्ची जानकारी पाने के लिए इस पुस्तक को पढ़ना जरूरी है।

126



www.realpatidar.com mail@realpatidar.com

Vol. 12 1936

JOURNAL
OF THE
BOMBAY BRANCH
OF THE
ROYAL ASIATIC SOCIETY
(New Series)
EDITED BY
Dr. V. S. SUKTHANKAR, M.A., PH.D. (Berlin)
A. A. A. FYZEE, M.A. (Cantab.), Bar-at-Law
Prof. N. K. BHAGWAT, M.A.

CONTENTS.

P. V. Kane: Kalivarjya (actions forbidden in the Kali age) .. 1
W. Ivanow: The sect of Imam Shah in Gujarat 19
Rev. Fr. H. Heras: The Origin of the so-called Greco-Buddhist School of Sculpture 71
Short-Notes: Indian 'Eras' and their Significance (S. V. Vishwanath); The Word 'Śatraṁ' in the Gadhā (Jasdan) inscription of Mahākṣatrapa Rudrasena, year 126 or 127 (H. D. Sankalia); A note on the Kṣatrapa inscription from Andhau, Cutch (H. D. Sankalia); Additional notes for an Ismaili Bibliography (A. A. A. Fyzee) 98
Reviews of Books: *Catalogue of the Arabic Manuscripts in the Library of the India Office* (W.I.); *Tuhfa-i Sami of Sam Mirza Safawi* (W.I.); *Descriptive Catalogue of Arabic Persian and Urdu MSS. in the Library of the University of Bombay* (A. A. A. F.); *An Arab account of India in the 14th Century* (A. A. A. F.); *Three Treatises on Mysticism* (A. A. A. F.); *Arabōn ki Jahāz-rani* (A. A. A. F.); *Muslim University Journal* (A. A. A. F.); *Descriptive Catalogue of the Government collection of MSS. deposited at the Bhandarkar O. R. Institute* (H. D. V.); *Die Lehre Der Jainas nach Der alten Quellen Dargestellt* (H. D. V.); *Śrīmukundamālā* (H. D. V.); *Journal of the Vedic Studies* (H. D. V.); *Rājadharmakaustubha of Anantadeva* (P. V. K.); *Bṛhati of Prabhakara Miśra* (P. V. K.); *Padyāvali of Rupagoswāmin* (P. V. K.); *Upaniṣads with the commentary of Śri Upanishad-Brahma-Yogin* (P. V. K.); *Oriental Studies in honour of C. E. Pavry*; *Medieval Indian Sculpture in the British Museum*; *Early Buddhist Scriptures* (N. K. B.); *Buddhist Bibliography* (N. K. B.); *Studies in the History of the third dynasty of Vijayanagar* (B. A. S.); *Ancient India and Indian Civilization* (B. G. M.) 110

Published by the Society
September 1936

London Agent:
ARTHUR PROBSTHAIN
41, Great Russell Street, London, W.C. 1.

THE TIMES OF INDIA PRESS, BOMBAY.

"गुजरात में इमाम शाह का पंथ"

JBBRAS - Vol 12 -1936

1) नारायणजी रामजी द्वारा पीराणा सतपंथ की पोल पुस्तक प्रकाशित करने के 10 साल बाद, वाल्दिमीर इवानोव ने इमाम शाहीओं पर यह सुंदर लेख लिखा।
2) इस पुस्तक में इमामशाहीओं का इमाम शाह से ले कर अंतिम उत्तराधिकारी तक के वंश की नोंध दी गई है।
3) खोजा और इमामशाहीओं का (सतपंथ) धर्म सिद्धांत एक होने के बावजूद, इमामशाही लोग किस संजोगो में और किस कारण मुख्य सतपंथ (खोजा) से अलग हुए।
4) अन्य इतिहासकारों के, सतपंथ के इतिहास पर लिखें लेखों की नोंध भी है।

127

मुंबई हाई कोर्ट का वर्ष १८६६ का विख्यात खोजा केस

- वर्ष १८६६ का प्रख्यात मुंबई हाई कोर्ट के खोजा केस में सतपंथ एक मुसलमानी पंथ है, ऐसा निर्णय हुआ।
- इस केस में दो मुद्दे ऐसे थे जिन पर केस का निर्णय निर्धारित था;
  1. सर्व सामान्य तौर पर धर्म छिपाने के लिए "ताकिया" का पालन।
  2. नए अनुयायियों का धर्म परिवर्तन करवाने की रीत। पहले सौम्य रीत से उनके वर्तमान धर्म के लिए शंका उत्पन्न करना और बाद में उपाय के तौर पर सतपंथ पेश करना।
- आखिर में, "दस अवतार गीनान" के आधार पर कोर्ट ने निर्णय लिया के खोजा लोग शिया मुसलमान है।

128

सरकारी गेझेटियर

- भारतीय गेझेटियर (भाग १, १९७३)
- भारतीय गेझेटियर, कच्छ १९८० – सतपंथी मुमना
- मुंबई प्रेसीडेन्सी गेझेटियर (खंड ४, पन्ने ३७-४१)
- मुंबई प्रेसीडेन्सी गेझेटियर (खंड ९, भाग २, पन्ने ३७-४१)
- अहमदाबाद जिल्ला गेझेटियर, भारत सरकार, पन्ने २१०-११, १८८-८९, ९२०-२१
- अहमदाबाद जिल्ला गेझेटियर, भारत सरकार, पन्ने ८, ६१,६६

129

अन्य संदर्भ सामग्री

1. कच्छना कड़वा पटीदारोंनो इतिहास
2. पंचम वेद (भाग १ से ७)
3. खोजा वृतांत (१९८२)
4. खोजा कोमनो इतिहास (१९०८)
5. मोमीन कोमनो इतिहास (१९३६)
6. त्वारीखी पीर - I (1914) & II (1935)
7. दस अवतार – सैय्यद अहमद अली खाकी
8. इस्माइली विरला (1932)
9. धी इस्माइलिस: देयर हिस्टरी एंड डोकटरीन (1990)
10. गुप्त पंथ को सोजरा
11. इस्माइलिसमनो स्थापक
12. हरिवंश – आठिया सतपंथी
13. दुआ ज्ञान - आठिया सतपंथी

130

2.2 क.क.पा. जाति और सतपंथ

कच्छ कड़वा पाटीदार (क.क.पा.) जाति...
सतपंथ धर्म पालने वाले लोगों का सबसे बड़ा समुदाय का...
सतपंथ धर्म विषय पर क्या कहना है?
आओ देखें

131

क.क.पा. जाति और सतपंथ ...

सतपंथ धर्म के, ८५% से भी ज्यादा अनयायियों की जाति का, अपने धर्म के बारे में क्या कहना है और उनके दस्तावेज़ में कैसी हकीकत छिपी है, वह देखेंगे।

- इमाम शाह ने बहुत सारे हिंदुओं का धर्मांतरण कराया था। उनमें मुख्य कच्छ की कड़वा पाटीदार जाति थी।
- पीराणा सतपंथ के सारे अनुयायियों की तुलना में एक समय पर ८५% से भी ज्यादा लोग इस जाति के थे।
- दूसरी कोई भी जाति ने पीराणा सतपंथ का, इतनी बड़ी संख्या में, अंगीकार नहीं किया है।

132

... क.क.पा. जाति और सतपंथ ...

- आज भी पीराणा सतपंथ को मानने वालों में एक बड़ा बहुमत क.क.पा. जाति का है।
- पीराणा दरगाह की देख रेख करने के लिए जो ट्रस्ट बनाने में आया है, उस ट्रस्ट में इस जाति के ट्रस्टी मुख्य है।
- इस ट्रस्ट में १ चेरमेन और १० ट्रस्टी है। जिन में ७ ट्रस्टी क.क.पा. जाति के है और ३ सैय्यद है। गादिपति "काका" अपने पद के कारण चेरमेन होते है। काका भी क.क.पा. जाति के होते है। इस तरह क.क.पा. जाति को ८:३ का बहुमत प्राप्त है।
- ट्रस्ट बोर्ड छोड़ कर, लगभग बाकी के सारे संचालक भी क.क.पा. जाति के ही होते है।

133

... क.क.पा. जाति और सतपंथ ...

- क.क.पा. जाति की मुख्य और शक्ति शाली केंद्र संस्था, श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज (अ.भा.क.क.पा.) (www.abkkpsamaj.org) के दस्तावेजों का अध्ययन किए बिना सतपंथ विषय पर किया कोई अभ्यास अधूरा है।
- सतपंथ और पीराणा में होती गतिविधियों के बारे में अंदर की छिपी और सच्ची जानकारी पाने के लिए, अ.भा.क.क.पा. समाज और उसके लोग, सबसे बड़े श्रोत है।
- अगर किसी को सतपंथ / पीराणा धर्म प्रचार और पालन की रीत समझनी हो, और उसका सच्चा मर्म समझना हो, तो अ.भा.क.क.पा. समाज के लोग और उसके दस्तावेजों का अध्ययन करना अनिवार्य है।

134

... क.क.पा. जाति और सतपंथ ...

- जाति अधिवेशन, सभा, जनरल सभा, मीटिंग, समिति बैठक, समाज के नेताओं के भाषण, समाचार और मासिक पत्रिकाएँ और उनके जैसे असंख्य दस्तावेजों में पीराणा सतपंथ पर सच्ची जानकारी मिलेगी।
- समाज के नेताओं और समाज के लोगों की भावनाओं पर से भी बहुत जानकारी मिल सकती है।
- इन दस्तावेजों से मिली जानकारी की पुष्टि समाज के वरिष्ठ लोगों को मिलकर करने पर, एक बात का साफ तौर पर पता चलता है की, लोगों को, पीराणा सतपंथ धर्म को, हिंद धर्म है, यह कह कर उन्हें उस धर्म को पालते कर देकर, उनके साथ छलावा किया गया है।
- जब लोगों को हकीकत का पता चला के जो धर्म वह पालते है, वह धर्म कोई हिंदू धर्म नहीं है, तब वह पीराणा सतपंथ से विमुख होने लगे और फिर से सनातन हिंदू धर्म का अंगीकार करने लगे।

135

... क.क.पा. जाति और सतपंथ ...

- सतपंथ विषय पर, जानकारी, लोगों की भावनाए, उनके अनुभव, उनके साथ हुई घटनाएं और अन्य सच्चाईयों को जान ने के लिए नीचे बताए श्रोत मुख्य है;

नं	तारिक	विवरण
1	01-Aug-1918	क.क.पा. जाति सामान्य सभा, दाना बंदर, मुंबई
2	28-Mar-1920	क.क.पा. जाति सामान्य सभा, विराणी बड़ी
3	08-Aug-1920	१ला क.क.पा. जाति अधिवेशन, कराची
4	07-Oct-1922	२रा क.क.पा. जाति अधिवेशन, कराची
5	18-Apr-1924	३रा क.क.पा. जाति अधिवेशन, घटकोपर, मुंबई
6	1924	एक प्रास्थाविक निबंध सतपंथ विषय पर हुए कुछ कोर्ट केसों का एक संस्करण

Contd... 136

… क.क.पा. जाति और सतपंथ …

નં.	તારીક	વિગત
7	1924 & 1925	पाटीदार उदय – मासिक समाचार पत्रिका
8	1925 के आस पास	ओशाणीनुं ओशड अथवा भक्तनी भड़वाई
9	1925 के आस पास	सतपंथी सविचारोनो सपाटो
10	14-Mar-1926	क.क.पा. जाति सुधारक युवक मंडल रिपोर्ट
11	1926	कड़वा पाटीदार परिषद – ११वा महोत्सव
12	14-May-1932	क.क.पा. जाति सुधारक युवक मंडल रिपोर्ट
13	1944-45	क.क.पा. सनातन समाज – वार्षिक अहेवाल
14	02-Apr-1944	उमिया माताजी मंदिर, वांढाय – प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव रिपोर्ट

Contd…
137

… क.क.पा. जाति और सतपंथ

નં.	તારીક	વિગત
15	10-May-1960	१ला - अ.भा.क.क.पा. समाज अधिवेशन, नखत्राणा, कच्छ नखत्राणा स्थित, अ.भा.क.क.पा. समाज की रचना और विद्यार्थियों के लिए बोर्डिंग के उद्घाटन रिपोर्ट
16	23-May-1977	२रा - अ.भा.क.क.पा. समाज अधिवेशन, नखत्राणा, कच्छ
17	1983	केशरा परमेशवरा (मुखी) सांखला का संक्षिप्त जीवन और कार्य
18	19-May-1985	३रा - अ.भा.क.क.पा. समाज अधिवेशन, नखत्राणा, कच्छ
19	30-Apr-1993	४था - अ.भा.क.क.पा. समाज अधिवेशन, नखत्राणा, कच्छ
20	12-May-2010	५वा - अ.भा.क.क.पा. समाज अधिवेशन, नखत्राणा, कच्छ
21	विविध वर्षो	कच्छ और कच्छ बाहर के कड़वा पाटीदार समाजों में समय समय पर प्रकाशित होते सभाओं के रिपोर्ट, समाचार पत्र, मेगेझिन इत्यादि

138

3.1 ताकिया

इस्लाम का एक खतरनाक और छिपा, असर कारक हथियार

139

महत्व के प्रश्न

इस समय पर स्वाभाविक है के सभी के मन में कुछ सवाल आते होंगे, जैसे की;

1) हिंदुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करके, उनकी धार्मिक आस्था का दुरुपयोग, सतपंथ को बढ़ाने के लिए क्यों किया गया?

2) ऐसा कौन सा कारण है के केवल हिंदू ही सतपंथ के अनुयायी है, कोई मुसलमान क्यों नहीं? (मुसलमान इमाम शाह को मानते है, पर सतपंथ धर्म नहीं पालते)

3) सतपंथ के धर्म प्रचारक, किस प्रकार से बड़ी संख्या में हिंदुओं को आकर्षित करके उनका धर्म परिवर्तित करने में सफल रहे?

उत्तर है: **ताकिया**

140

ताकिया यानी क्या?...

- ताकिया यानी इस्लाम के हित में सामने वाले को किसी भी प्रकार से "छलावा"।
- ताकिया का मतलब लोगों को "छल कर" इस्लाम के शरण में लाना। इसके लिए कोई भी रीत अपना सकते है, जैसी कि;
  - जूठ बोलना
  - तोड़ मरोड़ कर विकृत निवेदन देना
  - छिपाना
  - धोखा देना
  - विषय को बदलना
  - झूठी दोस्ती के दावे करना, इत्यादि
- ७वी सदी से मुसलमान लोग ताकिया का प्रयोग अपने "दुश्मन" को भ्रमित कर, बौखला कर, विभाजित कर उन पर जीत हासिल कर के इस्लाम के शरण में लाने के लिए इस्तेमाल करते आ रहे है।
- नैतिकता और मूल्यों के साथ, झूठ अपनाने का कोई संबंध नहीं है। यह केवल इस्लाम की वृद्धि के लिए और ऐसा करते समय अपना बचाव के लिए है।

141

... ताकिया यानी क्या?

- कुरान ताकिया की मंजूरी देता है। एक मुसलमान को दूसरे काफर (गैर-मुसलमान) के सामने ताकिया का प्रयोग करने की अनुमति कुरान देता है।
- एक काफर को छलने की अनुमति, मुख्य रूप से, कुरान की आयात ३:२८ देती है।

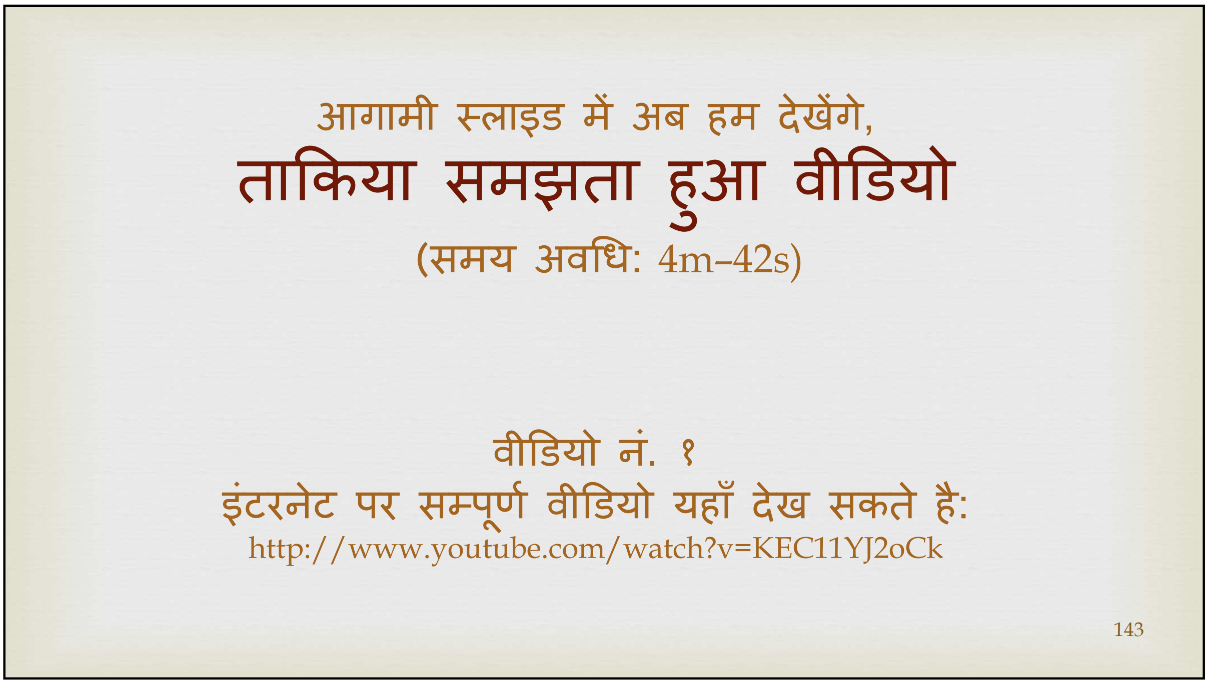
  "किसी मुसलमान, अन्य मुसलमान को छोड़कर काफर (गैर-मुसलमान) के साथ दोस्ती और सहयोग न करें। अगर करता है तो उसका अल्लाह के साथ कोई संबंध नहीं रहेगा – केवल काफर से बचने के लिए दोस्ती रखने की अनुमति है।"

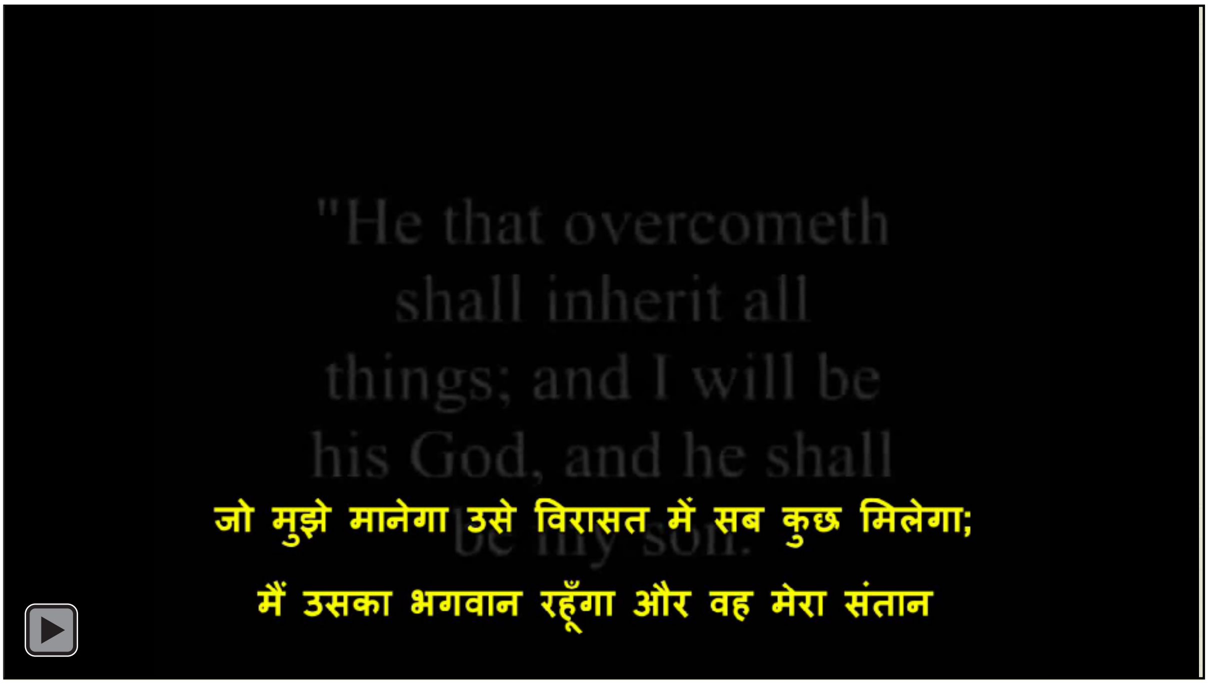
- मुहम्मद बिन जरीर अत-टाबरी (d. 923), कुरान के बारे में "अधिकारित्व और सन्मान जनक" टिप्पणी करते, आयात ३:२८ को इस प्रकार से समझते है;

  "अगर तुम (मुसलमान) कोई गैर-मुसलमान के अधिकार क्षेत्र के नीचे हो, और अपना हित संभालना कठिन हो, क्योंकि किसीका डर हो, तब तुम अपनी जबान से उनके साथ वफादार रहना। पर अपने दिल में उनके लिए बैर रखना... ध्यान रखना, अल्लाह ने मुसलमानों को गैर-मुसलमान के साथ दोस्ती और नजदीकी संबंध रखने पर पाबंदी रखी है। केवल, जब गैर-मुसलमान तुम से ज्यादा शक्तिशाली हो तो ही उन संजोग में तुम्हें छुट देने में आई है। अगर उस प्रकार की परिस्थिति हो, तो अपने धर्म को बचाकर भले उसके साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखें।

- ताकिया का, केवल स्व-बचाव के लिए नहीं, पर "सक्रिय तौर पर छलने" के लिए उपयोग किया जाता है।

142

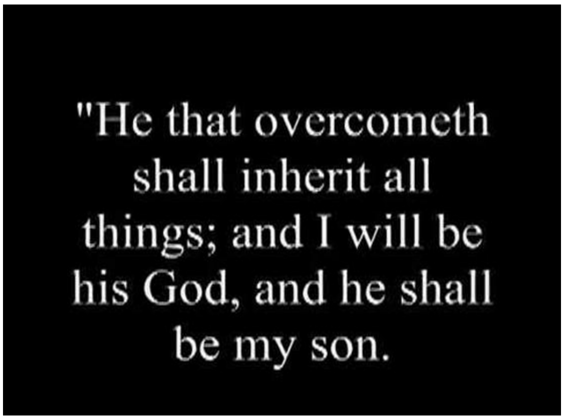

आगामी स्लाइड में अब हम देखेंगे,
ताकिया समझता हुआ वीडियो
(समय अवधि: 4m-42s)
वीडियो नं. १
इंटरनेट पर सम्पूर्ण वीडियो यहाँ देख सकते है:
http://www.youtube.com/watch?v=KEC11YJ2oCk
143


"He that overcometh
shall inherit all
things; and I will be
his God, and he shall
be my son.
जो मुझे मानेगा उसे विरासत में सब कुछ मिलेगा;
मैं उसका भगवान रहूँगा और वह मेरा संतान

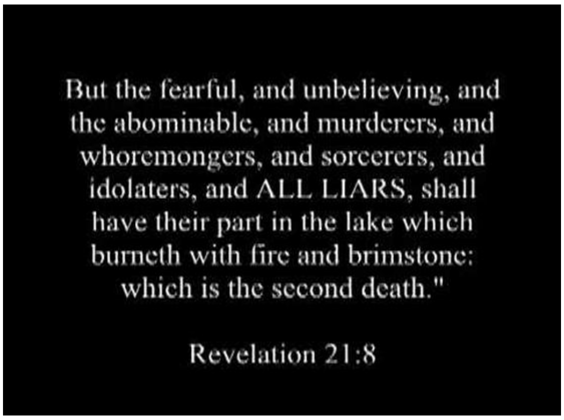
विडियो नं: १

ताकिया

इस्लाम के फैलावे के लिए झूठ बोलना



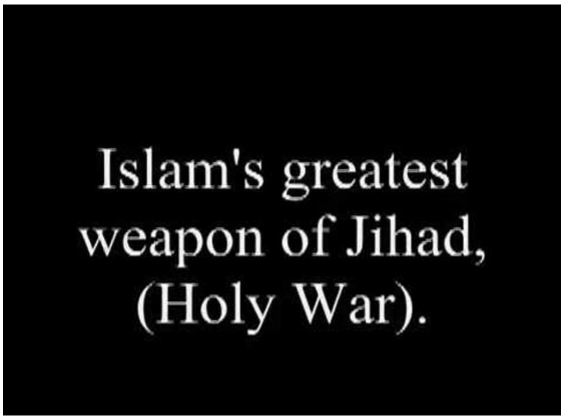
1. जो मुझे मानेगा उसे विरासत में सब कुछ मिलेगा; मैं उसका भगवान रहूँगा और वह मेरा संतान



2. पर डरपोक, काफर, गंदे, खूनी, रंडीबाज, जादूगर, मूर्ति पूजक और सभी झूठे लोगों को आग के तालाब में जगह मिलेगी - जो उनकी दूसरी मौत होगी। कुराने शरीफ आयात २१:८



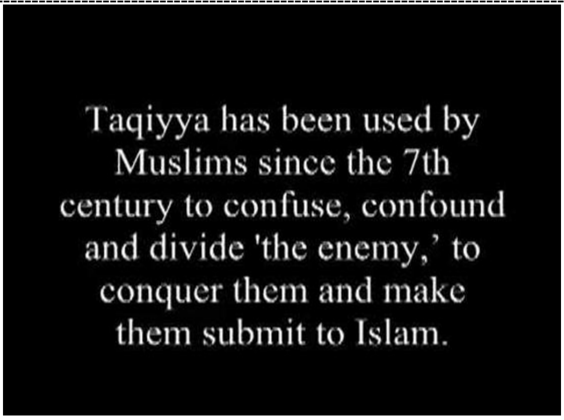
3. ताकिया



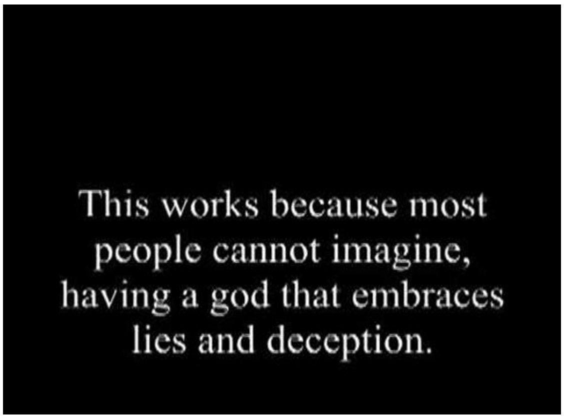
4. जिहाद (धार्मिक लड़ाई) लड़ने के लिए इस्लाम का सशक्त और मुख्य हथियार।



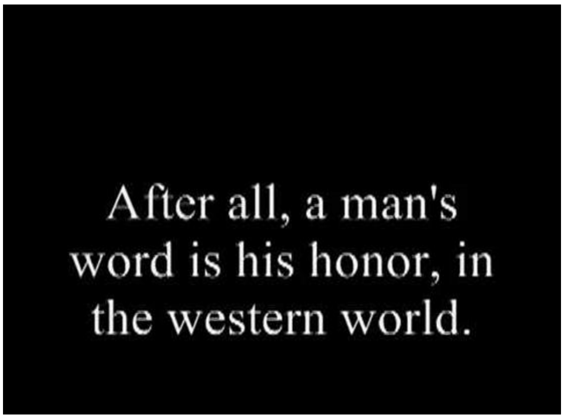
5. ताकिया शब्द का अर्थ छिपाना, एहेतियात, सुरखा।



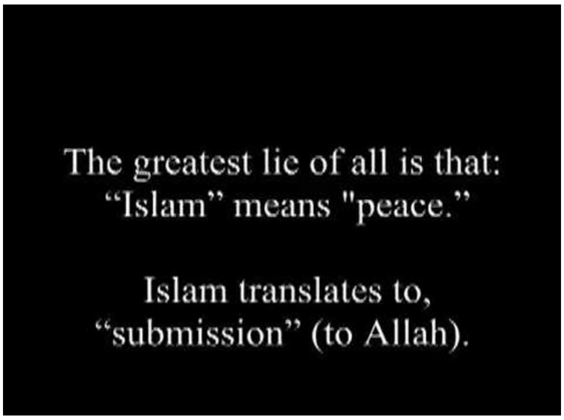
6. मुस्लिम धर्मी लोग ताकिया का उपयोग ७वी सदी से दुश्मन को भ्रमित करने, उलझाने और उनको विभाजित करने और दुश्मन को इस्लाम के शरण में लाने के लिए ताकिया का प्रयोग करते है।



7. यह युक्ति काम कर जाती है, क्यों के भगवान गलत करने और छलने के कहे यह लोगों की कल्पना के बाहर है।

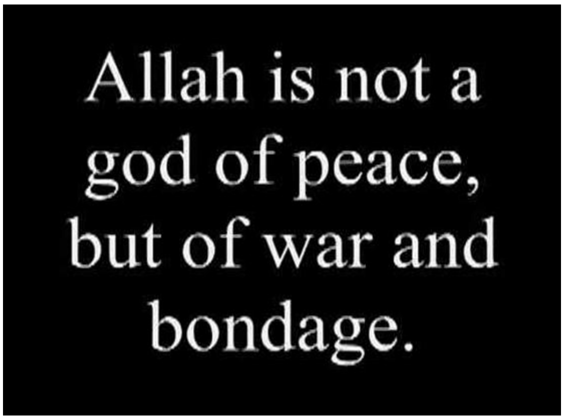


8. कुछ भी हो आखिर इनसान की जुबान की कीमत हॉट है।

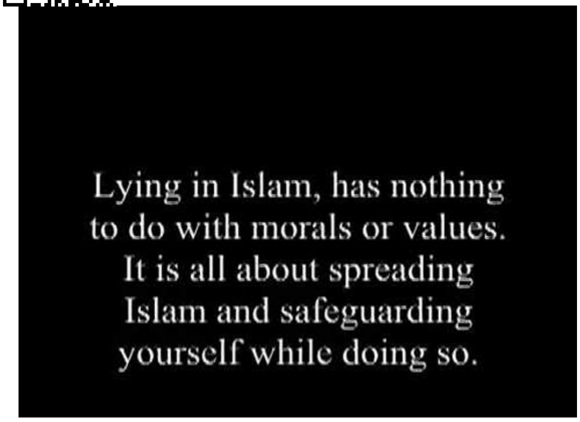


9. सबसे बड़ा झूठ वह है के "इस्लाम" यानी "शांति"।

इस्लाम शब्द का अर्थ यानी "समर्पण"

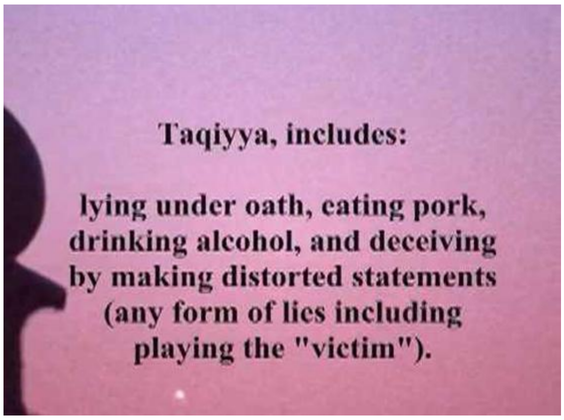


10. अल्लाह शांति के देव नहीं, पर लड़ाई और गुलामी के देव है।

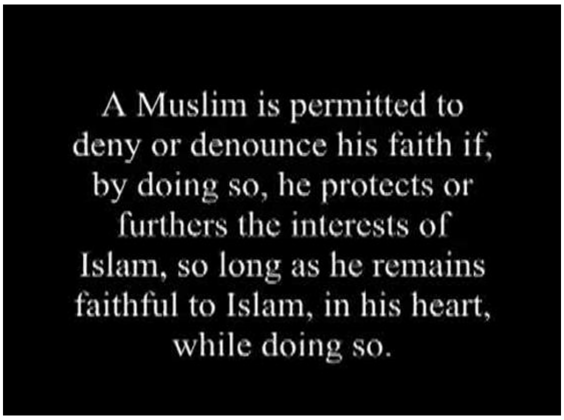


11. इस्लाम में झूठ का "नैतिकता और मानवी मूल्यों" के साथ कोई संबंध नहीं है।

झूठ इस्लाम के प्रचार के लिए और ऐसा करते समय व्यक्ति के स्व-बचाव के लिए है। इतना ही है।



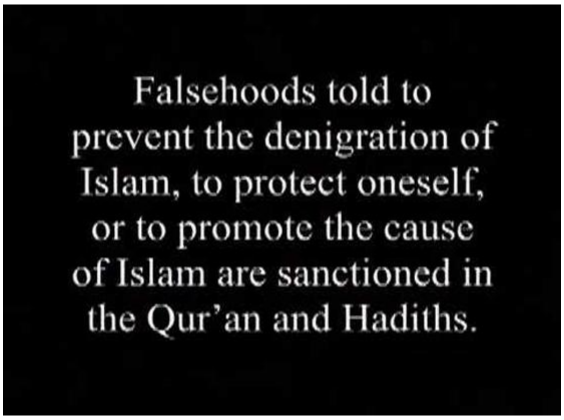
12. ताकिया में शामिल है, सोगंद लेकर झूठ बोलना, सूअर का मास खाना, शराब पीना और लालच भरी और किसी भी तरह की बातें कर, छलवा करना।



13. एक मुस्लिम, इस्लाम की रखा के लिए, खुद इस्लाम को धिक्कारत है और उसमें उसे विश्वास नहीं ऐसा घोषित करने की अनुमति है। अगर वह हृदय से इस्लाम के साथ वफादार हो तो।



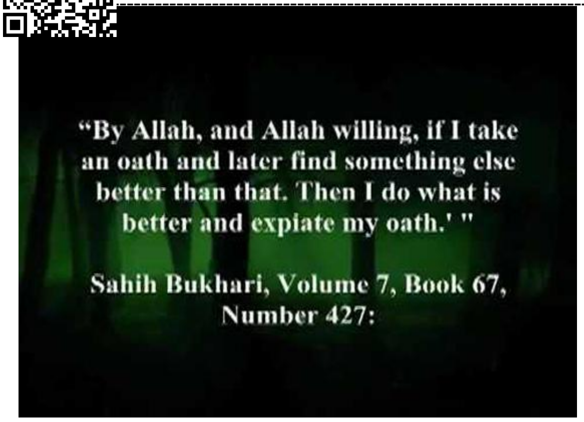
14.



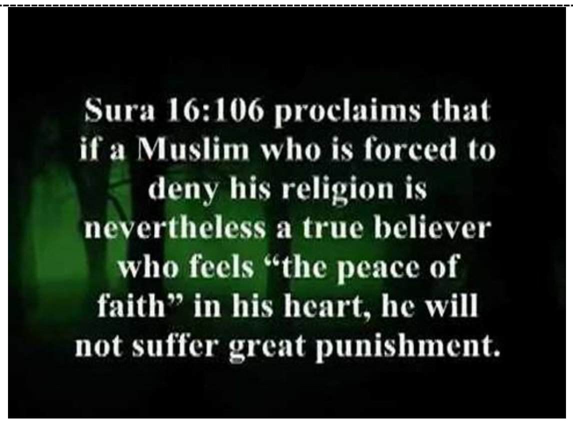
15. इस्लाम में धर्म के हित के लिए और धर्म को बदनामी से बचाने के लिए और धर्म के फैलावे के लिए झूठी बातें करने के लिए, कुरान और हदीस में अनुमति देने में आई है।



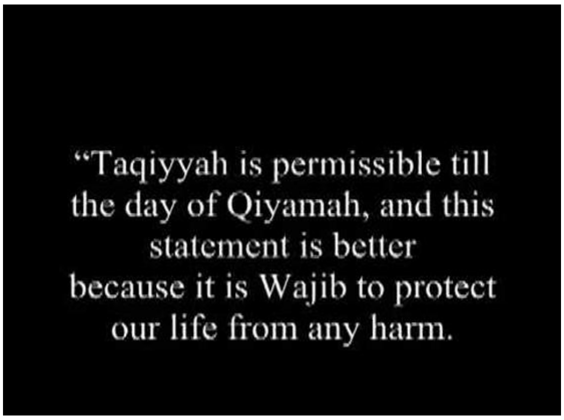
16. कुरान की आयन ३:२८ कहती है के, अल्लाह का डर हो तो, मुसलमानों को गैर मुसलमानों के साथ मित्रता नही दिखानी। केवल गैर मुसमानों से डर हो तो, अपने स्वबचाव के मैये मित्रता का नाटक करने की अनुमति है।



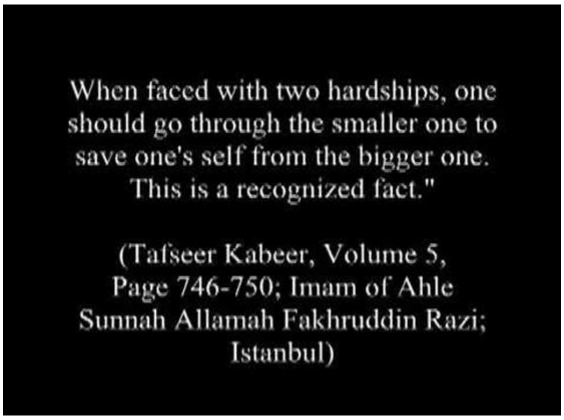
17. अल्लाह और आलाह की इच्छा के अनुससर, अगर किसी मुद्दे पर मैं ने शपथ ली हो और उसके बाद जानने मिले के इससे मुक़ाबले कोई अन्य बात ज्यादा अच्छी है, तो जो ज्यादा अच्छी हो वह, शपथ तोड़ कर भी, वह करने की अनुमति है।
शाही बुखारी, भाग ७, ग्रंथ ६७, अंक ४२७



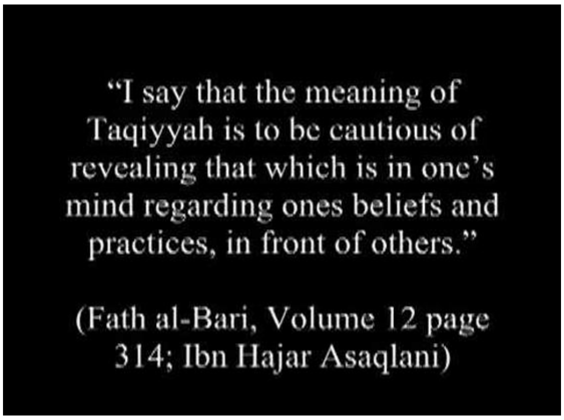
18. कुरान की आयात १६:१०६ अनुसार आदेश करने में आया है के, अगर मुसलमान कोई बाहरी दबाव के वशमें इस्लाम को त्यागने की घोषणा कर, परंतु हृदय से इस्लाम में ही विश्वास रखे, तो ऐसी व्यक्ति को अल्लाह बड़ी सज़ा से मुक्त करेंगे।



19. ताकिया की आजमाइश करने की अनुमति कयामत के दिन तक दी है। और यह वाक्य असरदार और वाजिब है, क्यों के, उसका उपयोग अपनी जिंदगी को खतरे से बचाने के लिए है।



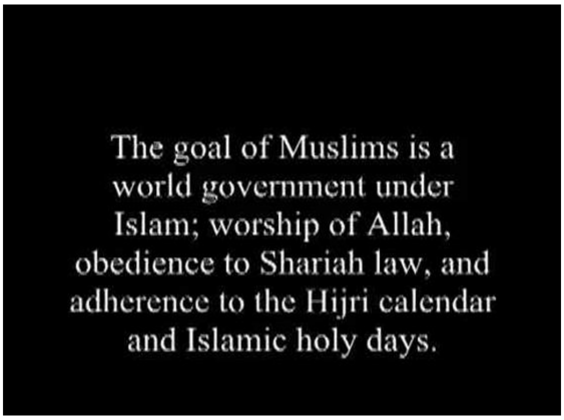
20. जब अपने सामने दो मुसीबत दिखे, तब हमें, छोटी मुसीबत पसंद कर, बड़ी मुसीबत में से खुद को बचा लेना। यह स्वीकृत हकीकत है।
(तफ़सीर काबित - भाग ५, पन्ना ७४६-७५०; अहाले सून्नाह अल्लामाह फकरूदिन राझी, इस्ताम्बुल के इमाम)



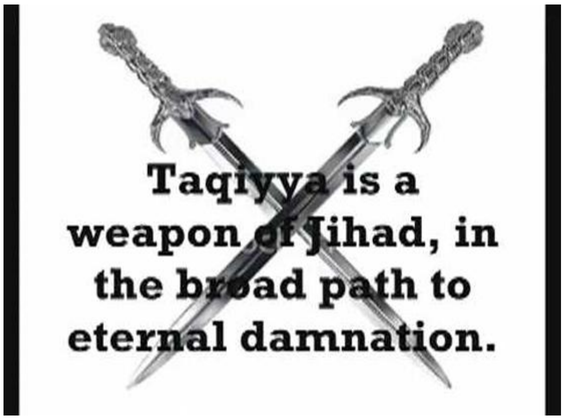
21. ताकिया का अर्थ यह है के, अपने मन की बात, अपनी श्रद्धा और आचरण दूसरों के सामने प्रस्तुत करने से पहले बहुत सावधानी पूर्वक वर्तन करना।
(फ़ताह अल-बारी, भाग १२ पन्ना ३१४; बिन हाजर अशक्लानी)



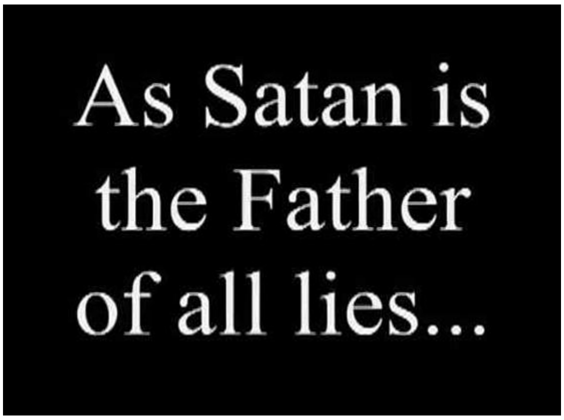
22. सूरा ९:६ - अल्लाह और पैगंबर ने नास्तिकों के साथ के व्यवहार में अपनी फरज / ज़िम्मेदारीयों को तोड़ दिया है।



23. मुसलमानों का लक्ष्य सारी दुनिया में इसमान का फैलावा कर लोगों को अल्लाह के बंदे बना कर शाशन करना है।



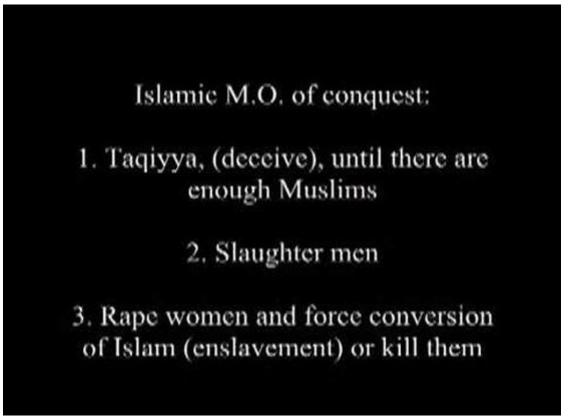
24. अंतिम लड़ाई तक ताकिया, यह जिहाद का हथियार है।



25. क्यों के शैतान तमाम झूठ के जन्म दाता है...



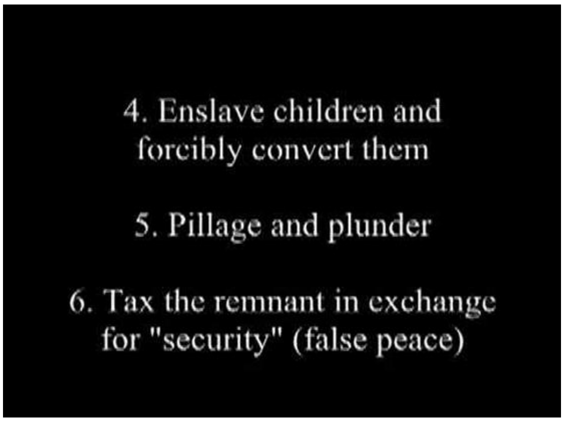
26.



27. १. ताकिया, (छलना) जब तक मुसलमान बढ़ ना जाए

२. लोगों का कत्लेआम कर दो

३. महिलाओं पर बलात्कार कर उन्हें इस्लाम के गुलाम बना दो अथवा मार दो



28. ४. बच्चों को गुलाम बना कर उन्हे जबर्दस्ती मुसलमान बना दो

५. चोरी करो, छिन लो

६. गैर मुसलमानों पर "सुरक्षा" और "शांति" के नाम पर कर लादो



29. लोगों को जबर्दस्ती से, छल कर, डरा धमका कर, धर्म परिवर्तित करते भगवान को कोई कैसे पूज सकता है? यह कैसा भगवान?



30.



31.



32.



33.



34.



35.



36.



37.



38.



39.



40.



41.



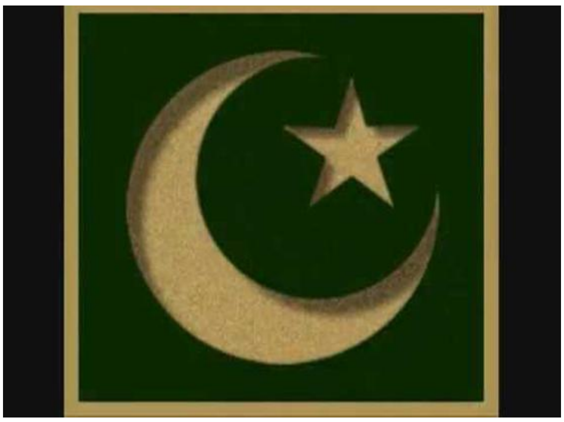
42.



43.



44.



45.

आगामी स्लाइड में अब हम देखेंगे,

छलावा समझता वीडियो

(समय अवधि: 1m-22s)

वीडियो नं. २

इंटरनेट पर सम्पूर्ण वीडियो यहाँ देख सकते है:

http://www.youtube.com/watch?v=dbIrWj6gDDk

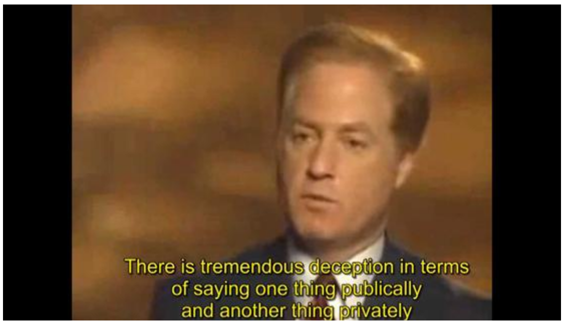
145



विडियो नं: २

इस्लामी छलावा

यानी ताकिया



1. बहुत छलावा है। जनता समक्ष एक बात रखना आर बंद दरवाजों के पूछे व्यक्तिगत तौर पर दूसरी बात करना



2. यासर अराफ़ात, इस दोहरी निटीमें माहिर थे...



3. ... जनता के सामने आतंकवाद का विरोध करना और अहिंसा की बातें करना



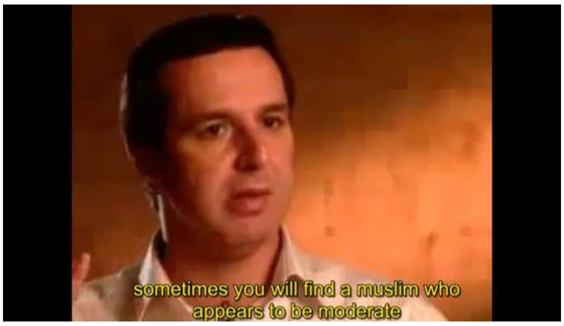
4. मैं आतनवाद का सपूर्ण तौर पर निंदा करता हूँ।



5. और बाद में चोरी छिपे पिछले दरवाजे आतंकवाद को समर्थन देना



6. जिहाद... जिहाद... जिहाद... जिहाद



7. कभी आप देखोगे के एक मुसलमान जो उदार लगता हो...



8. हमने पहले भी, सितंबर २०११ के बाद, कहा कई के निर्दोष लोगों से भरा प्लेन का



9. मकानों के साथ टकराना... वह ठीक नहीं है।



10. पर उसके कर्मों को देखते... यकीन जो जाएगा के वह उतना उदार नहीं है



11. हम यहाँ इकट्ठा हुए है बातें करने... १९ शानदार व्यक्तियों के बारे में



12. जो लोग, दो बरस पहले, आज, इस दुनिया को दो गुट में विभाजित कर दिया...
इस्लाम पंथी गुट और गैर-इस्लाम पंथी (काफर) गुट



13. जिन लोगों ने दुनिया भर में जिहाद को जीवंत कर दिया है



14. शानदार १९... वह प्रसंग... जिसमे अपहरण करता न्यू यॉर्क पर हुए हमले की खुशी मनाते थे



15. शानदार १९... वह प्रसंग... जिसमे अपहरण करता न्यू यॉर्क पर हुए हमले की खुशी मनाते थे



16. छलावा इतना छिपा और असरकराक है... के मुझे डर है, हम यह लड़ाई हार रहें है

छलावा इतना छिपा
और असर कारक है...
के, हम यह लड़ाई
हार रहें है।

147

ताकिया के शिकार को भी
पता न चले, वैसा छिपा
और घातक ताकिया से
बचने के लिए क्या किया
जा सकता है?

148

ताकिया के विरुद्ध एक बड़ा हथियार है...

जागृति

लोगों को ताकिया के बारे में पता होगा तो, उससे बच सकते है।

तो, अब देखेंगे कि ताकिया को कैसे पहचाने ...

149

ताकिया ...

- सौगंद लेकर झूठ बलना, मास खाना, दारू पीना, मुद्दे को तोड़ मरोड़ कर विकृत निवेदन करने (कुछ भी गलत करना, खुद किसीका "शिकार" होने का नाटक करना) के लिए ताकिया अनुमति देता है।
- अपने बचाव और इस्लाम के फ़ायदे के लिए, **इस्लाम के साथ दिल से वफादार रहकर,** खुद मुसलमान होने का इनकार करना और इस्लाम धर्म छोड़ देने का झूठा भरोसा जगा नै के हेतु से वर्तन करने कि छुट एक मुसलमान को दी गई है।
- वास्तव में इस्लाम के सिद्धांतों से बुना हुआ जो "छलावा" है, उसे रणभूमि (लड़ाई) का कौशल्य (गुण) का दर्जा देने में आया है और कई बार उसे शूर वीरता, साहस, धैर्य और स्व-बलिदान से भी महान बताने में आया है।

150

… ताकिया …

- अन्य प्रमुख विद्वानों ने, जैसे के अबू’ अब्दुल्लाह अल-कुर्तुबी (1214-73) और महीद-दिन बीन अल-अरबी (1165-1240), ताकिया को, मुसलमानों के कृत्यों को छिपाने के लिए उपयोग कर सकते है, ऐसा कहा है।
- दूसरे शब्दों में, मुसलमान एक काफर (गैर-मुसलमान) से भी खराब रीत से वर्तन कर सकता है। उदाहरण के तौर पर, झूठी गवाही देना, अन्य मुसलमानो की कमजोरी काफर के सामने प्रगट करना – ऐसा सब कुछ करने की अनुमति है पर किसी मुसलमान के जीवन के भोग पर नहीं।

“किसी भी प्रकार की मजबूरी के अभाव में ताकिया का प्रयोग किया हो तो भी काफर की नहीं कहा जाएगा – भले नरक की यातना भोगने जितना पाप क्यों न किया हो”

151

… ताकिया …

- जिहाद ऊपर बनी एक अरबी कानूनी पुस्तक में बताया है के, कानून के लिए इस्लाम की चार मुख्य विद्यालय (schools of law) ऐसी व्याख्या करते है की “युद्ध में छलावा जायज है… छलावा लड़ाई की एक कला है। – ऐसा उलेमा मानते है”
- और अधिक में, “मुकरम” के मुताबिक, यह छलावा को ताकिया कहते है: “दुश्मन को छलने के लिए ताकिया के इस्तेमाल की छुट है।”
- अल-अरबी ऐसा ऐलान करते है के “हदीस में (मुहम्मद पैगंबर के उपदेश और कर्मों का वर्णन) - लड़ाई में छलावे का उपयोग की बहुत प्रशंसा करने में आई है। *वास्तव में साहस और हिम्मत से ज्यादा महत्व छलावे को दिया गया है।*

152

... ताकिया ...

- अल-मुनीर (d. 1333) लिखते है, "युद्ध यानी छलावा..., इसका अर्थ यह है के, इक धार्मिक योद्धा के लिए, उत्तम और परिपूर्ण युद्ध यह है की छलावा का प्रयोग करके 'आमने सामने का सीधा टकराव' के मूल खतरे को टाल कर, छलावा और धोखे का प्रयोग कर जीत हासिल कर सके। और खुद को होने वाले संभावित नुकसान से भी बच सके।"
- मुहम्मद पैगंबर ने एक यादगार घोषणा की थी के, **"युद्ध यानी छलावा"**

153

... ताकिया

- हदीस (मुहम्मद पैगंबर के उपदेशों और कर्मों का वर्णन) आधारित, एक लोकप्रिय मुस्लिम कहावत के अनुसार, बन सके तो हाथ से (बल से) जिहाद लड़ना, नहीं तो जबान से लड़ना (प्रचार के माध्यम) और जो वह भी न बन पाए तो, दिल के अपने इरादों लड़ना।
- *हदीस:* "अगर कोई काम करने के लिए आपने शपथ ली हों और पीछे से कुछ और अच्छा लगे, तो अपनी शपथ तोड़ कर जो अच्छा लगे वह करना।"
- **गैर-मुसलमानों के लिए ताकिया एक अप्रत्यक्ष-शांत और गुप्त ख़तरा है।**

154

ताकिया और कुरान की विरोधाभाषी आयातें

कुरान के विरोधाभाषी आयतों के साथ ताकिया का अर्थ घटन कैसे करें?

- हम ध्यान पूर्वक देखेंगे तो पता चलता है, के कुरान में शांति और सहनशीलता की आयातें शामिल है। दूसरी ओर युद्ध और बैर भाव धरण करने का उपदेश देती आयातें भी है। तो फिर एक मुसलमान, कौनसी आयतों का पालन करे?
- ध्यान से पढ़ने वाले कोई भी व्यक्ति, कुरान के विरोधाभाषी आयतों से अंजान नहीं रह सकता है। खास तौर पर जिस तरह से शांति और सहनशीलता वाली आयतों के आस पास हिंसात्मक और अ-सहनशीलता की आयतों का होना।
- लड़ाई और शांति की आयतों के बारे में आदर्श विचार धारा ऐसी है की जब मुसलमान कमजोर हो और लघुमती में हों तब शांति और सहनशीलता भरी आदर्शवादी बातें करना और उसी तरह व्यवहार भी करना; पर जब वह मजबूत शक्तिशाली हों तब, लड़ाई और विजय की आयतों में बताए अनुसार, घातक हमला करना।

155

अजोड़ आत्मविश्वास के साथ झूठ

- कोई भी व्यक्ति, कुछ भी गलत कम करते समय, कहीं न कहीं, अंदर से डरता रहता है। क्यों की, गलत कम करने से, उस मनुष्य का धर्म और धर्म के कारण उसकी अंतरात्मा उसे रोकती है।
- पर जब उस मनुष्य का धर्म ही कहे कि (धर्म के लिए) झूठा (गलत) कम करने कि अनुमति है और ऐसा काम करने से स्वर्ग मिलेगा, तब इस बात का उस व्यक्ति पर कैसा असर होता है?
- इन संजोगों में, उस मनुष्य का आत्मविश्वास बहत ऊँचा हो जाता है। गलत (झूठा) काम करने से झिझकता नहीं है। क्यों की अपने और अपने धर्म के अनुसार वह कुछ भी गलत नहीं कर रहा है।
- इस अजोड़ आत्मविश्वास से भरा मनुष्य, जब शिकार (गैर-मुसलमान) को फँसाने के लिए जाल (शब्दों और कृत्यों से बुना जाल) फैलाता है, तब उसके शिकार पर ऐसी असर पड़ती है कि शिकार के सामने प्रस्तुत किए सभी वस्तु का स्वीकार कर ले और किसी भी प्रकार कि शंका भी न करे।
- **इस घातक और अजोड़ आत्मविश्वास का श्रोत... ताकिया है।**

156

ताकिया को किस तरह से पहचाने?

ताकिया के प्रयोग को नीचे बताए मुख्य मुद्दों की मदद से पहचाना जा सकते है

नं	मुद्दो	नं.	मुद्दो
1	विरोधियों को पछाड़ना	2	खुद "शिकार" होने का नाटक करना
3	"यातनाए" पहुंचने का झूठा आरोप करना	4	तथ्यों के साथ छेड़छाड़ कर उलझन पैदा करना
5	सताया हुआ होने का नाटक करना	5A	गड़बड़ी फैलाना
6	दुश्मन पर ही दोषारोपण करना	7	टालना
8	"सबूत" की मांग करना	9	नकारना
10	वाद विवाद और लोगों के बीच के मतभेद का लाभ उठाना	11	धर्म का अपहरण हुआ, ऐसी झूठो बातें फैलाना
12	व्यक्तिगत हमला करना		

ऊपर बताए मुद्दों को समझता हुआ एक छोटा विडियो, अगली स्लाइड में देखेंगे

157

आगामी स्लाइड में अब हम देखेंगे,

ताकिया को पहचान ने के लिए...
एक मूक (Silent) वीडियो

(समय अवधि: 5m–37s)

वीडियो नं. ३

इंटरनेट पर सम्पूर्ण वीडियो यहाँ देख सकते है:

http://www.youtube.com/watch?v=TDPUoTxjcDM

158

विडियो नं: ३

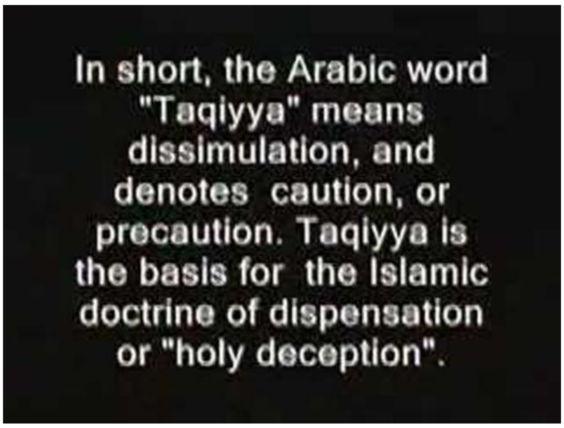
छलने की इस्लामी कला



1. ताकिया यानी क्या?



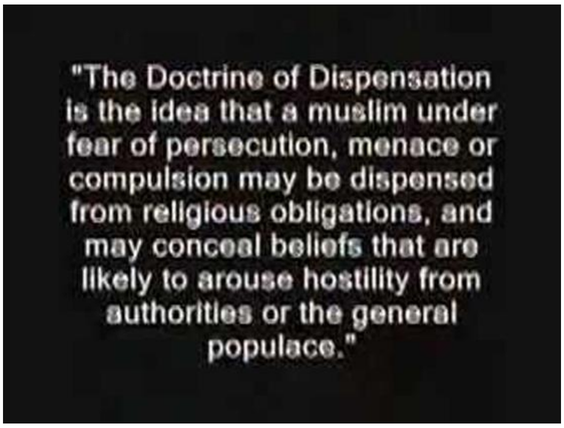
2.



3. अरबी शब्द "ताकिया" का अर्थ स्व-बचाव के लिए की जाता "छलावा"। इस्लाम में "छलने" का धार्मिक सिद्धांत इस पर से लेने में आया है।



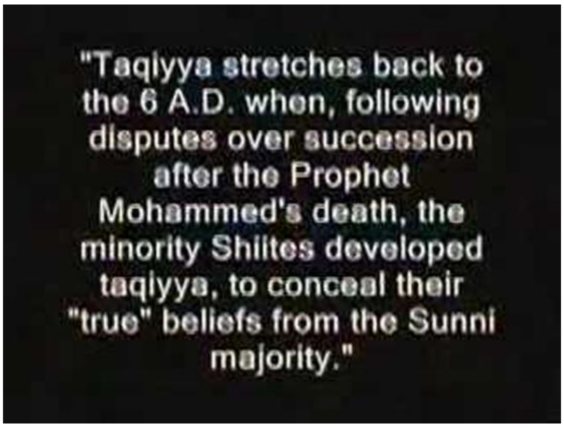
4.



5. मूल में, कोई मजबूरी में, जैसे के स्थानीय लोगों से डर या अधिकारियों से होती उत्पीड़न, इत्यादि से, अपना धर्म छिपाने के अनुमति देने में आई है।



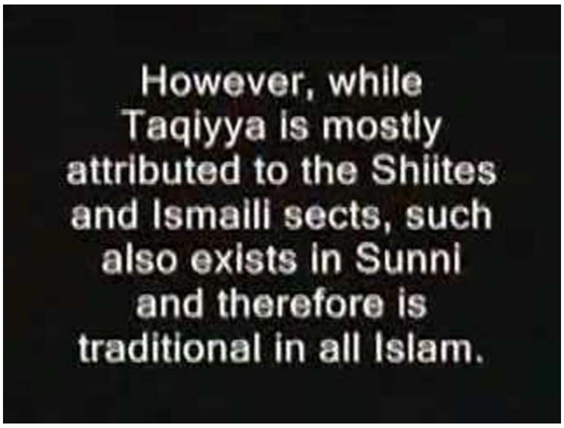
6.



7. ६ठवी सदी में, जब मुहम्मद पैगंबर के उत्तराधिकार के लिए झगड़े हुए, तब अल्पसंख्या में शिया मुस्लिम, बहुमत सुन्नियों से अपना "सच्चा" धर्म छिपने के लिए, "ताकिया" पद्धति को विकसित किया।



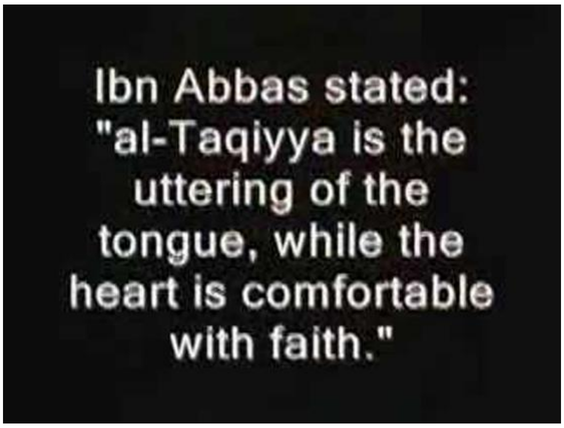
8.



9. काफी हद तक ताकिया का उपयोग शिया और इस्माइली लोग द्वारा होता रहा है। पर सुन्नियों द्वारा भी उसका उपयोग होता है। और इसके कारण हकीकत में यह समस्त इस्लाम का रिवाज है।



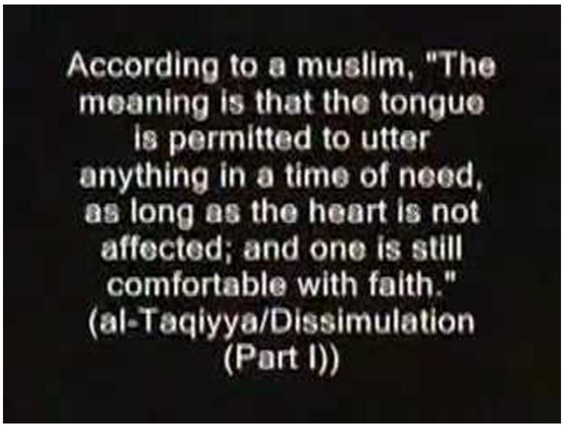
10.



11. अब्बास कहते है: "अल-ताकिया यानी जबान कैसे भी चलाओ, पर हृदय से धर्म के साथ ही वफादारी रखनी"



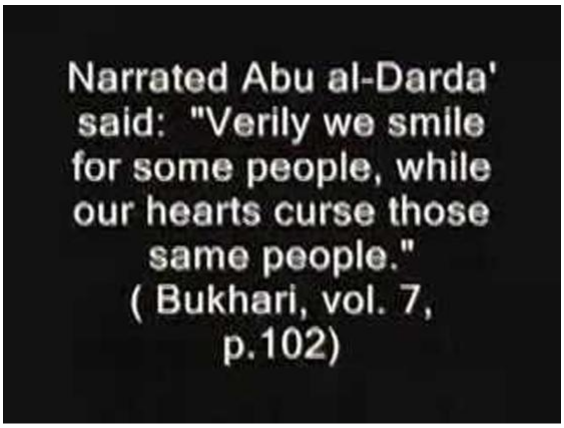
12.



13. एक मुस्लिम के मत अनुसार, ताकिया का अर्थ, जरूरत समय पर, जबान कैसे भी मोड़ने की अनुमति है; परंतु ऐसा करते समय हृदय से इस्लाम के लिए ही वफादार रहना।



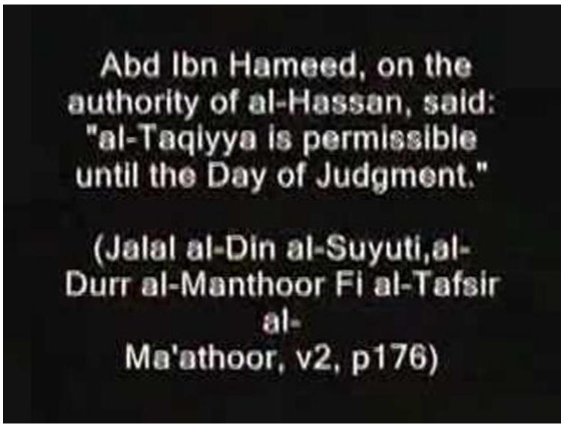
14.



15. "कई बार, उन लोगों के साथ हंस कर वर्तन करते है जिन्हें हम दिल से शाप देते / कोसते है"



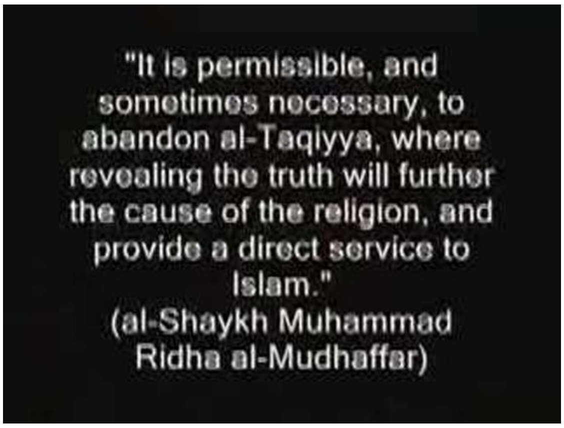
16.



17. "कयामत तक ताकिया का इस्तेमाल करने की अनुमति है"



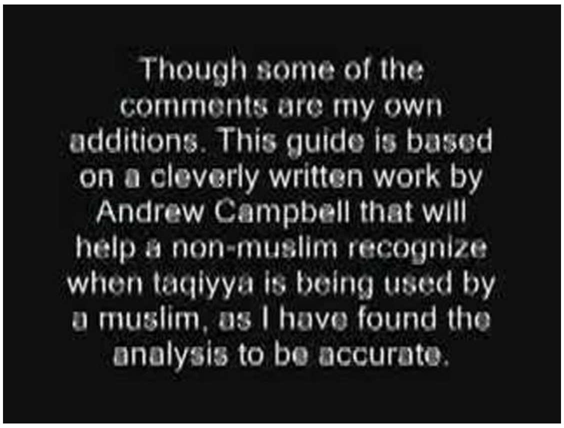
18.



19. अगर इस्लाम के लिए ताकिया छोडने पड़े तो, उसकी अनुमति है।



20. ताकिया तो किस तरह से पहचाने?



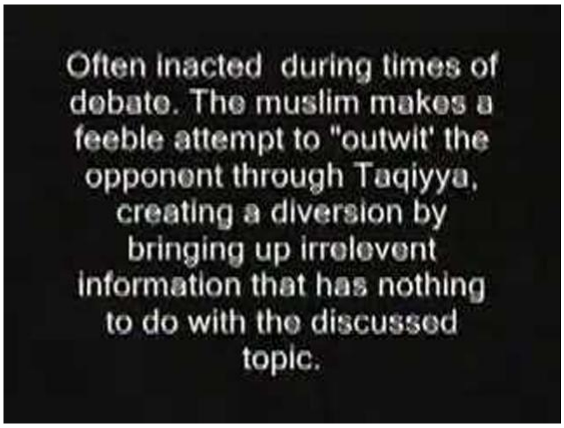
21. एंड्रू कंपबेल के सच्चे लेख ऊपर आधारित है।



22. १. विरोधियों को पछाड़ना



23.



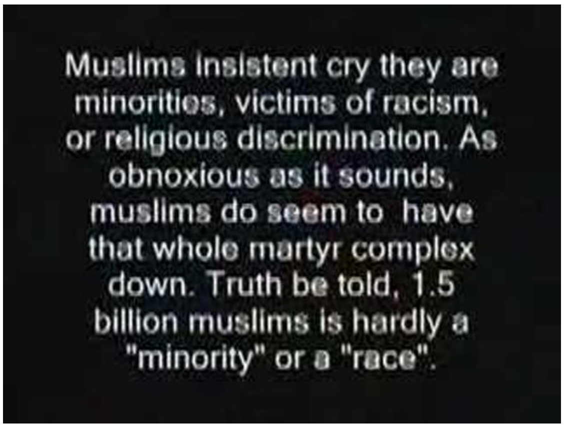
24. चर्चा में इसका उपयोग होता है। धीरे से, चतुराई का उपयोग कर, बिन जरूरी मुद्दों को उठा कर मुख्य मुद्दे को कोने में रख देने की होशियारी का उपयोग करना।



25. २. खुद "शिकार" होने का नाटक करना



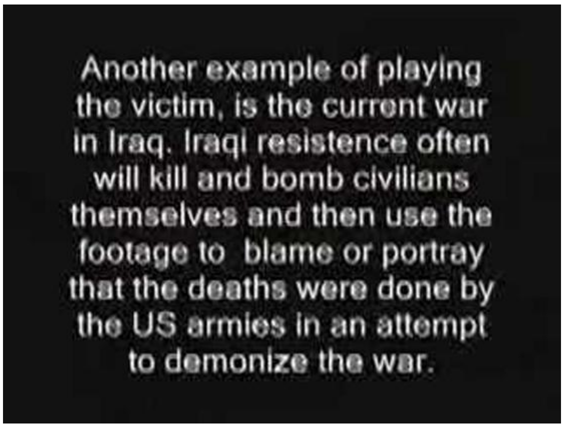
26.



27. चिल्ला कर कहना के, हम अल्पसंख्या में है और धार्मिक भेदभाव के शिकार है



28.



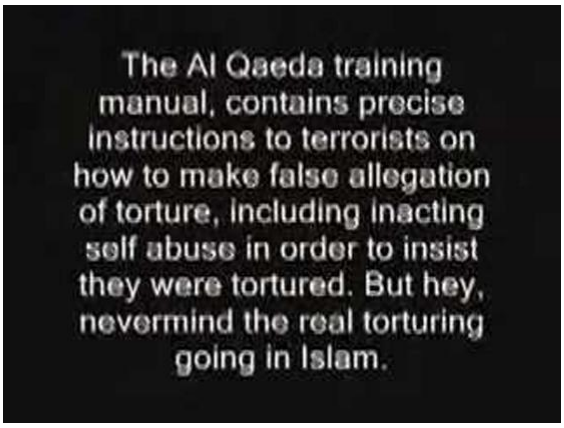
29. दूसरा उदाहरण है इराक़ी लड़ाई का; अपने लोगों को मार कर उसका विडियो प्रकाशित कर, अमेरिका पर उसका आक्षेप डालना, उसे राक्षशी के तौर पर चित्रित करना।



30. ३. "यातना" पहुंचाने के आरोप का झूठा दावा करना



31.



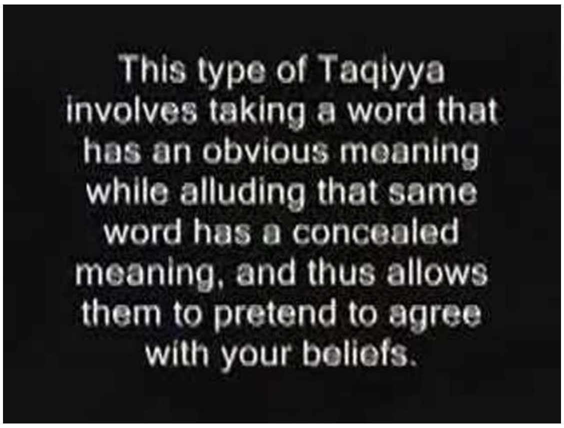
32. अल कायदा के ट्रेनिंग मेनुयल में आतंकवादी को, अपने शरीर को नुकसान पहुंचा कर, जुल्म होने का, झूठा आरोप कैसे करना, उसकी जानकारी है।



33. ४. तथ्यों के साथ छेड़छाड़ कर उलझन खड़ी करना



34.



35. इस तरह से, एक शब्द के स्वाभाविक अर्थ को एक तरफ रख कर, उसका छिपे अर्थ के तरफ इशारा कर, सामने वाले के मत से सहमत होने का दिखावा करना



36. ५. अपने को सताया हुआ होने का नाटक करना



37.



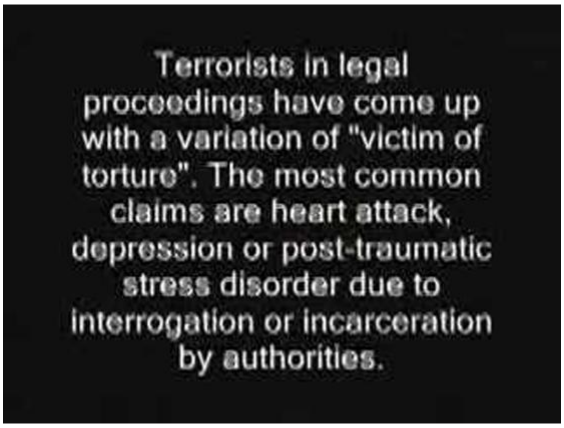
38. करताधरता इस्लाम की संस्कृति और रीत रिवाजों को नजर अंदाज करते है। और अन्य धर्म वाले उन्हें धर्म के नाम पर सताते है ऐसा दावा करना।



39. ५-अ. अव्यवस्था फैलाना



40.



41. पकड़े जाने पर दिल के हमले या तबीयत बिगड़ने का नाटक करना



42.



43. खून में लथपथ मनुष्य से बिचारा कोई ना लगे। अपने हाथ से अपने शरीर ऊपर जख्म कर बिचारा बनना



44. ६. दुश्मनों पर ही दोषारोपण करना



45.



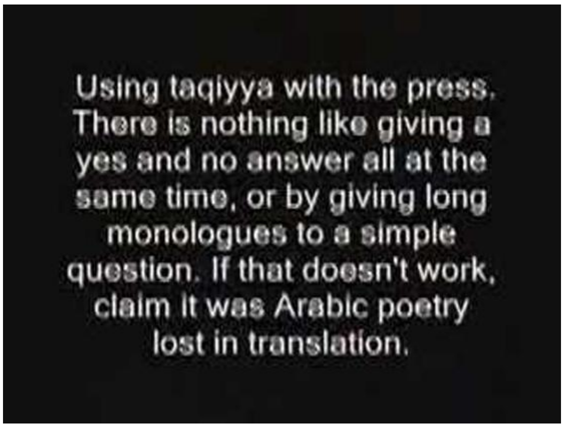
46. आतंकवादी के कर्मों के बात आए तब, पेलेस्टिन के मुसलमानों पर के जुल्म तथा उनकी हालत के लिए अमरीकी और यहूदीओं को जिम्मेदार ठहरना।



47. ७. टालना



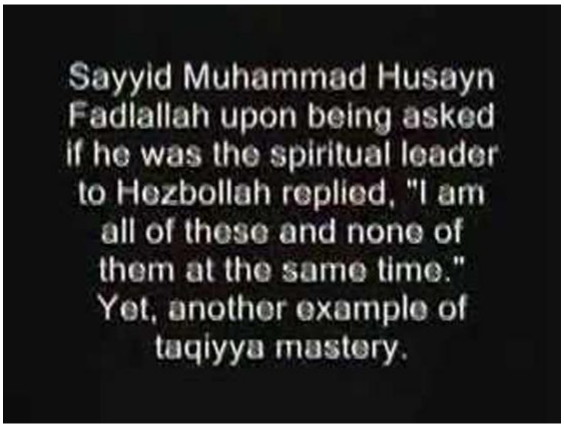
48.



49. हमेशा "हां" या "ना" में जवाब देना जरूरी नहीं है। लंबी-लंबी, बिन जरूरी, एक समान बातें करना। और अगर उस से भी काम ना चले, तब कोई पैन ऐसा बहन कर देना जिससे सामने वाला हमें पकड़ ना सके, जैसे की अपनी बात का योग्य भाषांतर करने में भूल हो गई हो।



50.



51. दूसरा उदाहरण; सैयद मुहम्मद फलल्लाह को सवाल पूछा के क्या आप हिज्बुल्ला के धार्मिक नेता है? तब उन्होने जवाब दिया के "हूँ" और "नहीं" भी।



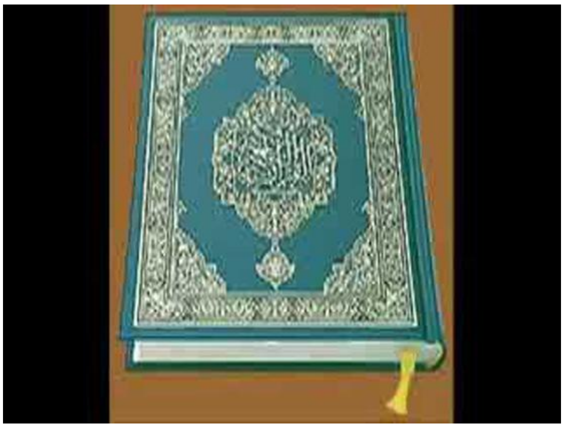
52. ८. "सबूत" की मांग करना



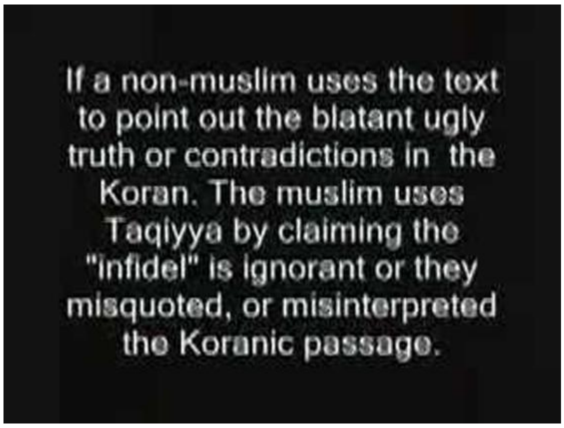
53.



54. एक शंकास्पद व्यक्ति, सबूत मिलने के कठिन परिस्थिति में, सबूतों की मांग कर, सामने वाले के काम करने की शैली और गुप्त जानकारी का श्रोत जान लेना।



55.



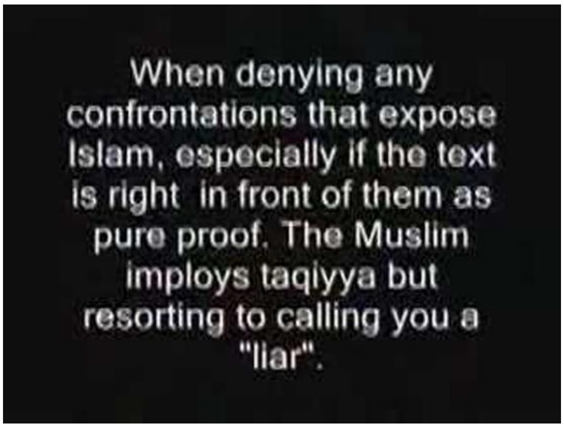
56. जब कोई काफर द्वारा, कुरान की गंदी सच्चाई या बेहूदा उपदेश के तरफ ध्यान खींच ने में आए, तब यह दावा करना के यह काफर ने कुरान का सच्चा अर्थ गठन करने आता ही नहीं है और इस कारण वह दुनिया तो गौर मार्ग पर ले जा रहा है।



57. ९. नकारना



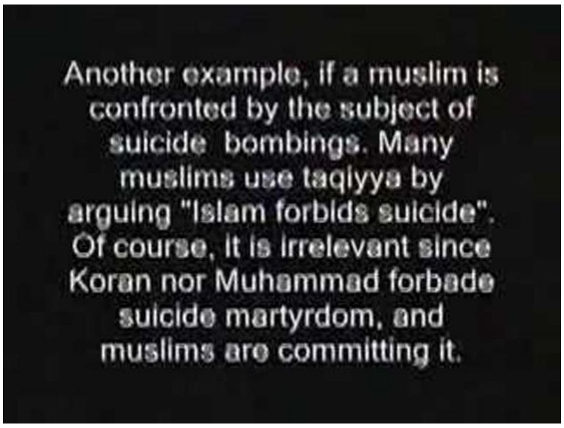
58.



59. किसी विवाद में इस्लाम की कमजोर बाजू उजागर हो जाती हो, क्यों के उससे लगते धार्मिक साहित्य और अन्य सबूत पेश हुए हो, तब सामने वाले को "झूठा" कह देना।



60.



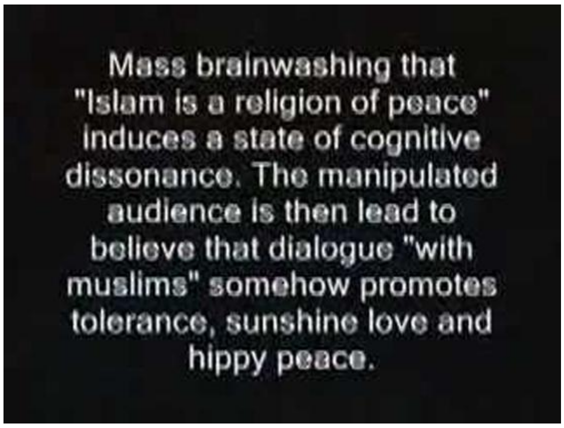
61. आत्मघाती आतंकवादी के विषय पर, ताकिया के मदद से, ऐसी दलील करना के "इस्लाम में आत्म हत्या करने पर मनाई है"। अलबत्ता यह बात अलग है के कुरान और मुहम्मद पैगंबर ने धर्म युद्ध में शहीद होने पर कोई पाबंदी नहीं रखी। और मुसलमान लोग आत्मा हत्या करते है।



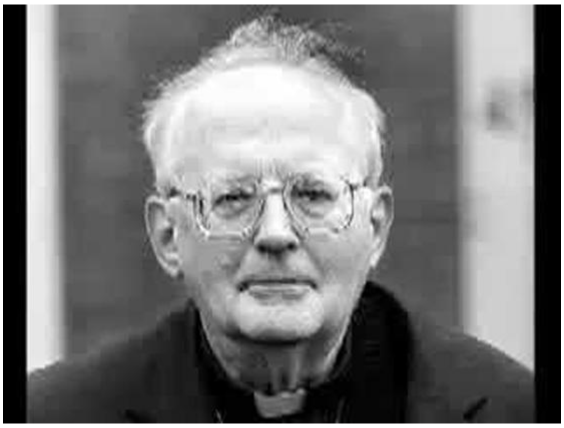
62. वाद विवाद और लोगों में होते मतभेद का फायदा उठाना



63.



64. लोगों का "ब्रेन वॉश" कर, "इस्लाम शांति प्रिय धर्म है" ऐसा ठुसाना। उसके बाद मुसलमानों के साथ चर्चा करने से, शांति हो जाएगी ऐसा प्रचार करना।



65.



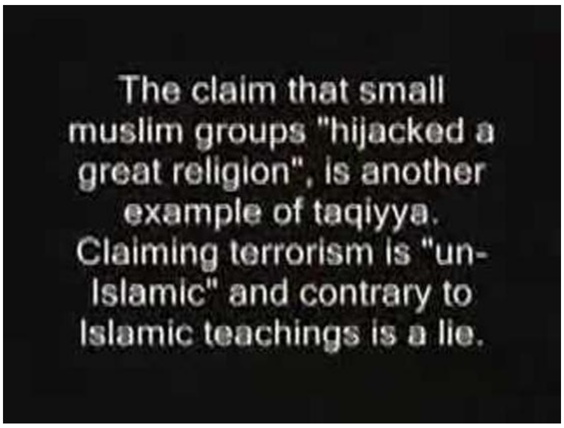
66. एक क्रिश्चन पादरी इसके शिकार बने और चर्च में "गोड" को "अल्लाह" कह कर संबोधन करने के लिए तैयार हो गए।



67. ११. धर्म का अपहरण हुआ



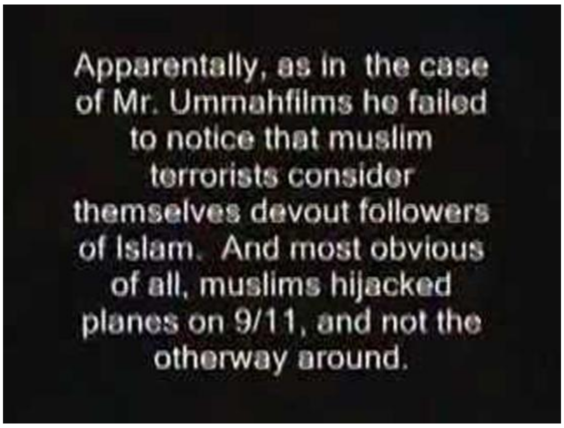
68.



69. लोगों के छोटे समुदाय ने, उनके महान धर्म का अपहरण कर, अधार्मिक बातें / काम करते है।



70.



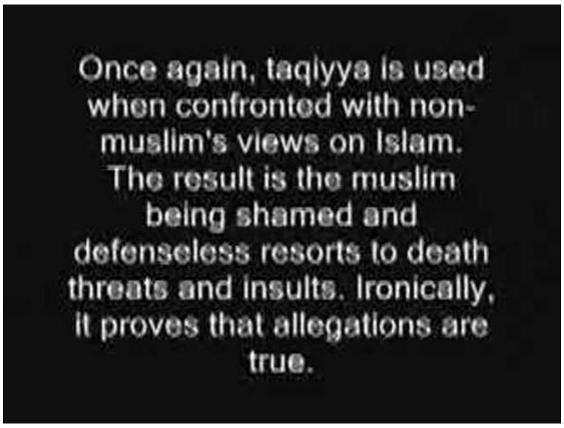
71.



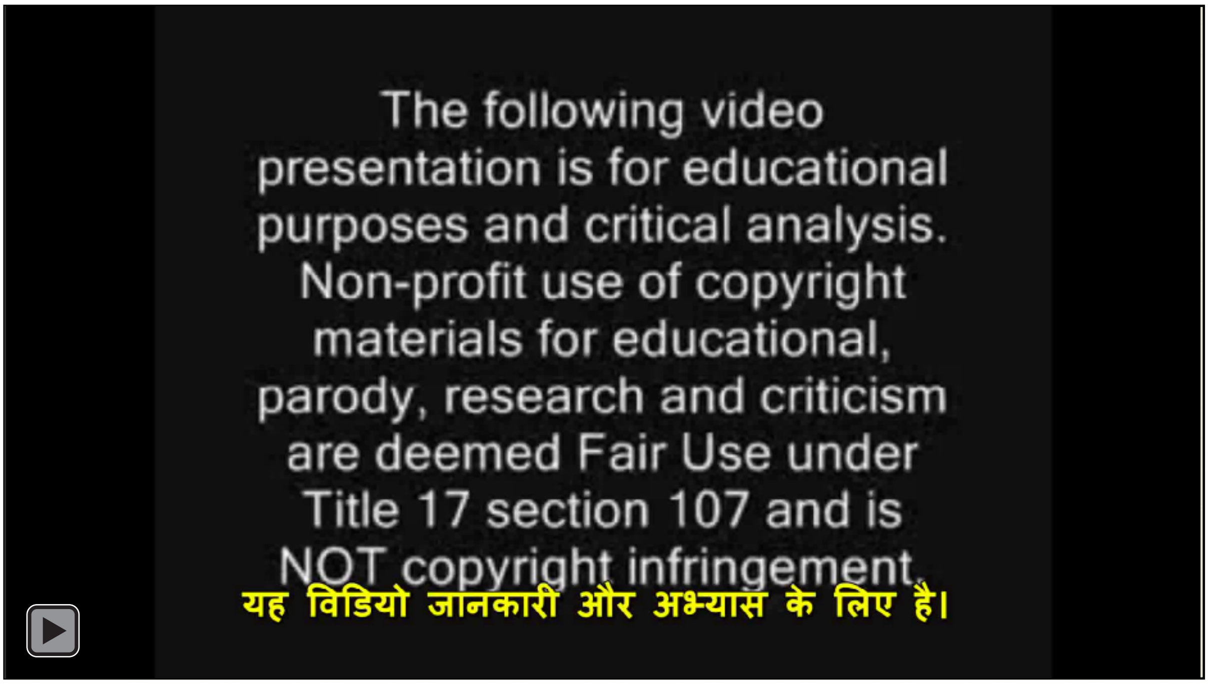
72. १२. व्यक्तिगत हमला करना

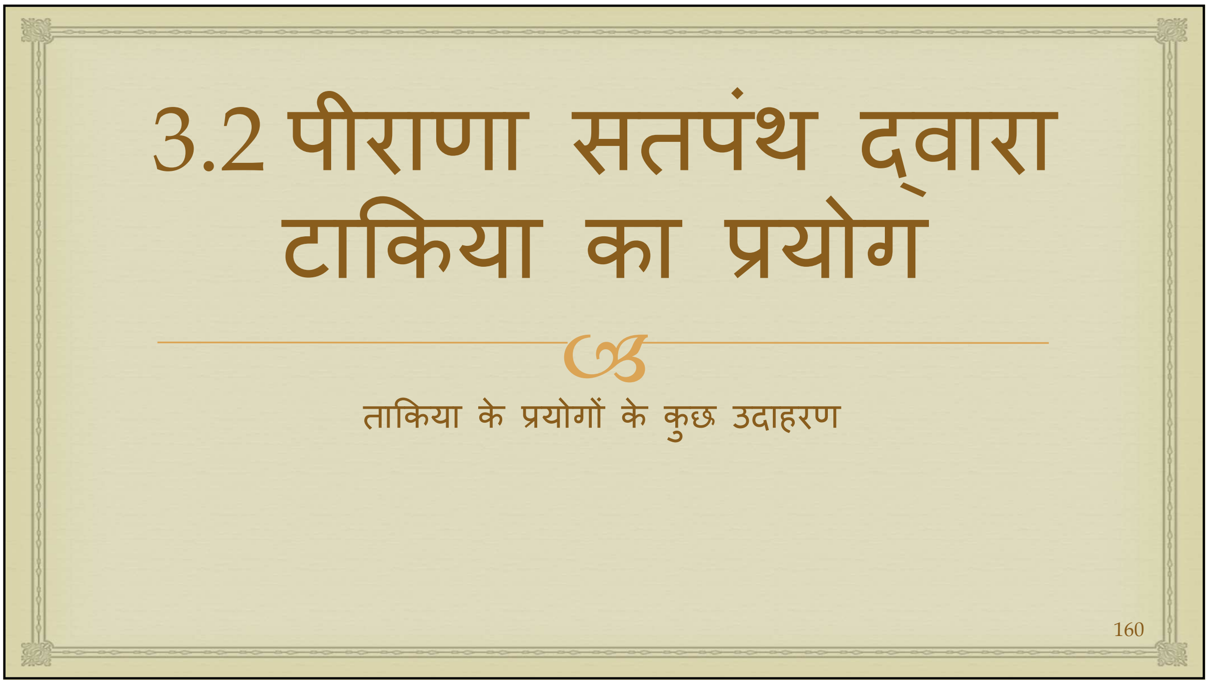


73. जब वाद विवाद में, एक मुसलमान के पास कोई रास्ता ना बचे तब, ताकिया के मदद से, सामने वाले को जान से मारने की धमकी देना, उसका अपमान करना, जैसे व्यक्ति गत हमले करना।



74.


The following video presentation is for educational purposes and critical analysis. Non-profit use of copyright materials for educational, parody, research and criticism are deemed Fair Use under Title 17 section 107 and is NOT copyright infringement.
यह विडियो जानकारी और अभ्यास के लिए है।


3.2 पीराणा सतपंथ द्वारा टाकिया का प्रयोग
ताकिया के प्रयोगों के कुछ उदाहरण
160

पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

इस विषय के लगभग सभी शोधकर्ताओं ने, विद्वानों ने तथा न्यायालयों ने भी, पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया के होते हुए इस्तेमाल की नोंध ली है।

कुछ उदाहरणों / मुद्दे:

1) **सतपंथ की स्थापना:** सतपंथ की स्थापना के पीछे का हेतु है की ताकिया के मदद से हिंदुओं को मुसलमान बनाए। उसके कारण लोग अपनी हिंदू पहचान रखकर, धीरेधीरे इस्लामी प्रथाओं को क्रमवार अपना सकें।

2) **हिंदू धार्मिक पुस्तकों को भ्रष्ट किया:** अथर्व वेद, गीता, पुराण, भगवान विष्णु के दस अवतार जैसे हिंदू धार्मिक पुस्तकों को भ्रष्ट किया। कलियुग में कुरान को अथर्व वेद होने की घोषणा की। हिंदुओं को भ्रमित कर के उन्हें मुसलमान बनाने की चाल युक्ति पूर्वक रचने में आई है।

161

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

3) **हिंदू देवों के अवतार को भ्रष्ट करना – बुध अवतार, कल्कि अवतार (दस अवतार) इत्यादि:** हिंदू देवों के अवतार को भ्रष्ट कर उसमें इस्लामी तत्वों को घुसा दिया। उसके बाद ऐसा चित्रित करने में आया कि अगर मोक्ष चाहिए तो, इस्लाम का अंगीकार करना जरूरी है।

4) **इस्लाम के धर्म वीरों को हिंदू देवों के नाम दिये गए:** हजरत आली का नाम निष्कलंकी नारायण, बीबी फातिमा को आद्य शक्ति, मुहम्मद पैगंबर को ब्रह्मा, इमाम शाह को ब्रह्मा का अवतार, इमाम शाह बावा का नाम इमाम शाह महाराज इत्यादि।

सवाल: अगर सतपंथ स्वच्छ है, तो क्यों ऐसे भ्रामक नाम रखने की जरूरत पड़ी?

162

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

5) **<u>हिंदू विधियों को भ्रष्ट किया:</u>** हिंदू धार्मिक विधियों को इस तरह से भ्रष्ट करने में आई, की जिसके वजह से हिंदू धर्मियों में उलझन पैदा हो जाए और इसके परिणाम स्वरूप ऐसा अप्रचार को स्वीकार कर शिकार बन जाए। जैसे की उपवीत को उतारने में आई, मुरदों को अग्नि संस्कार देने के बदले दफ्न करने की प्रथा शुरू करने में आई, इत्यादि।

6) **<u>हिंदुओं की आस्था को भ्रष्ट करने में आई:</u>** गाय को मारने से स्वर्ग मिलता है। गंगा नदी, मंदिर, मूर्ति, पूजा, ब्राहमण इत्यादि को शापित बताकर लोगों के हृदय में से उतार देने में आया इत्यादि (बुध अवतार को पढ़े)। उसी तरह गीनान में ऐसा भी बताने में आया है कि पत्थर, पशु और वृक्ष को पूजना नहीं। अगर पूजा करोगे, तो दिन चढ़े छाती पर पत्थर लेकर फिरना पड़ेगा। जिससे इन तीनों को पूजना नहीं। इस तरह से लोगों को डराकर हिंदू धार्मिक रीत रिवाजों को पालते बंद करवाने में आए।

163

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

7) **<u>हिंदू धार्मिक / भक्ति भजन और गीतों को भ्रष्ट करने में आई:</u>** नवरात्रि में गाई जाने वाली “गरबी” को पहले शिकार बनाकर भ्रष्ट करने में आई। देखो पीर सदरुद्दीन लिखित गरबी गीनान।

8) जन्नतपूरी और मोमिन चेतामणि जैसी छलावे भरी कहानियाँ रचने में आई।

- **जन्नतपूरी** – लोगों को सतपंथ के तरफ आकर्षित करने के लिए कहानियाँ बनाने में आई।
- **मोमीन चेतामणि** – इमाम और सतपंथ धर्म पर शंका करे और दसोंद न दें, तो उन लोगों को उनके कहे-जाने-वाले बुरे परिणामों से डराने के लिए कहानी रची।

164

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

9) **<u>हिंदुओं को उनके जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयत्न:</u>** प्रागजी काका और इमाम शाह के वंशज सैय्यद वलिमियां ने कच्छ के पाटीदारों के तीन क्षेत्र से बनी जाति की ता.१२-०१-१८७७ को एक सभा को बुलाकर क.क.पा. जाति के लोगों को ब्राह्मणों के साथ से क्रिया करने पर प्रतिबंधित करने का आदेश दिया।

10) **<u>भाट और चारण जाति का बहिष्कार,</u>** उसी तरह, जाति के लोगों में **वहीवंचाओं** की आ जा पर प्रतिबंध लगाकर, उनके पास अपने परिवार की जानकारी की नोंध न करवाने का आदेश दिया। जिससे समय जाते लोग अपने परिवार और कील का इतिहास भूल जाएं और नई अपनाई प्रथाओं को ही सच्चा धर्म मान लें।

भाट और चारण: ऐसी जाति जो राजा और प्रजा को बोध देने का काम, काव्य शैली में करे और उसके साथ उनमें अस्मिता, शौर्य और ख़ुमारी जागा कर बहादुर बनाते है।

वहीवंचा: लोगों के परिवारों में संतानों के जन्म और वंशजों की नोंध रखने का काम और इतिहास की नोंध रखती पीढ़ी दर पीढ़ी काम करती जाति।

11) इन सभी आदेशों के पीछे मूल हेतु, लोगों को उनके हिंदू जड़ से अलग करना था।

165

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

12) **<u>योग और ज्ञान शिविर (1/2):</u>**

1. फिलहाल सतपंथीयों ने सनातनीयों को तोड़ने के लिए एक नई तरकीब ढूँढी है। हम सब जानते है की आज भारत और विश्व के बहुत सारे देशों में योगासन बहुत प्रचलित हुए है। इस बात का फायदा उठा कर सतपंथ के धर्म प्रचारकों ने...
2. योग और ज्ञान देने के बहाने शिविरों का आयोजन करते है।
3. इन शिविरों को खास कर के “महिलाओं को आकर्षित करने के हेतु” को केंद्र में रख कर आयोजित करने में आता है।
4. यह शिविरों का दिखावा, सम्पूर्ण तौर पर, हिंदू का ही होता है और साथ में आध्यात्मिक और धार्मिक स्वरूप भी दिया जाता है।
5. लोगों और खास करके महिलाओं के मन में किसी भी प्रकार की शंका उत्पन्न न हो जाए कि इन शिविरों द्वारा पीराणा सतपंथ धर्म का प्रचार हो रहा है, इस बात का खास लक्ष्य रखा जाता है।

166

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

12) **योग और ज्ञान शिविर (2/2):**

6. इन शिविरों को चलाने के लिए ऐसे लोगों को नियुक्त करने आते है की जो सच्चे सतपंथी होते है पर दिखावा सच्चे सनातनीओं का करें।
7. धीरेधीरे जैसे लोग विश्वास रखने लगते है, तब महिलाएं अपने स्वभाव के अनुसार अपने व्यक्तिगत प्रश्न, जैसे की घर में शांति नहीं है, बच्चे पढ़ते नहीं है, पति की आमदनी में बरकत नहीं है, इत्यादि, योग और ज्ञान सिखाते (कहे जाने वाले) गुरु के सामने रखते हो जाते है।
8. तब इन महिलाओं को उनकी समस्याओं के उपाय के तौर पर, उन्हें, मन्नत और पीराणा के दर्शन के बहाने पीराणा आते जाते कर देना।

इस तरह से महिलाओं से शुरू कर लोगोंकी श्रद्धा पीराणा सतपंथ धर्म तरफ ले आने का प्रपंच रचा है। पहले घर की महिलाएं और उसके बाद घर के सभी लोगों को सतपंथ के अनुयायी बनाने में आता है।

167

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

13) **सनातनी (हिंदू) नेताओं को बदनाम करने का प्रपंच (1/2):** ताकिया की एक रणनीति के आधार पर, सनातनीओं के हिट की बात करने वाले लोगों के सामने सरासर झूठे व्यक्तिगत आक्षेप करने में आता है। उदाहरण के तौर पर नारायण रामजी द्वारा लक्ष्मीनारायण संप्रदाय की स्थापन करने की बनावटी बातें (अधिक जानकारी के लिए www.realpatidar.com/a/series21 देखें)। उसी तरह संत ओधवराम, हिम्मतभाई, रमेशभाई इत्यादि लोगों पर सरासर झूठे और मनगढ़ंत आक्षेप करते है। हाल में सतपंथी लोगों द्वारा, सनातनी लोगों को बदनाम करने हेतु, भेजे गए ईमेल में इस्तेमाल की गई भाषा ने सामाजिक विवेक की सारी मर्यादाओं के हद को पार कर दिया है।

- सतपंथी लोगों द्वारा सनातनी नेताओं को व्यक्तिगत तौर पर नीचा दिखाने की कोशिशों का मुख्य हेतु, सनातनी नेताओं को बदनाम कर उनकी सच्चाई और ईमानदारी पर सवाल करना है। जिसके कारण सतपंथ वीरुध उनके द्वारा दी जाने वाली सच्ची जानकारी पर लोग शंका करे।
- सनातनीओं को सतत बदनाम करने के पीछे, लोगों को उलझन में डालकर सनातनी नेताओं के काम प्रति लोगों के मन में मान सन्मान कम करने का हेतु भी है।

168

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

13) सनातनी (हिंदू) नेताओं को बदनाम करने का प्रपंच (2/2):

- पर सतपंथ लोग अपनी रणनीति के दुष्प्रभाव से बच न सके। उनके "झूठ" जल्दी से लोगों से सामने आगये। उसके कारण सतपंथ और सनातन विवाद का विषय लोगों के बीच सुलगता / जागता रहा। और अधिक में, इसके कारण, सनातनी नेताओं को अपने आंदोलन के लिए मदद मिली। इसके परिणाम स्वरूप लोगों को सतपंथ वीरुध की लड़ाई के लिए एकत्रित / संगठित कर सके।
- मूर्ख सतपंथ लोग आज भी अपने यह पद्धति छोड़ नहीं रहे है। यह पद्धति न छोड़ने की मूर्खता करते रहते है, पर परिणाम स्वरूप सनातनी लोगों को नुकसान होने के बजाय सीधा लाभ हो रहा है। सचमुच सनातनीओं की सच्चाई रंग ला रही है। वह भाग्यशाली है।

169

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

14) मनगड़ंत सिद्धांतों को खड़े करना (1/2):

- सतपंथी लोग अपने झूठ को छिपाने के लिए "नित नए" पैंतरे करते रहते है। और उनकी चालों को सही ठहराने के लिए उन चालों को अपने धर्म के सिद्धांत के तौर पर पेश कर, इस बात का ज़ोर शोर से प्रचार/प्रसार/घोषण करते रहते है।
- ऊपर बताए अनुसार, उन्होने एक नई तरकीब ढूंढ निकाली है, जिस में नए (बदले हुए) धार्मिक पुस्तकों को प्रकाशित करने चाल को सही ठहराने के लिए उपयक्त नए नए कारण को पेश करना है। इसके अनुसार ऐसा कहने में आता है कि मुसलमान राजाओं ने सतपंथ के धार्मिक पुस्तकों को बादल डाला। इसलिए उन्हें फिर से बदल कर असल/मूल पुस्तको को प्रकाशित करने में आ रहा है।
- वास्तव में कोई भी मुसलमान राजा ने सतपंथ साहित्यों के साथ कोई बदलाव नहीं किया है। क.क.पा. जाति ने हिंदू राजा के प्रजा के तौर पर धर्म को सैकड़ों वर्षों तक पाला है। साहित्य बदलने पर कोई ज़ोर नहीं था।
- भरत में हिंदुओं के लिए औरंगजेब से बढ़कर क्रूर कोई भी मुसलमान राजा नहीं था। एक तरफ औरंगजेब के पास से प्रेमाण पत्र मिलने कि और दान मिलने कि ऊंची-ऊंची बातें करे है, (इक नोंध पात्र बन यह भी है की ऐसा सुनने में आया है की औरंगजेब ने शिया मुसलमानों को खुश कर अपनी स्थिति गुजरात में मजबूत करने के लिए ऐसा किया था।) तो दूसरी तरफ ऐसे मुसलमान राजाओं के पुस्तकों को बदलने के आक्षेप करते है। कितनी विरोधाभाषी बातें है। कौन सी सच्ची? कौन सी झूठी? ताकिया का प्रयोग है।

170

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

14) **<u>मनगड़ंत सिद्धांतों को खड़े करना</u>** <u>(2/2):</u>

- भारत आजाद हुआ उसे ६० से ज्यादा वर्ष हो गए। उससे पहले 200 साल तक अँग्रेज़ों ने राज किया। इसका मतलब के पिछले २६० वर्षों में तो कोई मजबूरी नहीं थी ना? अगर मुसलमानों ने कोई साहित्य बादल दिये थे, तो २६० वर्षों तक क्यों मूल साहित्यों को नहीं ले आए।
- हकीकत में, वर्तमान के, तथाकथित नए साहित्यों को, प्रकाशित करने से पहले तक, इमाम शाह के समय काल से, सतपंथ के साहित्य, किसी भी प्रकार का बदलाव किए बगर, चलते रहे।
- यह सद सूचित करता है के, ताकिया का प्रयोग करके, मनगड़ंत तौर पर नित नई बातों को धर्म के “सिद्धांत” के तौर पर पेश करने में आता है। यह सब पहली नजर में भले सच्चा लगे, पर गहरा विचार करें तो सच्चाई सामने दिखती है।

171

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

15) **<u>मूल साहित्यों को छिपाने में आता है</u>** <u>(1/2):</u>

- सतपंथ के साहित्यों को क्यों छिपाने में आता है? सतपंथ के “सभी” साहित्यों को क्यों छाप कर प्रसिद्ध नहीं करने में आता है? उनके पास कितने साहित्य है, उसकी सूची भी प्रदर्शित नहीं करते।
- उनका प्रमुख साहित्य जिसे “मूलबंद” कहा जाता है और इम शाह के स्व-हस्त लिखित होने का दावा किया जाता है, जिस में से दस अवतार और उसके जैसे अन्य साहित्यों को प्रकाशित करने में आता है। ऐसे “मूलबंद” को क्यों छिपा कर रखा है? अगर वह सच्चे है, तो कोई भी बिंदु - मात्रा को न बदलते हुए, इमाम शाह ने जैसा भी लिखा हो, उसी तरह, उस पुस्तक को सतपंथ के अनुयायियों के लिए छपा कर प्रसिद्ध करना चाहिए। पर किसी अंजान वजह के कारण उसे छापा नहीं जा रहा है।
- आज तक साहित्यों में किए हुए बदलाव का आधार मूलबंद है ऐसा कह कर नए साहित्यों को प्रकाशित किए जाते है। पर अगर एक बार मूलबंद को प्रकाशित कर दिया गया है, तो बारबार साहित्यों में बदलाव करने का रास्ता बंद हो जाता है और उनकी पोल खुल जाती है, इसलिए मूलबंद को आज तक प्रकाशित नहीं करने में आया है, यह बात स्पष्ट हो जाती है।

172

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

15) **<u>मूल साहित्यों को छिपाने में आता है</u>** <u>(2/2):</u>

- हिंदुओं की गीता, मुसलमानों की कुरान को कभी भी छिपाने में नहीं आया। तो फिर सतपंथी लोग क्यों मूलबंद को छिपते है? यह भेद समझ में नहीं आता।
- दूसरा उदाहरण; इमाम शाह की लिखा दस अवतार पुस्तक, इमाम शाह की मृत्यु के लगभग ५०० वर्ष बाद, इमाम शाह लिखित, दस अवतार पुस्तक की ***पहली*** आवृत्ति वर्ष २००२में फिरना स्थित सतपंथ की अधिकृत संस्था ने प्रकाशित किया। ५०० वर्ष के बाद, यह पुस्तक कहाँ से मिली? इमाम शाह के काल से, सैकड़ों वर्षों तक मूल दस अवतार की जो पुस्तक लोग पढ़ते आ रहे है, वह कहाँ से आई थी? मूल दस अवतार की पुस्तक को बदलने का अधिकार, उन्हें किसने दिया? पूछने के लिए कई सवाल है, पर संतोष कारक उत्तर देने के लिया कोई तैयार नहीं है।
- वह पुस्तकों के विषय पर दूसरी मजेदार बात यह है की जब किसी पुस्तक को सच्चे हिंदू धर्म के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है, तब उस पुस्तक की प्रसिद्धि/प्रकाशन की तारीक नहीं छापी जाती है। वैसे ही छपवाने वाले व्यक्ति का नाम पता भी नहीं छापा जाता है। जिससे उन्हें कभी कानूनी तौर पर परेशानी ना हो।
- पीराणा में पुस्तक बेचती दुकान में बेचे हुए पुस्तकों के बिल भी नहीं दिये जाते है। बिल मांगे तो पुस्तकों में छपी कीमत बता देने में आती हैं।

173

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

16) **<u>हिंदुओं की धारणाओं को बदलने का प्रयत्न:</u>**

- सम्पूर्ण मानव जातियों में, अगर कोई उच्च मानव जाति है तो, वह मुसलमान जाति ही है। ऐसी वाहियात मान्यता क.क.पा. जाति में प्रचलित थी।
- जिस समय पर निचले वर्ग के लोगों को अछूत माना जाता था, तब उन लोगों को छूने पर, शुद्धि कर पवित्र हुए बिना अपने खुद के घर के अंदर भी नहीं जा पाते थे।
- पर क.क.पा. जाति में, ताकिया का उपयोग कर, ऐसा लोगों के मन में बैठा देने में आया था के, अगर निचले वर्ग के लोग को छूने के बाद, यानी अशुद्ध हो जाने के बाद, अगर कोई मुसलमान को स्पर्श कर ले, तो वश पवित्र हो जाते है और शुद्धि करवाने की कोई जरूर नहीं है।
- उसी समय दरम्यान अन्य हिंदू लोग, मुसलमानों से दूरी बनाए रखते। तब ऊपर बताए अनुसार, मुसलमानों को उच्च बताकर सतपंथीयों को मुसलमानों के नजदीक लाने का प्रयास किया जाता था।

174

... पीराणा सतपंथ द्वारा ताकिया का प्रयोग ...

17) सामान्य तौर पर मुस्लिम धर्म में स्व-बचाव के लिए ताकिया का उपयोग करने के लिए अनुमति और सलाह करने में आई है। दूसरी तरफ सतपंथीयों की बात करें तो उनकी जान को किसी भी तरह का भय न होने के बावजूद ताकिया का उपयोग केवल हिंदुओं को छल कर, सतपंथ को हिंदू धर्म में घुसा देने का प्रयास था और यह प्रक्रिया आज दिन तक निरंतर चालू है। इस बात की गहराई समझने के लिए वाचकों से निवेदन है कि इससे पहले के स्लाइडों को ध्यान में ले।

18) ऊपर बताए बात कि पुष्टि करें तो पता चलेगा कि सैकड़ों वर्षों तक क.क.पा. जाति पर सतपंथ का प्रभुत्व था। जाति में पीराणा सतपंथ को किसी भी प्रकार का भय नहीं था। तो फिर ताकिया का सतत प्रयोग क्यों करने की जरूरत पड़ी?

19) जरूरत न होने के बावजूद, ताकिया का प्रयोग करने के पीछे का हेतु यह दर्शाता है की हिंदुओं को परिवर्तित कर मुसलमान बनाने के प्रपंच के अलावा कुछ नहीं है।

175

लोग ताकिया के शिकार बन गए थे।

ताकिया इतना असर कारक था की लोगों को
किसी भी प्रकार की शंका नहीं हुई की
उनके साथ कुछ गलत हो रहा है।

176

अभी तक की समझ

पीराणा सतपंथ (बहार से भले हिंदू दिखता हो) **वास्तविकता में, शिया मुसलमानों का, निझारी इस्माइली पंथ का, एक भाग है।**

177

4. चरण २

इमाम शाह के बाद का काल

178

मुद्दे

इस चरण में नीचे बताए मुद्दों पर नजर करेंगे;

1. इमामशाही पक्ष की फुट
2. काका की भूमिका
3. इमाम शाह की वंश परंपरागत पीढ़ी
4. क.क.पा. जाति में क्रांति
5. पीराणा सतपंथ में अशांति
6. नव निर्मित ताकिया
7. अ.भा.क.क.पा. समाज की उदारता और उसके साथ दगा
8. मवाल
9. अ.भा.क.क.पा. समाज में दूसरी क्रांति
10. आशंकाए

179

4.1 इमामशाही पक्ष की फुट

कौन से संजोगों में कौन से कारणों के वजह से...
इमामशाही लोग, मूल सतपंथी लोगों (यानी खोजा लोग) से..
अलग हुए?

180

इमाम शाह की मृत्यु के बाद...
उनकी गद्दी पर...
उनके पुत्र और उत्तराधिकारी...
नर ("नूर") मुहम्मद शाह...
("नर अली") बैठे।

181

इमामशाही की फुट ...

- सतपंथ के मूल सिद्धांत में, अनुयायियों दवारा दसोंद (आमदनी का दसवां भाग) और अन्य धार्मिक कर (religious tax) का देना, आता है।
- ऐसे पैसों पर ईरान के इमाम का अधिकार होता था। इसलिए जो रकम इकट्ठा होती थी, वह ईरान स्थित इमाम के पास भेज दी जाती थी।
- यह परंपरा इमाम शाह के समय काल तक प्रचलित थी और उनके बाद, उनके पुत्र नर मुहम्मद शाह के शुरू वात दे समय दरम्यान में भी चलती थी।
- इसलिए धर्मांतरण किए लोगों का नए समुदाय शुरु वात में ईरान के इमाम के साथ वफादार था।
- इसका मतलब उस समय तक, सतपंथ में कोई फुट नहीं थी।

182

... इमामशाही की फुट ...

- सतपंथ के साहित्यों के अनुसार, दसोंद और अन्य धार्मिक कर देने के पीछे का तर्क इस तरह से समझाया गया है कि जब कयामत के समय पर अल्लाह/ईश्वर/भगवान आपके कर्मों का हिसाब करेंगे, तब चाहे कितने भी भयानक पाप क्यों न किए हो, पर अगर आपने ईमानदारी से इमाम को दसोंद दिया है तो आपको स्वर्ग से भी अच्छा अमरापुरी मिलेगा और हर एक सच्चे अनुयायी को हज़ारों साल तक धरती पर राज करने मिलेगा। पर अगर आपने दसोंद देने में कहीं कमी राखी है तो आपको नरक से भी बुरी यतनाए मिलेगी।
- जब नर मुहम्मद ने खुद को निष्कलंकी नारायण यानी इमाम होने कि घोषणा कि, तब अगर दसोंद और अन्य धार्मिक कर के पैसे ईरान भेजे जाते तो उनके इममियत पर सवाल खड़े हो जाते। इसलिए दसोंद और अन्य कर के पैसों को ईरान स्थित इमाम के पास भेजने पर रोक लगाने की जरूरत पड़ी।
- नर मुहम्मद शाह ने, इमाम शाही पंथ को (इमाम शाह को मानने वाले) मुख्य सतपंथ में से १६वी सदी में अलग किया।
- सतपंथ के *"सतवेणी जी वेल"* नाम के गीनान में से यह ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।

183

... इमामशाही की फुट

- नर मुहम्मद शाह के सत्ता की शुरुवात के दिनों में भी, परंपरा के अनुसार, ईरान स्थित "इमाम" के पास रकम भेजी जाती थी।
- पर उसके बाद, नर मुहम्मद शाह ने विद्रोह कर पैसे भेजना बंद किया और एक खेता नाम के अनुयायी, जिसके पास १८००० हिंदुओं का साथ था, उसे नर मुहम्मद शाह ने आदेश दिया के अब से जो कुछ रकम इकट्ठा हो, वह रकम उन्हें दे। ईरान भेजे नहीं।
- खेता ने स्पष्ट "ना" कह दी और लंबा झगड़ा चला। जाति बाहर करना हुआ और आखिर में फुट पड़ी।
- इस के कारण विधिवत तौर पर इमामशाही (पीराणा सतपंथी) लोग, मुख्य सतपंथ (यानी खोजा कौम) से अलग हो गए।

184

फुट की असर

<u>इमामशाहीयों पर फुट की कैसी असर हुई:</u>

- नर मुहम्मद शाह ने जो फुट डाली, उसके कारण, इस्माइलीओं के दृष्टिकोण से, इमामशाही पंथ को बड़ा भरी और अगणित नुकसान हुआ।
- इस्माइली धर्म के अनुयायी बनने के अलावा, वह “पीराणा वाला” के तौर पर, हल्के हिंदू और उतरते मुसलमानों की कौम बन कर रह गए।
- दूसरी तरफ, मुख्य सतपंथ कौम, खोजा कौम, धीरे-धीरे, इस्लाम को अपनाती गई।
- रूढ़िवादी मुसलमान लोग, इमामशाहीओं को मुसलमान नहीं मानते, वैसे ही चुस्त हिंदू लोग उन्हें हिंदू नहीं मानते।

185

4.2 काका की भूमिका

रोजा / दरगाह की देखरेख करने वाले मुजावर / काका की भूमिका

186

काका की भूमिका ...

- यहाँ "काका" एक अरबी शब्द है, जिसका मतलब होता है "नौकर"। सैय्यदों ने दरगाह की देख रेख करने के लिए और अनुयायियों से संपर्क तथा उनके दिये दान ओर भेंट को संभालकर रखने के लिए जो नौकर नियुक्त किया जाता था, उसे "काका" कहा जाता था।
- इमामशाही समुदाय में सभी अनुयायी हिंदू थे। (क्यों की, इमाम शाह को मानने वाले मुस्लिम लोग, सतपंथ को नहीं मानते। वह इस्लाम के साथ पहले से वफादार थे। सतपंथ को पालने की कोई जरूरत नहीं थी।
- स्व-बचाव और व्युहात्मक कारणों को लेकर अनुयायी, अपने धर्मांतरण को छिपाकर रखते। उन्हें अपना बाह्य दिखावा हिंदुओं के जैसा रखने की छूट थी।
- और जिन लोगों ने अपना धर्म परिवर्तन नहीं छिपाया, वह भी अपने मूल जाति से अलग नहीं होना चाहते थे।
- सतपंथ के प्रचारकों और अनुयायियों के बीच परस्पर समझौता रहे और एक दूसरे के साथ संपर्क में रहे, इस कारण, काका को नियुक्त करने मीन आता था। अनुयायियों को सलाह देकर उनकी उलझन दूर करने के काम के साथ उनका मुख्य काम दसोंद और अन्य कर के पैसे, अनुयायियों के पास से, वसूल कर, पीर तक पहुंचाने का काम है।
- काका को अनुयायियों के समुदाय में से चुने जाते है।

187

... काका की भूमिका ...

- जब काका को नियुक्त करने में आता है, तब उनकी धार्मिक विधि सैयदों के द्वारा करने में आती है।
- **परंपरागत तौर पर काका के दो नाम होते है। एक हिंदू नाम और दूसरा मुस्लिम नाम। उदाहरण के तौर पर, "नाया काका" को "पीर नसीरुद्दीन" भी कहा जाता था। उसी तौर पर "करसन काका" को "पीर करीम" कहा जाता था।**
- काका की "गद्दी" यह एक "संस्था" है। जिसकी शुरुवात गाँव स्तर पर शुरू करने में आया और धीरे-धीरे केंद्र स्थान में प्रस्थापित हुई।
- पीराणा के केंद्र में काका को लाने का मुख्य कारण, नूर मुहम्मद शाह के बेटों के बीच, आपस का बैर और झगड़े थे।
- अपने मौत के बाद, झगड़ते बेटों के बीच, निष्पक्ष तौर पर पीराणा की कमाई का बटवारा हो, इस कारण, एक व्यवस्था की जरूरत समझ कर, नर अली ने (नूर मुहम्मद शाह का दूसरा नाम), काका की भूमिका बढ़ा दी। काकाओं में से एक मुख्य काका को नियुक्त किया और उसका अतिरिक्त काम कबर की देख रेख करना भी था। यानी मुजावर के तौर पर जिम्मेदारी भी थी।

188

... काका की भूमिका

- काका को आजीवन काल के लिए नियुक्त किए जाते और काका को गृह संसार त्यागना पड़ता था। बदले में काका को खाना और कपड़े मिलते।
- शोधकर्ताओं के कहने के अनुसार, वास्तव में काका की गद्दी साजिश, कपट और कष्ट का अटूट भंडार है।
- समय जाते, पैसे के ज़ोर पर, काका की ताकत धीरेधीरे बढ़ती गई। खुद को धर्म गुरु और पंथ का सर्वेसर्वा मानने लगे।

189

पीराणा के काकाओं की सूची

1	शाणा	11	नूर मुहम्मद	21	नथु (3)
2	शेर मुहम्मद	12	भुला	22	पेथा
3	अब्दुल्लाह	13	पोचा	23	करमशी
4	इब्रहीम	14	प्रगजी	24	लक्ष्मण
5	रहीम (1)	15	नथु (1)	25	रामजी
6	करीम मुहम्मद	16	दीपा (अबदूर रहीम)	26	सवजी
7	सामद	17	मनजी	27	करसन
8	हसन	18	नथु (2)	28	नानक दास (वर्तमान)
9	रहीम (2)	19	नागजी		
10	राजे मुहम्मद	20	शामजी		

नोंध: अमुक जगहों पर, ताकिया के वजह से, मुसलमान काकाओं के नाम बदल कर हिंदू नाम रख दिये है।

190

4.3 इमाम शाह की पीढ़ी

इमाम शाह के, पीढ़ी दर पीढ़ी, उत्तराधिकारीयों की नोंध
(यानी तथाकथित हरिवंश की नोंध)

191

1
- इमाम शाह
- जन्म:1452 मरण: 1513 (62 years)
- कबर: पीराणा

2
- नूर मुहम्मद
- जन्म: 1469-70 मरण: 1533-34
- कबर: पीराणा, इमाम शाह के कबर के पास

3
- सैदुद्दीन (सेद) खान
- जन्म: --- मरण: 1572
- कबर: पीराणा, इमाम शाह के दरगाह के पास

4
- अबू अली हाशिम
- जन्म: 1559-60 मरण: 1612
- कबर: ----

5
- अबू मुहम्मद हाशिम
- जन्म: 1597 मरण: 1636
- कबर: ----

આગળ જુઓ...

192

6
- मुहम्मद साही दुला बुरहानपुरी
- जन्म: 1624 मरण: 1657
- कबर: बहादुरपुर, फेजपुर के पास

7
- अबू मुहम्मद शाही मीरां
- जन्म: -- मरण: 1691
- कबर: पीराणा

8
- मुहम्मद शाह
- जन्म: 1679 मरण: 1718
- कबर: अहमदनगर

9
- मुहम्मद फादिल
- जन्म: 1717 मरण: 1746
- कबर: चंपानेर

10
- सैय्यद शरीफ
- जन्म: 1731 मरण: 20th Feb 1775
- कबर: ----

આગળ જુઓ...

193

11
- बदरुद्दीन (बड़ा मियां)
- जन्म: 1775 मरण: 1827
- कबर: ---

12
- बाकर अली
- जन्म: --- मरण: 1835
- कबर: ---

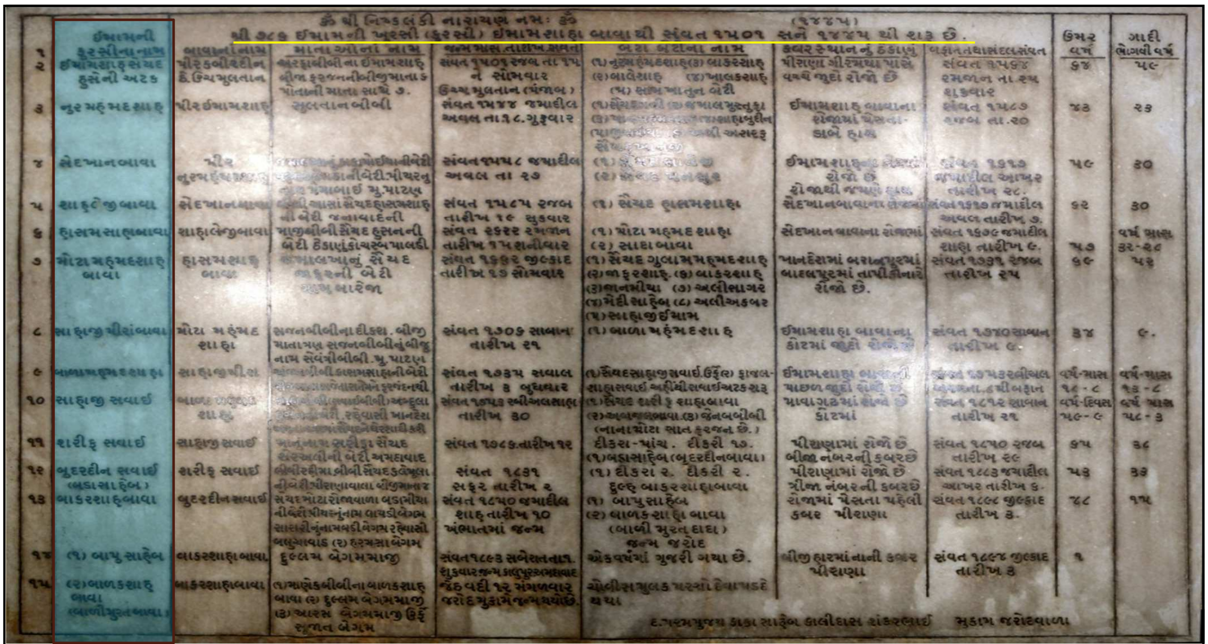
--
- पीढ़ी का अंत
- बाकर अली का कोई वंशज नहीं था। वह उत्तराधिकारी नियुक्त किए बिना गुजर गए।

ऊपर बताए अनुसार, संशोधन कारों के, ठोस सबूतों के आधार पर पेश किए निष्कर्ष पर से जान ने मिलता है कि इमाम शाह की गद्दी का अंत हो गया है। उसका दूसरा अर्थ यह होता है के सतपंथी लोग जिसे विष्णु के अवतार की अखंड परंपरा को मानते है, वह टूट गई है। पीराणा सतपंथ के हरिवंश का अंत हो गया है।

नोंध: बहुत सारे सतपंथी लोग इस बात से अंजान है और एक सैय्यद शमशुद्दीन खाकी (अब उनके उत्तराधिकारी बेटे सलाउद्दीन खाकी), जो खुद को "सज्जाद नशीन" के तौर पर प्रस्तुत करते है। खुद को इमाम शाह की गद्दी का वारिस होने का दावा करता है। उन्हें लोग आँख बंद करके मानते है। **अगर यह दावा सच है, तो सतपंथ धर्म सिद्धांत के अनुसार यह सैय्यद जीवित इमाम और अली / विष्णु का दसवां अवतार हो सकता है। पर वह दावा सच हो, ऐसा लगता नहीं है।**

दुःखद है की कई सतपंथी लोगों की अज्ञानता के कारण ऐसा मानते है।

194



इमाम शाह की पीढ़ी को दिखाता शिला लेख। इससे पहले बताए पीढ़ी की सूची और इस सूची में मामूली अंतर है।

नए सिद्धांत को पेश किया

- हरिवंश का अंत होने के बावजूद, अशरफ शाह सैय्यद को लेकर, एक नया दिलचस्प सिद्धांत पैदा किया है। इसके अनुसार, हिंदुओं पर अत्याचार करने वाला, कुख्यात और क्रूर मुसलमान राजा, औरंगजेब ने प्रमाणित किया के अशरफ शाह बावा, इमाम शाह बावा की गद्दी के उत्तराधिकारी है।
- आश्चर्य के बात है की कुछ लोग इस बात को सच्चा मानते है और इमाम शाह की गद्दी के दावेदार, शमशुद्दीन खाकी (अब उनके उत्तराधिकारी पुत्र सलाउद्दीन खाकी) को मानते है। यह भी सुनने में आया है कि औरंगजेब ने शिया मुसलमानों को खुश कर अपनी स्थिति गुजरात में मजबूत करने के लिए दान और जूठा प्रमाण पत्र दिया था और इस बात के पीछे कोई आध्यात्मिक सच्चाई नहीं है।
- हाली में, तारीक २३-०२-२०१० से शमशुद्दीन बावा के पुत्र, सलाउद्दीन बावा खाकी १५वें “सज्जाद नशीन” (उत्तराधिकारी) होने का दावा कर रहे है।
- “हरिवंश के उत्तराधिकारी” सैय्यद ऐसा प्रचार रहा है की “गादिपति” सैय्यद के अलावा किसी अन्य सैय्यद को न माने। फिर छहे वह हरिवंश के सैय्यद के सगे भाई क्यों न हों।

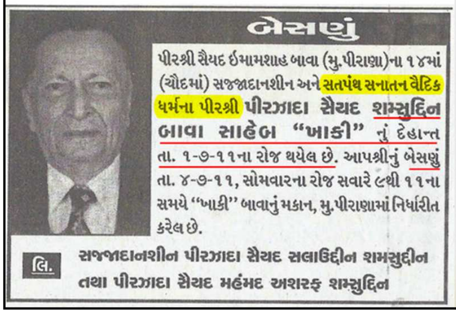
196

शमशुद्दीन बावा खाकी

इमाम शाह के गादि के १४वें गादिपति



ગુજરાત સમાચાર, ભુજ આવૃત્તિ - તા.૦૩ જુલાઈ ૨૦૧૧, પેજ: ૨



બેસણું

પીરશ્રી સૈયદ ઈમામશાહ બાવા (મુ.પીરાણા)ના ૧૪માં (ચૌદમાં) સજ્જાદાનશીન અને સતપંથ સનાતન વૈદિક ધર્મના પીરશ્રી પીરઝાદા સૈયદ શમ્સુદ્દિન બાવા સાહેબ "ખાકી" નું દેહાન્ત તા. ૧-૭-૧૧ના રોજ થયેલ છે. આપશ્રીનું બેસણું તા. ૪-૭-૧૧, સોમવારના રોજ સવારે ૯થી ૧૧ના સમયે "ખાકી" બાવાનું મકાન, મુ.પીરાણામાં નિર્ધારીત કરેલ છે.

લિ. સજ્જાદાનશીન પીરઝાદા સૈયદ સલાઉદ્દીન શમસુદ્દીન તથા પીરઝાદા સૈયદ મહંમદ અશરફ શમ્સુદ્દિન

- ऊपर – अच्छे समय में शमशुद्दीन बावा की तस्वीर।
- नीचे – शमशुद्दीन बावा खाकी के मृत्यु के बाद, उनकी शोक सभा का विज्ञापन, गुजरात समाचार दैनिक पत्र के, भुज आवृत्ति में, गुजराती भाषा में, तारीक ०३-०७-२०११ को दूसरे पन्ने में, और अहमदाबाद आवृत्ति में भी, प्रकाशित हुआ था।
- इस विज्ञापन में उन्हें "सतपंथ सनातन वैदिक धर्म के पीर" होने का साफ-साफ लिख है।
- पीराणा सतपंथीयों की मुख्य केंद्रीय संस्था, धी इमाम शाह बावा रोजा संस्थान कमैटी ट्रस्ट, रजिस्टर नं E-७३८ ने आज तक, इस विज्ञापन में छापे शमशुद्दीन बावा खाकी सतपंथ सनातन वैदिक धर्म के पीर होने के दावे का कोई खंडन, नहीं किया है।

197

4.4 क.क.पा. जाति में क्रांति

कच्छ कड़वा पाटीदार (क.क.पा.) जाति में क्रांति
और
उसकी पीराणा सतपंथ पर असर

198

क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

1. क.क.पा. जाति और पीराणा सतपंथ के बीच संबंध

- क.क.पा. जाति और पीराणा सतपंथ के बीच खास संबंध है।
- इससे पहले के स्लाइड में आपने देखा की पीराणा पंथीओं में बड़ा बहुमत क.क.पा. जाति के लोगों का है।
- इसलिए स्वाभाविक है के क.क.पा. जाति के लोगों की धार्मिक आस्था, विचार और क्रियाओं की पीराणा सतपंथ पर असर होती है।
- अगली स्लाइडों में देखेंगे के कैसे विपरीत और दयनीय अवस्था में, वर्ष १९२० से १९६० के बीच, क.क.पा. जाति में क्रांति हुई और उसकी पीराणा सतपंथ पर कैसी असर पड़ी।

199

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

2. इमाम शाह की सफलता पीछे के मुख्य कारण:

- इमाम शाह की सफलता के पीछे का मुख्य कारण था की इमाम शाह चमत्कार करने में बहुत कुशल है।
- उनकी चमत्कार करने की शक्ति के कारण, काशी की यात्रा के लिए निकले एक संघ को काशी विश्वनाथ के दर्शन, सैकड़ों किलोमीटर दूर, पीराणा में से की करवा दिया और उन्हें काशी जाने नहीं दिया। इस बात के कारण, लोगों में अपने प्रति आकर्षण जागा सके। लोग इमाम शाह की चमत्कारी शक्ति को नमन करने लगे और पीराणा में बैठे इमाम शाह पूजनीय बन गए।
- दूसरी कहानी ऐसी है की तीन बरस तक सतत दुष्काल गिरने के कारण परेशान किसान इमाम शाह के पास मदद मांगने गए और इमाम शाह ने बारिश बरसा के दिखाई। गरीब किसान को यह बात चमत्कारिक लगी और इमाम शाह को तारण हार और भगवान के जैसा मानने लगे।
- कई छोटी मोती चमत्कार की बातें प्रचलित करने में आई है। कुछ बातों का तो “गीनान” में भी समावेश करने में आया हिय, जो केवल अशिक्षित, अज्ञानी, गरीब और अंध-श्रद्धा में डूबे हुए लोगों के वर्ग की कल्पना को आकर्षित करने में सफल हुआ है।
- एक बार जब लोग उन्हें मानने लगे, तब इमाम शाह ने धीरे से सतपंथ को (शिया मुसलमान का एक पंथ) कलियुग का सच्चा हिंदू धर्म के तौर पर पेश कर दिया।
- **अभ्यास का अभाव, गरीबी और अज्ञानी लोगों के, इमाम शाह की चमत्कारी शक्ति के, लाभ दाई अनुभव के कारण, उन पर अंध-विश्वास रखा और इमाम शाह पर शंका करने के शक्ति लोगों में नहीं बची। जिस कपटी तरीके से इमाम शाह ने, तथाकथित हिंदू तत्व मिश्रित कब्रस्थानय सतपंथ धर्म लोगों के सामने प्रस्तुत किया, उसके कारण लोगों ने सहज भाव से उसे अपना लिया।**

200

… क.क.पा. जाति में क्रांति की असर …

3. सतपंथ का अंगीकार:

- शुक्रवार तारीक १९-१०-१५३४ को कड़वा पाटीदार ("क.पा.") जाति (इस जाति को "कणबी" या "कूणबी" के नाम से भी पहचानी जाति है) के कुछ लोगों ने इमाम शाह का धर्म, सतपंथ, का अंगीकार किया।
- यह लोग सतपंथ धर्म का स्वीकार कर "मुमना मुसलमान" बन गए थे।
- एक समय भुज के संग्रहालय (museum) में मुमना कणबी की मूर्ति भी रखने में आई थी।
- उस काल में क.पा. जाति के लोग महेसाणा जिला में उंझा के आस पास बस्ती थी।
- धीरे-धीरे जाति के अन्य हिंदू सदस्यों को उनके सतपंथी भाईयों के मुसलमानी धर्म के बारे में पता चला।

201

… क.क.पा. जाति में क्रांति की असर …

4. कच्छ में स्थानांतर:

- अन्य हिंदू समाज और कड़वा पाटीदारों को जब पता चला के सतपंथ धर्म एक मुसलमानी धर्म है, तब हिंदू और पाटीदार लोगों ने सतपंथ धर्म पालते लोगों का बहिष्कार किया। इसकी वजह से सतपंथीयों को उनका प्रदेश (उत्तर गुजरात) छोड़ कर कच्छ के लिए पलायन करना पड़ा।
- उत्तर गुजरात जैसा फलदायी प्रदेश को छोड़ कर कच्छ जैसे सूखा प्रदेश में जा कर बसना कोई आसान काम नहीं था। कच्छ जैसे रण और दुष्काल ग्रस्त प्रदेश में खेती करना किसी भी किसान के लिए कसौटी भरी बात है।
- कच्छ आने के बाद, वह पहले भचाऊ के पास "सीकरा" गाँव में आकार बसे।
- कच्छ में आकार बस ने के कारण उन्हें "कच्छ कड़वा पाटीदार" की नई पहचान मिली। आज लगभग ५०० वर्षों के बाद भी इस जाति के घरों में गुजराती भाषा बोली जाति है। आज भी बहुतायत लोगों को स्थानीय, कच्छी भाषा नहीं आती।
- यह हकीकत ही सबसे बड़ा सबूत है कि कच्छ कड़वा पाटीदार जाती गुजरात से कच्छ में आकार बसी है।

202

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

5. हिंदू रीत रिवाज और क्रियाओं का पालन:

- मुमना मुसलमान की पहचान लेकर, बहुत कष्ट को सहकार, कच्छ जैसे दुर्गम प्रदेश में आ कर बसे, पर वह हमेशा से ऐसा ही मानते थे के वह सच्चे हिंदू है।
- क्यों नहीं? उनके रीत रिवाज और क्रियाएं हिंदुओं के जैसे थी। शादी और मृत्यु की क्रियाएं भी हिंदुओं के जैसी थी (तारीक १९-०१-१७७६ तक)। दीवाली, नवरात्रि, गोकुल अष्टमी जैसे हिंदू त्योहारों को भी मनाते थे।
- इमाम शाह के वंशज सैयदों को पूज्य मानते थे, दसोंद और अन्य धार्मिक कर देते और कभी कभार पीराणा की यात्रा करते थे। उस समय तक इन कुछ दो तीन अपवादों के अलावा, उनमें मुसलमानों के कोई रीत रिवाज नहीं थे।
- जाति में अशिक्षा, गरीबी, अज्ञान और धार्मिक मुद्दे पर अभ्यास न होने के कारण, हिंदू धर्म और सतपंथ धर्म के भेदों से अंजान होने के कारण, सैयदों की मौखिक सूचनाओं को मानने के अलावा उनके पास कोई उपाय नहीं था। इस कारण धर्म के मामले में, हिंदू धर्म से विपरीत मान्यताओं का धीरे-धीरे स्वीकार करने लगे। और उस प्रकार से आचरण भी करने लगे।

203

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

6. क.क.पा. जाति ने विश्रामबापा नाकराणी को दिया हुआ वचन (1/2):

- यह सच्चाई वहीवंचा जाती के दस्तावेजों पर से लिया गया है।
- क.क.पा. जाति के बड़े नेता और श्री विश्रामबापा नाकराणी, कच्छ की सीमा के पास आए "सीकरा" गाँव में आए। उस समय क.क.पा. जाति का मथक सीकरा गाँव में था। कच्छ के अंदरूनी गाँवों में अभी तक जाति फैली नहीं थी।
- विश्रामबापा क.क.पा. जाति के प्रिय नेता थे। सम्पूर्ण क.क.पा. जाति उन्हें मानती थी।
- विक्रम संवत १६८५ में यानी वर्ष १६२८-२९ में वह बहुत बीमार हुए और उनका अंतिम समय आ पहुँचा।
- पर उनका जीव नहीं जा रहा था। तड़पता रहता था। इसलिए लोगों ने उन्हें पूछा के... बापा आपकी अंतिम इच्छा क्या है? आपकी सद्गति क्यों नहीं हो रही है?

204

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

6. क.क.पा. जाति ने विश्रामबापा नाकराणी को दिया हुआ वचन (2/2):

- बापा ने कहा की हमने बड़ी भूल करके इमाम शाह को मानते मान लिया। एक मुसलमान को अपना धर्म गुरु बना लिया। दुर्भाग्य वश हम पीछे नहीं मुड सकते है। पर अगर हमें हिंदू बन कर रहना है, तो मुझे दो वचन दो;

  1. *तुम कभी भी "कृष्ण गोपाल" को नहीं छोड़ना।* इसी कारण क.क.पा. जाति के लोग हमेशा कृष्ण भगवान के जन्माष्टमी उत्सव को मानती आ रही है। (सैय्यद लोग "जमात खाना / खाना" के अंदर जन्माष्टमी मनाने नहीं देते थे, इसलिए खाना के बाहर इस त्योहार को मनाने का रिवाज प्रचलित हो गया)

  2. मुसलमानों की जाती को क.क.पा. जाति उतरती कौम मानती है। इसलिए उतरती कौम का पकाया न खाना। *मांस न खाना।* (एक मुस्लिम धर्म पालने के बावजूद आज तक क.क.पा. जाति मांस नहीं खाती है।)

- ऊपर बताए अनुसार बापा को दिये दो वचनों को क.क.पा. जाति आज भी पालती आ रही है। और उसके कारण सैयदों के लाख कोशिशों के बावजूद, इस जाती का खान पान भ्रष्ट नहीं कर सके।

205

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

7. केशरा परमेशवरा का विद्रोह:

- शुक्रवार, तारीक १९-०१-१७७६ को यह ऐतिहासिक घटना घटी, जिसने भविष्य के क्रांति के बीज बोये।

- उस समय के पीराणा के काका, प्रगजी और सैय्यद वलीमियां ने नखत्राणा में जाति पंच की सभा बुलाई।

- उनकी हाज़िरी में जाति में से ब्राहमण और वहीवंचाओं को निकाल दिया गया और उनके पुनः प्रवेश पर प्रतिबंध कर दिया गया।

- भारत की वर्ण व्यवस्था में, धार्मिक ज्ञान और उस विषय की विद्वत धरने वाले, ब्राहमण और, इतिहास के सच्चे जानकार और उसकी बारीकीयों का संग्रह करने वाले, भाट-चारण और वहीवंचा लोग, सैयदों की मैली मुराद को पूरी करने में अवरोधक थे। और उनकी मैली मुराद थी, जाति को उनके हिंदू मूल से उखाड़ फेंकना। क्यों की भारत की वर्ण व्यवस्था में व्यक्तिगत धर्मांतरण सफल नहीं हो सकता, सम्पूर्ण जाति का धर्म बदले तो ही सफल हो सकता है।

206

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

8. जाति में पहली फुट:

- जाति के आगेवान, जो नेत्रा गाँव के मुखी भी थे, वह श्री केशरा तेजा सांखला (केशरा परमेशवरा) को, सैयदों के इस प्रपंच की गंध मिल गई। उसी सभा में उन्होंने उस प्रस्ताव का विरोध किया।
- पर उस प्रस्ताव को रोकने जितना उन्हें साथ नहीं मिला। इसलिए उनके कुछ साथीदारों को लेकर सभा का बहिष्कार किया।
- अपने गाँव आ कर, अपने गाँव के लोगों को सैयदों और काका के रचे प्रपंच की हकीकत समझाई।
- स्वामी नारायण संप्रदाय के साधु की सनातन धर्म के बारे में दी हुई सलाह को अपना कर उन गाँवों के लोगों ने सामूहिक तौर पर सनातन हिंदू धर्म के स्वामी नारायण संप्रदाय का अंगीकार किया।
- भले केशरा परमेशवरा के साथ कम संख्या में लोग थे, पर इस घटना से, लोगों के मन में सतपंथ धर्म हिंदू होने के वाहियात दावे पर शंका हमेशा के लिए बैठ गई।
- दुर्भाग्य वश जाति के अन्य सभ्य पीराणा सतपंथ को पालते रहे। सैयदों को पूज्य मानते और उन्हें धर्म गुरु और आध्यात्मिक गुरु मानते रहे।

207

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

9. महान नेता नारायण रामजी लींबाणी का जन्म:

- जाति में सैयदों के आगमन को शुभ माना जाता था। अनुयायी सैय्यदों के आगमन को बड़ी संख्या में मिलकर मानते और उन्हें पैसे और अन्य कीमती वस्तुए भेंट करते। सैय्यदों के झूठे खाने को प्रसाद मानते और अनुयायियों में बाँटते।
- सैय्यद, अनुयायी के बच्चों को पढ़ाने के खिलाफ थे। सैय्यदों को धर्म गुरु मानते इसलिए लोग उनकी बातों पर अंधा विश्वास रखते और उनकी बातों के एक-एक अक्षर का पालन करते।
- अज्ञानता के साथ, किसी भी संजोग में, दसोंद और धार्मिक कर के पैसे देने की मजबूरी थी। दुखों में बढ़ोतरी करने के लिए कच्छ में बार वार दुष्काल आता रहता था। लोगों की हालत जानवरों से भी बदतर थी।
- इस दयनीय और खराब परिस्थिति में केशरा परमेशवरा के विद्रोह के १०८ बरस के बाद, तारीक २२-०५-१८८३ के दिन जाति के महान नेता, श्री नारायणजी रामजी लींबाणी का जन्म कच्छ के एक गाँव विराणी मोटी में हुआ।
- नारायण रामजी लींबाणी ने, अपने पिता की देख रेख में पाँचवी कक्षा तक का अभ्यास पूर्ण किया। उस समय पाँच कक्षा तक पढ़ने वाले जाति में केवल अन्य चार लोग ही थे।

208

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

10. निर्णायक घड़ी - (1 / 2):

- अपने पिता के जैसे, नारायण रामजी भी एक कुशल इमारत बनाने वाले ठेकेदार और कारीगर थे। धंधे में अपना किस्मत आजमाने वह वर्ष १९०२ में मुंबई आए और उसमें उन्हें बहुत सफलता भी मिली।
- तब वर्ष १९०८ में, उनके जीवन में ऐसे घटना घाटी की जिसके कारण उनका जीवन सदा के लिए बादल गया। इस घटना की कायमी असर जाति पर भी हुई।
- इक दिन, घर बनाने के नए ठेके के लिए सेठ श्री केशवजी दामजी को मिले। संजोग वश यह सेठ भी कच्छ के वतनी थे और भाटिया जाति के थे।
- श्री केशवजी रामजी ने मकान बनाने का ठेका तो नारायण रामजी को दिया, पर उन्होने एक बात काही, जिसके वजह से नारायण बापा का जीवन बादल गया।

209

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

10. निर्णायक घड़ी - (2 / 2):

- उन्होंने कच्छी भाषा में कटाक्ष करते कहा के, “वह दिखते हिंदू जैसे, पर धर्म में तो वह काफर है – ना वह हिंदू और ना मुसलमान। इन लोगों में मरे तब दफ़नाते है और शादी में दुआ पढ़ते है”।
- इस बात तो सुन कर नारायण बापा को जाने झटका लगा और चिंतन करने लगे की हिंदू होने के बावजूद मेरी जाती का ऐसा अपमान क्यों? क्या मेरी जाती हिंदू नहीं है?
- सच्चाई जानने की जिज्ञासा के कारण वह सत्या की खोज करने निकले।
- हिंदू धर्म के कई आगेवानों को मिले और सच्चा हिंदू धर्म क्या है, वह जाना। उन्होने यह भी जाना के पीराणा सतपंथ यह हिंदुओं को परिवर्तित कर मुसलमान बनाने के लिए तैयार की हुई एक “व्यवस्था” है, एक प्रपंच है। जिसमें अनुयायियों के अज्ञानता का लाभ लेकर, वह सच्चा हिंदू धर्म पालते है, ऐसा झूठ अनुयायी के मन में ठोक बैठा कर मुसलमान धर्म पालते कर देना था।

210

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

11. सतपंथ धर्म का ज्ञान हासिल किया:

- लंबे समय तक सतत मेहनत करने के बाद, नारायण बापा ने सतपंथ धर्म के ज्ञान पर महारत हासिल कर ली।
- उनके ज्ञान का स्तर इतना उच्च था की आगे जाते उन्होने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका नाम "पीराणा सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश" है। पीराणा सतपंथ के छिपे भेद को बाहरी दुनिया के सामने रखता यह पहली पुस्तक है।
- आज भी, इस विषय के अभ्यासी, प्रख्यात लेखकों और विद्वानों, इस पुस्तक का संदर्भ लेते होते है।

211

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

12. क्रांति की शुरुवात:

- सतपंथ धर्म का ज्ञान लेने के बाद, नारायण बापा अपने साथीदारों और मित्रों के साथ चर्चा करने लगे और उनके विचारों को लोगों का समर्थन मिलने लगा।
- तारीक ०४-०६-१९०८ को उनके ७ मित्रों के साथ, त्रंबकेश्वर की पवित्र भूमि पर, देह शुद्धि करवा कर, उपवीत धरण कर सनातन हिंदू धर्म का अंगीकार किया।
- शुरुवात में छोटी-छोटी सभाए भरने लगे और उनमें वह सतपंथ की सच्चाई लोगों के सामने रखने लगे। कई लोग उनकी बातों से प्रभावित हुए और उनके विचारों का समर्थन करने लगे।
- जब जाति के लोगों को पता चला के जो धर्म वह पाल रहें है, वह कोई हिंदू धर्म नहीं है, तब लोगों को आघात लगता।
- धीरे-धीरे लोगों का साथ मिलता गया और लोग सनातन हिंदू धर्म का अंगीकार करने की तैयारी दिखाते गए।
- **नारायण बापा ने "संपूर्ण विभाजन" की रणनीति अपनाई। सतपंथी लोगों के साये से भी कोई संबंध न रखने के हिमायती थे।**

212

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

13. लंबे समय के लिए सफलता बनाए नहीं रख सके:

- उन्होने अभियान वर्ष १९०८ में शुरू किया और १९२० के दशक के शुरुवात में शिखर तक पहुंचा।
- उस समय, नारायण बापा और उनके दाहिने हाथ समान, श्री रतनशी खीमजी खेताणी के साथ मिलकर उन्होने कई गाँवों में सभाएं की। वह तीन जंगी, जाति सम्मेलन सफलता पूर्वक पूर्ण करने में सफल रहे।
- उनकी सभाओं में पीराणा सतपंथ को सदा के लिए त्याग करने के निर्णयों को, सर्वानुमति, से पसार करने में आता था।
- कई परिवारों ने सनातन हिंदू धर्म का अंगीकार भी किया।
- पर शुरुवात की सफलता धीरे-धीरे ठंडी होने लगी।
- को लोग नारायण बापा के प्रभाव में आकार हिंदू धर्म का स्वीकार किया था, वह वापस सतपंथ का अंगीकार करने लगे। नारायण बापा और उनके अभियान के लिए यह बड़ा धक्का था।

213

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

14. सफलता ना मिलने के कारण – (1 / 2):

- विघ्न के दो मुख्य कारण थे;

1. जिन लोगों ने हिंदू धर्म का स्वीकार किया था, उनको अपने ही जाति के सतपंथी भाइयों द्वारा, जो बड़ी बहुमती में थे, जाति से बाहर निकाला जाता था।

   • जाति बाहर किए लोगों को व्यावहारिक बाधाएं होने लगी। क्यों की उनके सगे संबंधी लोग पीराणा सतपंथी थे। सगे संबंधीयों द्वारा उन पर दबाव लाया जाता और उनके रोज़-बरोज के जीवन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता। इन लोगों को जाति के आगेवान सतपंथी नेताओं के हाथों ख़ूब सताने में आता और सताने के यह कोशिशें को सतत चालू रखते थे। इन लोगों का जीवन बहुत मुसीबतों भेरा कर दिया जाता था।

2. नारायण बापा आर्य धर्म के हिमायती थे। आर्य धर्म को सच्चे हिंदू धर्म का एक भाग माना जाता है। आर्य धर्म की क्रियाएं का पालन करना कठिन होता है। आज के युग के शिक्षित लोगों को भी आर्य धर्म की क्रियाओं को पालना कठिन लगता है।

214

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

14. सफलता ना मिलने के कारण – (2 / 2):

- सैकड़ों वर्षों से हिंदुत्व से विमुख रहने के कारण, जाति हिंदू धर्म के क्रियाओं, मूल्यों और सिद्धांतों को बहुत हद तक भूल चुकी थी।
- परिस्थिति ऐसी थी के जाने, इक बाल मंदिर के विद्यार्थी को १०वी कक्षा में दाखिल कर दिया हो। स्वाभाविक है की ऐसे संजोगों में विद्यार्थी उलझन में पद जाए और अभ्यास में उसका मन ना लगे। आखिर में अभ्यास छोड़ दे।
- इसलिए नए विद्यार्थी की तरह ताजे हिंदुओं को हिंदू धर्म के एक चुस्त पंथ पालने में सफलता नहीं मिली।

215

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

15. नारायण बापा के प्रयत्न निरर्थक नहीं गए:

- परिस्थिति दिन प्रति दिन बिगड़ती गई। नारायण बापा के घर पर रोज सुबह होते ही, निराश लोग आते। लोग अपनी पघडी उतार कर बापा के चरणों में रख कर कहते के अब हमसे यह धर्म (हिंदू) नहीं पाला जाएगा। बापा के साथीदारों की संख्या भी कम होने लगे।
- नारायण बापा और उनके साथीदारों को बहुत बड़ा आघात लगा, जिससे वह कभी भी बहार नहीं आ सके।
- जाति को फिर से हिंदू धर्म में लाने में बापा सफल न हुए।
- पर, बापा की मेहनत सम्पूर्ण रीत से निरर्थक नहीं हुई। जाति को अपना सच्चा धर्म समझ में आ गया। जाति में जो जागृति वास ले आए थे, उसके कारण इतनी तो चिंगारी उत्पन्न हुई की आगे जाते आने वाले समय में अन्य लोग इस चिंगारी की मदद से, समाज में धर्म क्रांति की मशाल को चालू रख सके।

216

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

16. ओधवराम महाराज का आगमन:

- इन हालातों के बीच, एक सच्चे संत, श्री ओधवराम महाराज का जाति के हितार्थ के लिए आगमन हुआ। नारायण बापा के दाहिने हाथ समान, वीराणी मोटी गाँव के दूसरे महान वीर, श्री रतनशी खीमजी खेताणी के साथ उनकी भेंट हुई।
- नारायण बापा और उनके साथीदारों की करी प्रणाली की समझ लेने के बाद, ओधवराम महाराज ने रतनशी बापा को "सदभावना" की राह/रणनीति दी।
- सतपंथीयों से दूर रहने के बजाय सतपंथीयों के साथ संपर्क बना कर उन्हें प्रेम से जीत ने की रणनीति बनाई थी। समय जाते यह रणनीति बहुत कारगर साबित हुई।
- इस रणनीति ने सुनिश्चित किया की लोग पीराणा सतपंथ की बेड़ियों से आजाद होकर हमेशा के लिए हिंदू धर्म का अंगीकार कर सके और धर्मांतरण की प्रक्रिया भी बहुत आसान कर दी। 217

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

17. "सदभावना" रणनीति की सफलता:

- स्व-अनुभव से बड़ा कोई भी अनुभव नहीं होता। जब रतनशी बापा ने, ओधवराम महाराज की बताई, रणनीति का अपने खुद के घर में प्रयोग कर अपने भाइयों के परिवार को सनातन धर्म अपनाने के लिए राज़ी कर लिया, तब उन्हें ओधवराम महाराज के लिए अटूट श्रद्धा और विश्वास जगा।
- उनकी रणनीति कारगर तो थी ही, पर साथ में नारायण बापा की सम्पूर्ण विभाजन की रणनीति की खामीयां नहीं थी।
- सतपंथीयों से दूर रहने के बजाय, उन्हें मान देकर, उनके साथ संपर्क बनाकर उन्हें सनातन धर्म अपनाने के लिए राज़ी किया।
- ओधवराम महाराज के साथ मिलकर, रतनशी बापा और उनके साथीदार, गाँव से गाँव घूमे और अगणित सभाए की और लोगों को सनातन (हिंदू) धर्म अपनाने के लिए राज़ी किया।
- पीराणा सतपंथ समाज से अलग होकर रतनशी बापा और उनके साथीदारों ने नई "कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज" रची, जो सनातनी लोगों की केंद्रीय समाज थी। 218

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

18. लक्ष्मीनारायण मंदिरों का निर्माण:

- पीराणा सतपंथ धर्म के कारण जाति अपने मूल आराध्य देव भूल चुकी थी। ओधवराम महाराज ने दूरंदेशी का इस्तेमाल कर जाति को लक्ष्मीनारायण भगवान को आराध्य देव के तौर पार सूचित किया। उसके कारण जाति को हिंदू के तौर पर अनूठी पहचान मिली और वह पहचान आज दिन तक कायम रही।
- भविष्य में लोग वापस सतपंथ धर्म तरफ न मुड जाए, इसे सुनिश्चित कर ने के लिए, धार्मिक और सामाजिक संरचना करने की जरूरत दिखी, जैसे की मंदिर और समाज भवन।
- रतनशी बापा ने ओधवरामजी महाराज और उनके शिष्य दयालदासजी महाराज के सानिध्य में, कच्छ के क.क.पा. जाति के लगभग ६५ गाँवों में जा कर लक्ष्मीनारायण मंदिरों की स्थापना की।
- रतनशी बापा के इन प्रयासों के कारण हिंदुओं का मनोबल मजबूत हुआ और लोगों का साथ मिलता गया।
- इस दौरान, जाती के कुलदेवी ऊमीया माताजी का मंदिर कच्छ में होना चाहिए इस बात का महत्व समझ कर ओधवराम महाराज ने, कच्छ में, देसलपर, वांढाय में, कड़वा पाटीदारों की कुलदेवी ऊमीय माता का मंदिर बांधने में बहुत व्यक्तिगत रस लिया।
- हाल ही में तारीख १४-०५-२०११ के शुभ दिन पर, शंकराचार्यों और अन्य उच्च हिंदू धार्मिक संतों की उपस्थिति में और उनके आशीर्वाद से, कच्छ देसलपर (वांढाय) में, क.क.पा. समाज के सभी कच्छ के गावों और अन्य प्रांतों में आए लक्ष्मीनारायण मंदिरों को एक सूत्र में बांधने के हेतु से, एक शानदार, सर्वोच्च केन्द्रीय संस्था, "संस्कार धाम" की स्थापना करने में आई है।

219

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

19. ओधवराम महाराज का प्रभाव और रतनशी बापा के भावुक बुलावे:

- रतनशी बापा भावुक भाषणों के लिए सुप्रसिद्ध थे। वह अपने भाषणों से लोगों के दिल जीत लेते और लगाव के वजह से लोग रोने लगते। उनको साथ मिलता ओधवराम महाराज के प्रभाव का। ओधवराम महाराज अपने भाषणों द्वारा श्रोताओं पर ऐसा जबरदस्त प्रभाव छोड़ते के लोग धर्म परिवर्तन कर हिंदू बनने के लिए तुरंत तैयार हो जाते।
- लोगों का हृदय से परिवर्तन हुआ था। किसी ने उन पर जबर्दस्ती नहीं की थी।
- पूर्वजों के सच्चे और महान हिंदू धर्म को जानने की खुशी के साथ उनके दो महान और लोकप्रिय नेताओं पर अटूट विश्वास के कारण लोग हृदय से धर्म परिवर्तन करने लगे।

20. सरल धार्मिक क्रियाओं को अपनाया:

- ऊपर बताए मुद्दों के साथ सरल और पालने लायक धार्मिक क्रिया अपनाने के कारण लोग आसानी का अनुभव करने लगे। लोगों को ओधवराम महाराज ने पेश किए हिंदू धर्म को पालने और समझने में बहुत सरल और व्यावहारिक लगा।
- मूल सनातन धर्म (हिंदू धर्म) में, जाति को विकलांग कर देने वाली सतपंथी दसोंद और अन्य धार्मिक कर भरने की कोई जरूरत नहीं थी।
- धार्मिक कर भरने की फर्ज में से आजादी मिल गई। लोग खुश खुशाल हो गए। उनकी खुशी की कोई सीमा ना रही और भूले हुए सच्चे हिंदू धर्म को फिर से अपनाने लगे।

220

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर ...

21. जाति का धर्म परिवर्तन:

- हिंदू धर्म में दसोंद और धार्मिक कर भरने का कर्तव्य ना होने के कारण जाति में तेजी से प्रगति हुई। लोगों की आर्थिक प्रगति के साथ उनकी कमाई में बरकत होने लगी।
- १९२०के दशक के मध्य में, सनातनीयों की केंद्रीय समाज की रो रचना हुई थी, वह समाज बहुत अच्छी तौर पर काम करता था। यह संस्था सनातनीयों के हित के लिए बनाने में आई थी और धीरे-धीरे पीराणा सतपंथ समाज से भी बड़ी समाज बन गई।
- उसी समय दरम्यान, रतनशी बापा और उनके साथीदारों ने एक सुनियोजित योजना के तहत, गाँवों के आगेवानों को मिलकर उनके दिल जीत ने का काम को अंदर-अंदर चालू रखा।
- थोड़ेही समय में, ओधवराम महाराज की बताई रणनीति चमत्कार दिखाने लगी।
- एक समय ऐसा भी आया की जब लगभग सम्पूर्ण जाति हिंदुओं की मुख्य धारा में जुड़ गई थी।

221

... क.क.पा. जाति में क्रांति की असर

22. औपचारिक और कानूनी संस्था/समाज की रचना:

- ओधवराम महाराज की प्रेरणा हुई और फिर से ऐसा समय आया, जब समाज में शिक्षा की अत्यंत महत्ता लक्ष्य में आई। विद्यार्थियों के लिए समाज ने नखत्राणा में एक बड़ी और आलीशान "पाटीदार बोर्डिंग" बाँध ने में आई।
- नई केंद्रीय समाज, जो लगभग ४ दशक जितनी पुरानी थी, जिसके प्रमुख श्री रतनशी खिमजी खेताणी, मोटी विरणी और घटकोपर मुंबई वाले थे और महा मंत्री श्री नथुभाई नानजी नखत्राणा थे, वह समाज बहुत अच्छे और असर कारक सामाजिक काम करती थी। भविष्य को ध्यान में रख कर, वर्ष १९६० में, इस समाज को औपचारिक और कानूनी रूप देने में आया। आज इस समाज को "कच्छ कड़वा पाटीदार समाज" (संक्षिप्त में "क.क.पा. समाज") नाम से पहचानी जाती है। जिसका नाम बादल कर "अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज" (संक्षिप्त में "अ.भा.क.क.पा. समाज") रखने में आया।
- ओधवराम महाराज और रतनशी बापा के संपर्क में रहने के कारण उनके साथीदार भी बहुत लोकप्रिय बन गए थे। उन्होने इस कानूनी संस्था की बुनियाद रखी और पहले ट्रस्टी और कार्यकारी सदस्य बने। दुर्भाग्य वश उस समय पर रतनशी बापा की तबीयत अच्छी नहीं रहती थी, जिस के कारण समाज की मीटिंग और समारोहों में शामिल रहने के लिए असमर्थ थे।
- यह "पाटीदार बोर्डिंग" का मकान में केंद्रीय समाज का कार्यालय रखने में आया, जो आज भी है।

222

क्रांति के बावजूद सतपंथ कैसे चला?

- किसी भी साधारण व्यक्ति के मन में एक सवाल उठता होगा की अगर सतपंथ, हिंदू धर्म नहीं है और सतपंथ के अनुयायियों को हिंदू धर्म पालना था, तो फिर सतपंथ के साथ वह कैसी टीके रहे?
- ध्यान पूर्वक चिंतन करेंगे तो इसका जवाब मिलेगा।
- सतपंथ के अनुयायियों को दु मुख्य भाग में विभाजित कर सकते है;

1. **जानकार लोग:** इन लोगों को पता है की सतपंथ हिंदू धर्म नहीं है। पर अपनाए हुए धर्म में ही श्रद्धा रख कर, उन्हें वह धर्म पालना है।
2. **अनजान लोग:** यह लोग सतपंथ की सच्चाई से अनजान है। ताकिया के मदद से, सतपंथ के नेताओं ने, इन लोगों पर यह ठोक पीट कर बैठा दिया है की अन्य लोगों की बात न माने और खास कर उनके सनातनी भाइयों को नहीं। दया आती है की आज जे आधुनिक युग में भी यह लोग बेवकूफ बन रहें है और अर्धदग्ध इस्लामी परंपरा को हिंदू धर्म समझ कर पालते रहते है।

223

4.5 पीराणा सतपंथ में अशांति

बुरे दौर के बीच पीराणा सतपंथ में फैली अशांति

224

पीराणा सतपंथ में अशांति ...

1. बिगड़ती परिस्थिति:

- शुरुवात में नारायण बापा का लोगों पर हिंदू धर्म के नाम पर गहरा प्रभाव और पीछे से ओधवराम महाराज, रतनशी बापा और उनके साथीयों द्वारा कारगर और घातक प्रहारों के कारां पीराणा सतपंथ का झूठ के बुनियाद पर बना हुआ पत्ते का किल्ला गिरने लगा।
- लोगों को बहुत अच्छी तरह से समझा आ गया था की जो हिंदू धर्म वह पालना चाहते थे, उसके आजू बाजू पीराणा सतपंथ कहीं फिरकने के काबिल ही नहीं है।
- लोगों को गैर हिंदू धर्म पालने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।
- पीराणा सतपंथ के छिपे भेदों, लोगों के सामने आ गए थे। पीराणा सतपंथ के अनुयायियों की संख्या बहुत जल्दी कम होने लगी। वह हिंदू धर्म अपनाने के लिए मानसिक तौर पर तैयार हो गए थे। रतनशी बापा और उनके साथीयों के प्रयासों में रंग दिखने लगा।

225

... पीराणा सतपंथ में अशांति ...

2. आंतरिक लड़ाई -1931 का कोर्ट केस –(1 / 2):

- उस समय में पीराणा सतपंथ की संस्था विवादों और आंतरिक झगड़ों से घिरी थी।
- १९३१का प्रख्यात कोर्ट केस (Civil Suit No 168 of 1931 before First Class Sub Judge, Ahmedabad) का पीराणा सतपंथ पर आगामी और कायमी असर पड़ा और संस्था का प्रशासन करने का तरीका हमेशा के लिए बादल गया। यह केस सैय्यदों और सतपंथ के अनुयायियों ("काका" के साथ लेकर) के बीच बहुत लंबा चला।
- पीराणा की संपत्ति और दसोंद के पैसे पर अधिकार का विवाद था।
- १९३९ में जब केस न निर्णय आया, तब कोर्ट ने एक ट्रस्ट बनाने का फैसला दिया। इस ट्रस्ट का नाम है, "धी इमाम शाह बावा रोजा संस्थान समिति ट्रस्ट" जिसका रजिस्टरेशन नं "ई-७३८" (E-738) है। यह संस्था आज भी पीराणा सतपंथ की सर्वोच्च संस्था है।
- अकेले काका के साथ नीचे चलती संस्था में, पहली बार सैय्यदों को, कानूनी तौर पर, ट्रस्ट के ट्रस्टी की तौर पर भाग लेने मिला।

226

... पीराणा सतपंथ में अशांति ...

2. आंतरिक लड़ाई -1931 का कोर्ट केस –(2 / 2):

- ट्रस्ट में ७ ट्रस्टी क.क.पा. जाती के होते है और ३ ट्रस्टी सैयद होते है। पीराणा के काका, पदवी के कारण ट्रस्ट के चेरमेन होते है।
- सैय्यदों के हाथ होती क्रियाओं के लिए उन्हें देने के पैसे तय करने में आया। उसी तरह धार्मिक समारोहों में सैय्यदों को देने जाने वाले उपहार भी तय करने में आए।
- तथाकथित हरिवंश के गाड़ी पति के अलावा, पीराणा के सैय्यदों और काका के बीच छोटे मोटे झगड़े चलते ही रहे।
- काका और सैय्यदों के बीच बैर झगड़ों के कारण अनुयायियों की संख्या कम होती गई। उनकी पोल लोगों के सामने खुली हो गई। कुछ कट्टरवादी अनुयायी ही बचे थे।

227

... पीराणा सतपंथ में अशांति ...

3. सजीवन करने के निष्फल प्रयास -(1 / 2):

- पीराणा सतपंथ में अंदर-अंदर झगड़े चलते थे, तब एक जलालशाही सैय्यद, बावा अहमद अली खाकी ने पीराणा के साहित्यों को फिर से लिखने का काम शुरू किया।
- अहमद अली खाकी ने, इमाम शाह के वंशज अशरफ शाह बावा के वंशज होने का दावा किया। वह इमाम शाह की गद्दी के सीधे उत्तराधिकारी ना होने के बावजूद, खुद को पीराणा सतपंथ के जीवित इमाम (भगवान विष्णु के १०वे अवतार) होने का दावा किया।
- सतपंथ में भगवान विष्णु के १०वे अवतार के वारिस को "हरिवंशी" माना जाता है। इसलिए कुछ सतपंथीयोंने उन्हें "हरिवंशी सैय्यद" के तौर पार मान ने लगे।
- पीराणा सतपंथ की बिगड़ती हालत से वह वाकिफ थे और उसके उपाय में उन्होने ताक़िया का प्रयोग करना शुरू किया। उन्होने साहित्यों में से "अरबी" शब्दों को निकाल कर उनकी जगह पर "हिंदू" शब्दों को रखना शुरू किया।
- वेदों, पुरानों, कुरान, बाइबल का गहरा अभ्यास किया और संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व भी हासिल किया।
- उन्होने कई पुस्तकें छापे, जिसमे सतपंथीयों का "दस अवतार" नाम का पुस्तक मुख्य है।

228

... पीराणा सतपंथ में अशांति ...

3. सजीवन करने के निष्फल प्रयास -(2 / 2):

- चतुराई का प्रयोग कर सतपंथी दस अवतार में अरबी शब्दों के अर्थ को हिंदू / भारतीय भाषा में समझाया।
- पुस्तकों की बातों को गुजराती भाषा में लोगों (खास कर क.क.पा. जाति) समक्ष इस तरह प्रस्तुत करने को शुरू किया, जाने वह पुस्तकें सच्चे हिंदू धर्म के ही पुस्तक हो। इस में उन्हें कुछ सफलता भी मिली।
- उनकी दलील थी के भाषा केवल बात पहुंचाने का माध्यम है। भले साहित्यों को मूल अरबी भाषा का प्रयोग कर तैयार करने में आया हो, पर वह हमेशा से हिंदू धर्म के साहित्य रहे है। साहित्यों के शब्दों बदलते समय, चतुराई पूर्वक मूल इस्लामी मूल्यों के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की थी।
- उनके दस अवतार में संस्कृत के श्लोकों का झूठा अर्थ घटन पेश किया और इसके द्वारा इस्लामी मूल्यों को शामिल कर देने में आया।
- इस्लामी मूल्यों को संभालने का एक ज्वलंत सबूत है; उदाहरण के तौर पर, उनके पुस्तक में उन्होने गाय की हत्या को सही/न्यायी ठहराने की हिम्मत दिखा दी। देखो "गौ मेध यज्ञ", दस अवतार का पन्ना नं ३४८।
- उनके तरफ से किए कई कोशिशों के बावजूद, वह सतपंथ को हिंदू धर्म के तौर पर पेश करने में निष्फल रहे। वह केवल कुछ अनुयायियों को ही संभाल / मना सके। 229

... पीराणा सतपंथ में अशांति

4) १९७३ कोर्ट केस:

- वर्ष १९७३ में एक दूसरा कोर्ट केस दाखिल करने में आया। १९३९ के कोर्ट केस दिये निर्णय ऊपर फेर बदल करवाने के लिए अर्जी करने में आई थी। बादमें वर्ष १९७६ में वह केस, गुजरात हाई कोर्ट के सामने पेश हुआ था (Case no: First Appeal No. 172 of 1976)।
- **उन्होने कोर्ट के सामने अपनी पेशी में कहा की इमाम शाह जन्म से मुसलमान थे और मृत्यु तक मुसलमान रहे। वह रोज नमाज अदा करते थे और कभी भी हिंदू संत नहीं थे।**
- **उनके सामने सतपंथीयों के अपने पेशी में काका की इमाम शाह निष्कलंकी नारायण को मानते थे, जो भगवान विष्णु का १०वां अवतार है। इमाम शाह के पुत्र नूर मुहम्मद शाह को आदि विष्णु के तौर पर और उनकी माता को आदि शक्ति के तौर पान मानने में आता है।**
- कोर्ट ने किए निष्कर्ष के अनुसार कोर्ट ने स्पष्ट कहा की सैय्यद (यानी सतपंथीओं के धर्म गुरु) हमेशा धर्म से मुसलमान थे और यह भी कहा की ट्रस्ट में से दिए जाने वाले हक्क और अन्य पैसों देने के लिए वह सतपंथी होना जरूरी नहीं है।
- अनुयायी लोग उलझन में पद गए और किस की बात पर भरोसा करे इस बात का पता नहीं चलता था।
- अनुयायियों की संख्या भयानक, निचले स्तर पर आ पहुंची और हाथों हाथ संस्था की आर्थिक परिस्थिति भी बहुत ही बुरी हो गई थी। 230

4.6 नवनिर्मित ताकिया

करसन काका को गद्दी पर बैठा कर पीराणा को सजीवन करने का प्रयास

231

नवनिर्मित ताकिया...

1. पुष्टभूमि (Background):

- १९३० और १९९० के बीच कुछ ही दशकों में, कच्छ के इमाम शाही पाटीदारों की बहुमती वाले सतपंथी गाँवों में शानदार परिवर्तन हुए।
- हर एक गाँव में परंपरागत सतपंथी (पुराने) “खाना” (इस्माइली “जमात खाना” का संक्षिप्त नाम) के पास, नए “नियमित” हिंदू लक्ष्मीनारायण भगवान के मंदिर बाधे।
- जिस संख्या में लोग सतपंथ छोड़ ने लगे, वह पीराणा के सूत्रधारों के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गया।
- इस समय पर, सज्जाद नशीन का दावा करने वाला शमशुद्दीन खाकी, जो खुद को पीर और छिपे इमाम का मुख्य उत्तराधिकार होने का दावा करता था, उसने फिर से ताकिया का प्रयोग करना शुरू कर दिया।
- पहले के स्लाइड १९२ से १९४ में बताए अनुसार, जिन सतपंथीयों को, इमाम शाह की गद्दी की उत्तराधिकारी की परंपरा (तथाकथित हरिवंश परंपरा) का अंत हो जाने की बात का पता नहीं, वह लोग अंध विश्वास रख कर उन्हें मानते है।
- अपने पाटीदार मित्रों की मदद लेकर, अपने पुराने मित्र, पटेल करसन अरजण छाभैया को “काका” की गद्दी पर बैठा दिया।

232

... नवनिर्मित ताकिया ...

2. नवनिर्मित ताकिया - (1 / 3):

- सतपंथ के अस्तित्व को खतरे में देखकर, गुप्ती समुदाय के देता यानी मुख्य काका अर्थात कबर के मुजावर या संरक्षक ने, पीरज़ादा शामशुद्दीन बावा खाकी (सज्जाद नशीन का दावा करने वाला) के मार्ग दर्शन में, सतपंथ में **बाह्य** हिंदूवादी सुधार करना शुरू किया।
- इसका हेतु केवल इतना ही था के सतपंथ अनुयायियों को अपने सनातनी भाइयों की निंदा ना सहनी पड़े और सतपंथ को मुस्लिम धर्म समझ कर छोड़ चुके अनुयायी फिर से सतपंथ में वापस आ जाए।
- इसके वजह से "गुप्ती" (जो लोग अपनी धार्मिक पहचान छिपाते है) लोग अपनी पहचान एक रूढ़िवादी हिंदू होने का मजबूत दावा कर सके और इस्लाम का कोई प्रभाव न होने का दावा भी कर सके।
- उनके नए निर्मित "खाना"ओं का आकार भी एक परंपरागत हिंदू मंदिरों के जैसे देने में आया। उन खानाओं के नाम तथाकथित विष्णु के १०वे अवतार आधारित "निष्कलंकी मंदिर" जैसे हिंदू नाम रखने में आए।
- उसी तरह पीराणा की दरगाह का नाम बदल कर *"समाधि"* रखने में आया। और पीराणा को *"प्रेरणा पीठ"* का नाम देने में आया। काका को *"महाराज"* के तौर पर संबोधन करना शुरू किया।

233

... नवनिर्मित ताकिया ...

2. नवनिर्मित ताकिया - (2 / 3):

- जानकार और विद्वान सतपंथीयों को "गीनान" को फिर से लिखने का नाज़ुक काम देने में आया, जिस के भक्तिमय गीतों में से इस्लामी शब्दों और संदर्भ को बदल कर उनकी जगहों पर हिंदू शब्दों को रखने में आया।
- हाल के पीर का दावा करने वाले शमशुद्दीन खाकी (अभी उनके उत्तराधिकारी पुत्र सलाउद्दीन खाकी) के स्वर्गस्थ पिता अहमद आली खाकी ने सतपंथ पर लिख प्रकाशित पुस्तकों और लेखों पर प्रतिबंध लगा दिया। और ऊपर बताए अनुसार लिखें हुए, (पुराने पुस्तकों का मूल इस्लामी संदेश ना बदल कर), बाह्य हिंदू रूप वाले, नए पुस्तकों का खुले तौर पर पीराणा के पुस्तकालय में प्रदर्शित कर उसकी बिक्री करना शुरू कर दिया।
- एक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित लेखक और शोधकर्ता, जिन्हें इमामशाहीयों के लेखों पर अधिकार होने का माना जाता है, वह संयोग से, कच्छ के एक गाँव में, सतपंथ के पुराने धार्मिक साहित्यों को, बाह्य हिंदू रूप देने का काम करने वाले एक व्यक्ति से भी मिले थे।

234

कुछ बदलावों के नमूने

पुरानी परिभाषा	नई परिभाषा
हुसैन के परिवार में	हरिवंश में
अली शाह / नर मुहम्मद शाह	निष्कलंकी नारायण
शाह / इमाम	साहब / हरी / विष्णु
मस्जिद / खाना / जगयूं	मंदिर
सदरुद्दीन	सहदेव
कुदरती धर्म	महा धर्म
खुदा	निष्कलंकी
कबर	समाधि
वफ़ात पामे	समाधि ली
साहेबजी	परमात्मा

235

फेरबदल को किस तरह से समझाया?

- भाषा को केवल विचारों की ले-दे कर ने का एक माध्यम है, इस सिद्धांत का इस्तेमाल करने में आया।
- एक बड़े वर्ग के अनुयायी अरबी भाषा को मुसलमानों के साथ जोड़ का देख ते है और उसके कारण उन्हें असुविधा होती है। अन्य कौम के लोगों के सामने अरबी भाषा के शब्द वाले धर्म के बारे में बातें करने से शर्माते है। इसलिए अरबी शब्दों को बादल कर हिंदू / भारतीय शब्दों को रख देने में आया। अगर यह बदलाव नहीं लाते तो बड़ी संख्या में अनुयायी सतपंथ को छोड़ देते, जो सतपंथ सहन कर ने की हालत में नहीं था।
- दूसरी तरफ, इस्लाम के लिए लगाव रखने वाले पक्ष के सतपंथी अनुयायियों को इस तरह से समझाया की... किस की पूजा करते हो वह महत्व का है, ना की कौन सी भाषा में करते हो। "निष्कलंकी नारायण" कहो या "अली" कहो, कोई फरक पड़ता नहीं है। दोनों "अल्लाह" के नाम है। वह हिंदू देवों के नाम नहीं है। इस तरह से समझा कर इस्लाम के मूल तत्वों को पिछले दरवाजे से अंदर लाने के लिए सुनिश्चित किया है।
- इस तरह से समझाए जाने के बाद अगर कोई सतपंथी ना माने और असली/पुरानी पुस्तकों और बात को पकड़ कर रहे तो ऐसा जवाब देने में आता है के अगर आपको ऐसा लगता हो की मूल सबदों को बदलना नहीं था, तो मूल पुस्तकों को पढ़ने से तुम्हें कौन रोक रहा है? मूल पुस्तकों को पढ़ो ना... ऐसा करके चित भी मेरी पट भी मेरी।

236

... नवनिर्मित ताकिया ...

2. नवनिर्मित ताकिया - (3 / 3):

- गुजरात में हिंदू राष्ट्रियता की भावना मजबूत होने के कारण पीराणा परंपरा को बचाने के हेतु से यह फेरबदल करने में आए।
- "अधिकृत" तौर पर किए फेरबदल ताकिया के कारण करने में आए है।
- ताजा बदलावों के कारण ऐसा देखने मिला है के सतपंथी समाज की नई पीढ़ी यह फेरबदल को तुरंत स्वीकार लेते है। जिस के कारण वह सनातनी भाइयों के साथ एकता और सहकार बनाए रख सके। हाथों हाथ, "हिंदू वादी" परिस्थिति में राहत का अहसास कर सके।
- इसके परिणाम से नवयुवा वर्ग को, सतपंथ का इस्लाम के साथ संबंध है, इस हकीकत से सम्पूर्ण तौर पर अनजान है।

237

... नवनिर्मित ताकिया ...

3. मूल पहचान को टीका कर रखना – (1 / 2):

- गहन हिंदू दिखावा अपना कर, साहित्यों और क्रियाओं में "फेरबदल" करने के पीछे मुख्य कारण सतपंथ की अलग पहचान टीका कर रखने का प्रयत्न था।
- शमशुद्दीन खाकी ने, ऐसे समय पर की जब अनुयायियों की संख्या चिंता जन रीत से घट रही थी, तब हिंदुत्व के हिमायतीयों द्वारा होती टीका को अटका कर, सतपंथ के अस्तित्व को सुनिश्चित किया।
- यह कोशिश आसान नहीं थी। सर्कस के कला बाजी में संतुलन रखने के जैसा कठिन कम था। एक तरफ सतपंथ को हिंदू रूप देने का काम था तब दूसरी तरफ उसकी अनूठी पहचान को संभालना था (हिंदू धर्म में मिल न जाए) उसका खास ध्यान रखना जरूरी था।
- दूसरी तरफ, उनके पिता, अहमद आली खाकी, द्वारा प्रकाशित पुस्तकों और लेखों ने उनका काम आसान कर दिया था। क्यों की वह लेखों में "हिंदू" संदर्भ का इस्तेमाल करके पहलेसे तैयार करने में आए थे।

238

... नवनिर्मित ताकिया ...

3. मूल पहचान को टीका कर रखना – (2 of 2):

- मुंबई सार्वजनिक ट्रस्ट अधिनियम १९५० के अंतर्गत पीराणा के ट्रस्ट का केटेगरी "E" में रजिस्टर्ड होने के कारण करसन काका को मदद मिली। अक्षर "E" में बिन धर्मी संस्थाओं को रजिस्टर करने में आता है। इसलिए अधिकृत तौर पर, सतपंथी क्रियाओं को सच्चे मुस्लिम और सच्चे हिंदू क्रिया है ऐसा ना कह सकने के लिए कारण मिल गया।
- १३-०८-१९९८ को करसन काका के सामने दाखिल हुए एक कोर्ट केस में उत्तर देते हुए करसन काका ने कहा की पीराणा में पूजा करने हेतु भगवान की त्रिआयामी (मूर्ति) चित्र नहीं लगाने में आई। जो चित्र लगाने में आए है, वह केवल सजावट के लिए ही है।
- हिंदुओं के धार्मिक और पूज्य "ॐ" चिन्ह का **दोहरा मतलब निकाल कर सतपंथी पुस्तकों में इस तरह से छापने में आया के हिंदुओं के** ॐ को दाहिने से बाएं पढ़े तो, अरबी शब्दों में "अली" लगे (देखो स्लाइड नं ३७ का फोटो)।
- ताकिया के सिद्धांतों के अनुसार, सुधार सिर्फ बाहय थे। सच्ची पहचान कभी भी बदलने में नहीं आई।
- रणनीति बहुत सरल थी। ताकिया का प्रयोग कर ऐसी परिस्थिति निर्माण करने में आई के जिसमे जब चाहिए तब सतपंथ को हिंदू धर्म के साथ जोड़ सके और जरूर पड़े तब इस्लाम का भाग भी बता सके। साहित्यों और क्रियाओं को दोहरा अर्थ देकर, जरूर पड़े वैसा अर्थ निकाल कर हिंदू और मुस्लिम धर्म के साथ जोड़ सके।

239

हिंदू धार्मिक नेताओं की भूमिका

- ताकिया के मदद से वर्ष १९३१ में, सैय्यद अहमद अली खाकी, इस्लामी धारणाओं को वैदिक तत्वों के साथ जोड़ने में इतने सफल रहे की हिंदू महासभा ने सतपंथ को शंका मुक्त कह कर वैदिक धर्म होने की घोषणा की।
- १९९० से २००० के बीच के दशक में सतपंथीयों दवारा, ताकिया का प्रयोग कर, साधु सम्मेलनों का भी आयोजन किया। और उसमें वह काफी कद तक सफल भी रहे।
- उसके बाद, अविचलदास महाराज जैसे कुछ हिंदू धार्मिक नेताओं ने पीराणा सतपंथ को एक हिंदू धर्म का पंथ होने की घोषणा की।
- पर, आमतौर पर यह माना जाता है की हिंदू नेताओं ने तथाकथित प्रमाण पत्र, कुछ शर्तों के आधीन दिये थे। वह शर्ते थी के पीराणा के संचालक पंथ को हिंदू धर्म की तरफ मोड़ेंगे और सतपंथ को इस्लाम की तरफ जाने से रोकेंगे।
- पर हिंदू धार्मिक नेताओं को पीराणा दवारा ताकिया के होते प्रयोग की जानकारी नहीं होने की पूरे पूरी संभावना दिखती है। वास्तव में हिंदू धार्मिक नेता ताकिया के शिकार हुए है ऐसा दिखाई देता है।
- इसके कारण काका का दोनों पक्षों के साथ संबंध रख सके। हिंदू लोग उनके काम को पसंद करने लगे और उन्हें साथ देने लगे। तब दूसरी तरफ, मुसलमानों को पता है की काकी ताकिया का प्रयोग कर रहे है। इसलिए हाल की परिस्थिति कुछ दिनों के लिए ही है। जब हिंदुओं का दबाव कम हो **जाएगा, तब इस्लामी मूल के तरफ वापस मुड़ जाएगे।**

240

4.7 अ.भा.क.क.पा. समाज की उदारता और उसके साथ धोखा

अ.भा.क.क.पा. समाज के लोगों की भावनाओं को चोट पहुंची

241

अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा ...

1. अ.भा.क.क.पा. समाज की उदारता:

- १९८० के दशक के अंत में लगभग सम्पूर्ण जाती, हिंदू धर्म अपना चुकी थी।
- बाकी के बचे कुछ सतपंथी लोगों को हिंदू धर्म में मिला लेने के लिए अ.भा.क.क.पा. समाज के लोगों ने उदार नीति को अपना कर उन्हें दिल से बुलाया। समाज के अन्य लोगों के संपर्क में आकार जल्द से जल्द अपना सतपंथ धर्म छोड़ देंगे, और अपने ही भाई खुद से अलग न हो जाए ऐसी उच्च भावना लेकर सतपंथी लोगों को समाज में साथ में रखने में आए।
- दुर्भाग्य वश अ.भा.क.क.पा. समाज के नेताओं को ताकिया की कोई जानकारी नहीं थी। इसके कारण सतपंथी लोग ताकिया पालते है, इस बात से वह सम्पूर्ण तौर पर अनजान रहे। बाह्य हिंदू दिखावे के कारण वह धोखे में रहे। सतपंथी लोग फेर-बदल कर हिंदू धर्म में मिल जाने का प्रयत्न कर रहे है, ऐसा समाज कर वह निश्चिंत हो गए।
- समाज के साधारण सभ्यों को भी ऐसा लगता था। सतपंथी लोग हिंदू धर्म अपनाने के सच्चे रास्ते पर चल रहे है और जल्दी से हिंदू बन जाएंगे ऐसा समझ रहे थे। किसी ने सतपंथी लोगों पर शंका नहीं की।

242

… अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा …

2. सामाजिक संबंधों को फिर से जोड़ा:

- जब सनातनी या हिंदुओं की नई समाज रचने में आई, तब सतपंथीयों के साथ बेटी की लेन देन सहित जे सभी सामाजिक संबंधो को काटने में आया था। वह संबंधों को फिर से जोड़ने में आए।
- १९८० के दशक के अंत में बचे हुए कुछ सतपंथीयों को समाज में मिलने के हेतु से, अ.भा.क.क.पा. समाज के लोगों ने उदार नीति अपना करे कटे सामाजिक संबंधों को फिर से जोड़ने की शुरुवात ही।
- अ.भा.क.क.पा. समाज की उदार नीति के कारण सतपंथीयों पर समाज विश्वास करने लगी।
- सतपंथीयों को भी समाज का एक भाग होने का मानने में आने लगा। अन्य हिंदू सभ्यों के जितना उन्हें भी मान सन्मान मिलने लगा।

243

… अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा …

3. समाज पर परोक्ष नियंत्रण:

- पर सतपंथीयों ने चतुराई से एक रणनीति बनाई और उसके मुताबिक धीरे-धीरे अ.भा.क.क.पा. समाज ("समाज") की संस्थाओं में फैलते गए। जल्दी से केन्द्रीय समाज और उसके नीचे गाँव स्तर की समाजों में उच्च पद पर बैठ गए।
- षड्यंत्र इतना गहरा था के समाज के सनातनी नेताओं की ताकत और कमजोरियों की नोंध ले जाती थी।
- सनातनी नेताओं की कमजोरी का लाभ ले कर, उनके बुरे समय में उन्हें मदद कर, उन्हें परोक्ष तौर पर सतपंथीयों के एहेसान तले ले लेते थे।
- अपने एहसान तले दबे सनातनी नेता उनका विरोध नहीं कर पाएंगे, इस बात से सतपंथी लोग परिस्थिति का लाभ लेने लगे। अ.भा.क.क.पा. समाज को कमजोर कर देने का उनका छिपा कार्यक्रम चोरी छिपे आगे बढ़ाने लगे।
- परिस्थिति इतनी बुरी हो गई थी के समाज और समाज के नेता (सनातनी नेता) परोक्ष रीत से सतपंथीयों के नियंत्रण में आ गए।

244

... अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा ...

4. चतुराई भरा प्रचार (1/2):

- अ.भा.क.क.पा. समाज के उपर नियंत्रण रखने वाले सतपंथी नेता पीराणा सतपंथ और उनकी संस्थाओं के साथ ही वफादार रहे।
- अ.भा.क.क.पा. समाज कमजोर होती गई, पर सतपंथी लोग पीराणा सतपंथ की संस्थाओं में धार्मिक और सामाजिक प्रगति करते गए। तब दूसरी ओर अ.भा.क.क.पा. समाज में बैठे उनके लोगों के सनातनीयों की प्रगति रोकने के सभी प्रयास करते रहते।
- इस सिद्धांत के गलत प्रयोग की मदद से, समाज में किसी को भी धार्मिक मुद्दे उठाने देने में नहीं आता था। सतपंथी लोगों को जो चाहिए था वह मिलने लगा। ऐसा करने से सनातनीयों के पास उनके धार्मिक विचार, चिंतन, व्यथा और बातों इत्यादि को चर्चा करने का मंच छिन चुका था।

  नोंध: समाज में परोक्ष नियंत्रण मिलने के बाद, उन्होने समाज और धर्म अलग होने का नया सिद्धांत पैदा किया। समाज में किसी भी व्यक्ति को कोई भी धर्म पालने की छुट है, ऐसी बातें करने लगे। (नोंध: यह बात भारत के संविधान के अनुसार भले सही हो, पर जब लोग एक जाति और धर्म के आधार पर इकठ्ठा हो कर अपने और अपने जाति भाइयों की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक उन्नति के लिए कोई संस्था बनाई हैं, जिसकी बुनियाद में एक ही धर्म के नियमों को पालना हो, तब उस संस्था के लोगों को कोई भी अन्य धर्म पालने के अनुमति नहीं हो सकती। समाज के धर्म न माने वाले लोग चाहें तो अपनी एक अलग संस्था बना कर अपना धर्म पाल सकते है, पर इस संस्था में रहना है तो उसके सभी नियमों का पालन करना जरूरी है। लायन्स क्लब, रोटरी क्लब, स्पोर्ट्स क्लब, मकान सोसाइटी जैसी संस्थाओं में किसी भी धर्म के लोग हो सकते है, पर समाज में नहीं।) (Check Gujarati version)

245

... अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा ...

4. चतुराई भरा प्रचार (2/2):

- रणनीति बहुत सरल थी। समाज में कोई भी व्यक्ति कोई भी धरम पाल सकता है, ऐसी बात चला कर समाज में धर्म के मामले में शून्य अवकाश (vacuum) पैदा कर देना।
- इसके कारण, सनातनीयों के पास धर्म का कोई मुखी स्थान न बच पाए और धार्मिक मुद्दों पैन वह उलझन में पद जाए और कोई भी अन्य धार्मिक प्रवाह में आसानी से मिल सके ऐसे कमजोर बन जाए। परिणाम स्वरूप वह विभाजित हो जाय और कमजोर बन कर बैठ जाय।
- जब समाज में यह कमजोरी बढ़ जाए, तब सतपंथ धर्म को लोगों से सामने फिर से पेश कर, उन्हें सतपंथ के प्रवाह में मिला देने में आए।

246

... अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा ...

5. प्रचार का असर:

- चतुराई से बनाई रणनीति और प्रोपगंडा काम कर गया। सनातनीयों के हित की बातें करने वाले दबाव में आ गए। समाज और धर्म अलग है ऐसी बातें कह कर सनातनीयों को समाज में बोलने भी नहीं दिया जाता था।
- सनातनीयों के पास अपनी बात रखने के लिए कोई मंच आ होने के कारण, उनके मन में क्रोध, बेचैनी और नाराजगी उबल ने लगी।
- दूसरी ओर सतपंथीयों के पास अपने धार्मिक उद्देश्यों को पार कर ने के लिए उनकी संस्था तैयार थी। उसके मदद से अपने धार्मिक काम परी पूर्ण करते रहे। धार्मिक मुद्दों पैन सनातनी लोग लगभग मूक प्रेक्षक बन गए।
- जो लोग सनातनीयों के हित के काम करते, उनका मनोबल तोड़ने के लिए, उनके विरुद्ध झूठी पुलिस शिकायतें और कोर्ट में झूठे मुक़दमे चलाए जाते थे।

247

... अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा ...

6. रमेशभाई (रमणीकभाई) वाघड़िया के साथ क्रूर घटना –एक उदाहरण:

- वर्ष २००५ में रमेशभाई ने, नारायण रामजी लींबाणी की महान पुस्तक "पीराणा सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश" में से कुछ मुख्य लेखों को लेकर परचे / पेम्पलेट छपाए और उन्हें उनके गाँव के लोगों में वितरित किए। स्वाभाविक है की सतपंथी लोगों को यह बात पसंद नहीं पड़ी।
- सतपंथीयों ने प्रपंच रच कर एक झूठी पुलिस और कोर्ट फरियाद दायर की। उसमें उन्होने ऐसा दावा किया के बेंगलोर (बेनगलुरु) में रहने वाले रमेशभाई, उनेके पिता और दादाजी, पीराणा जा कर धाक धमकी कर मार पीट की। अपना केस और मजबूत करने के लिए उन्होने रातों रात झूठे साक्षी दार / समर्थक भी ढूंढ लिए।
- जब की वास्तव में इनके वाघड़िया परिवार का कोई भी सदस्य कभी भी पीराणा गए ही नहीं।
- रमेशभाई को पाठ सिखाने के लिए, उनके परिवार को षड्यंत्र के तहत फंसा कर उन्हें परेशान का दुष्कृत्य पीछे का मुखी उद्देश्य, समाज के सामान्य वर्ग को एक ठोस संदेश देना था कि हमारे खिलाफ जाओगे तो तुम्हारा बहुत बुरा हाल होगा। पर जोश में आकार होश खो बैठे और भूल गए के रमेशभाई के दादाजी उस समय ९७ वर्ष के थे। जो उम्र मैं चला भी नहीं जा सकता, उस उम्र में उन्होने मार पीट की? और वह भी १५०० की. मी. दूर जाकर?
- किसी भी व्यक्ति के मन में गुस्सा और आश्चर्य उत्पन्न हो जाए ऐसा यह उदाहरण है।

248

... अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा ...

7. अ.भा.क.क.पा. समाज लगभग विकलांग:

- इस दौरान, झूठी पुलिस शिकायतें और कोर्ट केसों की संख्या चिंताजनक स्तर पर पहुँच गई। कई गांवों में झूठे केसों की असख्य किस्से देखने मिले। सभी किस्सों के पीछे का मुख्य हेतु सनातनीयों को परेशान कर उनके मुंह बंद करवाना था।
- झूठे पुलिस शिकायतें और कोर्ट केस दर्ज करने का कोई मौका छोड़ा नहीं जाता, जिससे समाज में डर का संदेश भेज सके के... **सतपंथीयों के सामने बोलोगे तो बुरा हाल होगा।**
- लोगों के बीच भय का वातावरण पैदा करने में काफी हद तक सफल भी रहे। इसके कारण सनातनीयों के सामने, जब भी सतपंथ की बात हो, तब उनकी प्रतिक्रिया ऐसी होने लगी के... "जाने दो, कौन माथापच्ची करे और सतपंथीयों की दुश्मनी मोल ले"।
- किसी के साथ के बगैर, सनातनी लोग असहायता का अनुभव करने लगे। सनातनीयों की केन्द्रीय समाज लगभग निष्क्रिय बन चुकी थी। लोगों को समाज का गौरव और सक्रियता को स्थापित करने के लिए कोई रास्ता सूझता नहीं था।

249

... अ.भा.क.क.पा. समाज के साथ धोखा

8. धोखा सम्पूर्ण था:

- गाँव-गाँव में सतपंथ के अत्याचारों की बातें होती। पर किसी में उसके खिलाफ बोलने की हिम्मत और ताकत नहीं थी।
- सतपंथीयों को मान सम्मान से अपने साथ मिलने की "सदभावना" जो सनातनीयों अपनाने की उदार नीति दिखाई थी, उसके बदले में उन्हें धोखा मिला। उनके पीठ पीछे खंजर घोंपा था।
- सहनशीलता और उदारता का जो रास्ता अपनाया था उसका सतपंथीयों ने सनातनीयों को कमजोर करने के लिए गैर उपयोग किया।
- ***समय बदल गया था। रणनीति बदलने की जरूरत दिखी।*** पूज्य ओधवराम महाराज की प्रेरणा से रतनशी बापा और उनके साथीदारों ने, जो "सदभावना" भरी असर कारक रणनीति को अपनाई थी और उनके नक्शे कदम पर चल कर बड़े बुज़ुर्गों ने जो सतपंथी लोगों के लिए समाज के "दरवाजे" "खुले" रखे थे, वह दरवाजों को हमेशा के लिए "बंद" करने का समय आ चुका था।

250

4.8 मवाल

(एक समाज द्रोही व्यक्ति)

सनातनी समाज में सनातनी बन कर रहने वाला सतपंथी

251

अभी हम देखेंगे के
सतपंथीयों ने किस की मदद से
सनातनी समाज में अपना
काम करवाते...

जवाब है "मवाल" की
मदद से

252

"मवाल" यानी कौन?...

"मवाल" यानी कौन? (1/4):

- यहाँ, "मवाल" ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है की जो बाह्य रूप से एक सच्च "सनातनी" होने का दिखावा करते है, पर अंदर से सतपंथी ही होता है। उसका मुख्य काम, सनातनीयों के साथ रहकर सतपंथ विषय पर सनातनीयों में फुट डालना।
- सरल भाषा में कहें तो, "मवाल" यानी एक सनातनी समाज द्रोही व्यक्ति, जो "सतपंथीयों का दलाल / वकील / जासूस" बन कर सनातनी समाज को अंदर से दीमक के जैसे खा कर खोखला देता है।
- ऐसे मवाल व्यक्ति को पहचानना बहुत कठिन होता है। पर इसके बावजूद ऐसे व्यक्ति को उसकी बातों से पहचाना जा सकता है। एक मवाल की "मवालवादी" बातों में नीचे बताए कुछ लक्षण देखने मिलते है;

1. **मैं भी आप ही के मत का हूँ:** सतपंथ विषय पर कोई भी बात शुरू करने से पहले यह बात कहेगा के मैं भी आपके (यानी सनातनीयों) मत का हूँ। आप खुले आम काम करते हो, मैं अंदर-अंदर काम करता हूँ। *(उसे कभी पुछना के तुम्हारे काम का फल आज तक क्यों नहीं दिखाई दिया? सनातनीयों के काम का परिणाम तो सारे जग के सामने है। बातों के अलावा कौन सा काम किया है? जरा हमें भी तो समझाना।*

253

..."मवाल" यानी कौन?...

"मवाल" यानी कौन? (2/4):

2. **धर्म के नाम पर झगड़े:** समाज में धर्म के नाम पर झगड़े क्यों?... समाज में सभी को कोई भी धर्म पालने की छूट है... धर्म के नाम पर झगड़े नहीं होने चाहिए... मैं मानव धर्म में मानता हूँ... कोई सतपंथ पालता है तो हमें क्या तकलीफ हो सकती है... इत्यादि। *(ऐसी ढीली नीति बातें करना।)*
3. **सुधार गए है:** अभी सतपंथ में पहले जैसा मुसलमानी कुछ नहीं रहा है। खुद को हिंदू कहलाते है। उनके धार्मिक पुस्तकें भी बादल गए है। जैसे लक्ष्मीनारायण, सत्य-नारायण, स्वामी नारायण को मानते है, वैसे ही वह निष्कलंकी नारायण को मानते है। तो फिर हमारे और उन लोगों के बीच क्या फर्क है? *(पुस्तकों में "अली" के नाम को बदल कर "निष्कलंकी नारायण" लिखने से उनका भगवान बदलता नहीं है। ताकिया के कारण भले उन्होने बाह्य तौर पर बदलाव किए हो, या खुद को हिंदू कहलाते हो, पर वास्तव में वह एक मुसलमान धर्म को ही पालते है।)*
4. **भाई-भाई:** सतपंथी लोग तो अपने ही भाई है। हमारा खून एक है। उसे अलग कैसे करें? *(लगाव भरी बातें कर, जिससे सनातनी लोग भावुक बन कर चुप बैठ जाए। पर सनातनी भूल जाते है की "एक" सतपंथी अपने धर्म के लिए बाकी के परिवारों को छोड़ ने के लिए तैयार हो जाता है, पर धर्म छोडता नहीं है। इन हालत में भाई-भाई की बातों का कोई स्थान नहीं है।)*

254

…"मवाल" यानी कौन?…

"मवाल" यानी कौन? (3/4):

5. **थोड़ा समय दो:** सतपंथीयों को थोड़ा समय दो भाई। कई सालों से वह सतपंथ पालते आ रहे है। तो रातों रात सतपंथ को कैसे छोड़ दे? *(सनातनी अभियान को २२५ से भी ज्यादा वर्ष हो गए है। और कितना समय चाहिए? अगर गंभीर होते तो इतने दिनों में सतपंथ को छोड़ दिया होता।)*

6. **संबंध:** हमारा सतपंथीयों के साथ रोटी बेटी के संबंध है। उनकी बेटियों हमारे घरों में है और हमारी बेटियों उनके घरों में। तो हम संबंधों को कैसे तोड़ सकते है? *(पर भूल जाते है के अगर आज सतपंथ ने नाम वाली कैंसर की गांठ को समाज में से काट नहीं फेंके तो, वह गांठ बढ़ती जाएगी, और कल कई अन्य बेटियों को बलिदान देना पड़ेगा।)*

7. **मुसलमान बन जाएंगे:** अगर उन्हें सुधारना हो तो उन्हें साथ रखना जरूरी है। नहीं तो वह आगे चल कर मुसलमान बन जाएंगे। *(पर साथ में रखोगे तो सनातनीयों को बिगाड़ेंगे, खुद तो नहीं सुधरेंगे।)*

255

…"मवाल" यानी कौन?…

"मवाल" यानी कौन? (4/4):

8. **एकता और अखंडता:** हम सब एक है। हमारी एकता और अखंडता बनी रहेगी तो समाज किसी भी मुश्किलों का सामना कर सकता है। आज के समय में एकता बहुत जरूरी है। पानी में डंडा मारोगे, तो पानी अलग नहीं होगा…इत्यादि। *(पानी को जिस तरह से फिल्टर (साफ) किया जाता है, उसी तरह सनातनी समाज रूप इस पानी को साफ करना क्या जरूरी नहीं है? सनातनी समाज छोटी बड़ी जो भी रहे, पर साफ तो रहेगी। अगर सतपंथ बगैर समाज रहेगी तो, एकता तो रहेगी ही।)*

9. **सतपंथ की निंदा करना बंद करो:** एक मवाल सनातनीयों को कहेगा कि अब बहुत हुआ। सतपंथ विषय पर लोग अब सब कुछ जानते है। जिससे विरोध करना बंद करो और अपने सनातन धर्म की विशेषताओं का प्रचार करो। *(अरे भाई क्या सभी सतपंथी और सनातनी लोग सत्य और असत्य समझ गए है? क्या सम्पूर्ण जाती सुधर गई है? सतपंथ विषय को जीवित रखना हमारे अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है। इस वजह से हमारी नई पीढ़ी इतिहास से वाकेफ रहकर सतपंथ के ताकिया का मुकाबला कर पाएंगे।)*

- ऊपर बताए मुद्दे तो केवल कुछ नमूने है। एक मवाल की सारी बातों के पीछे एक हेतु तो होता ही है, और वह है की किसी भी तरह से सनातनीयों को ठंडे कर उन्हें उनके कार्य में नरम कर देना, जिससे सतपंथीयों को कोई नुकसान ना हो।
- हाथों हाथ मवालों का एक और महत्व का काम भी होता है। और वह है सनातनीयों की बातों को सतपंथीयों तक पहुंचाना। ऐसा करने के लिए सनातनीयों के संपर्क में रहकर उनका विश्वास जीत कर (उदाहरण के तौर पर सामाजिक कार्यक्रम में बड़ा दान देकर पैसों के ज़ोर पर), सनातनीयों की व्यूह रचना, रणनीति, विचार इत्यादि जान कर, सनातनीयों को धोखा देकर, उनके पीठ पीछे खंजर घोंप ने के स्वरूप, वह जानकारी सतपंथीयों को दे, जिसके कारण सतपंथी लोग पूर्व तैयारी कर सके।
- सतपंथी लोग ऐसे मवालों की मदद से अ.भा.क.क.पा. समाज को तोड़ने का काम करते रहें है।

256

“मवालों”को कैसे रोकें?

एक सवाल स्वरूप महत्व के मुद्दे:

- **सवाल:** समाज में कोई “मवाल” आसानी से अपना काम कैसे कर सकता है? उसे कैसे रोकें?

- **जवाब:** गहराई अध्ययन करें तो हमें उत्तर मिल जाता है। हमें एक बात समझ नी जरूरी है के, एक मवाल अपना काम करता है तब उसे किसी भी बात का भय नहीं होता है। ना बदनामी का और ना अनुशासनात्मक कार्यवाही का भय। इसके कारण वह निडर होकर काम करते है। इसलिए सनातनीयों को एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था शुरू करनी होगी जिसके मदद से वह मवालों को समाज के लोगों के सामने बेनकाब कर सके। (उदाहरण के तौर पर इन्टरनेट पर देखिए www.realpatidar.com/a/category/mavaal) और उनका समाज का सभ्य पद रद कर देने में आए।

  पर ऐसा करे कौन? और कब करे? इसलिए एक कमेटी (भरोसेमंद कट्टर सनातनीयों की) होनी चाहिए जो अमुक समय अंतर पर (उदाहरण के तौर पर साल में एक बार) समाज के हर एक सभ्य का, सतपंथ विषय उस सभ्य के व्यवहार की जांच करने बाद, सभ्य पद रिनयू (renew) करे। इस तरह से लोगों को जिम्मेदारी का एहसास रहेगा और डर भी रहेगा के मेरी हरकतों का कोई नोंध ले रहा है। अगर मैं सतपंथ विषय पर नरम रवैया रखूँगा या पीराणा के दर्शन करने जाऊंगा या सतपंथीयों के साथ व्यवहार रखूँगा तो मेरा सभ्य पद छिन सकता है। अगर ऐसा हुआ तो उनके सामाजिक व्यवहार जैसे के बेटे-बेटियों की सगाई, सामाजिक उठ बैठ, मान मर्यादा इत्यादि में रुकावट आ जाए। फिलहोल उन्हें ऐसा कोई डर नहीं है इसलिए सनातनी समाज के साथ वफादार ना रहे तो भी उनके सभी व्यवहार बिना रोक टोक चल रहें हैं।

  एक बार मवालों को डर लग लगे की अगर वह सनातनी समाज के साथ वफादार नहीं रहेंगे तो, उन्हें बड़ा नुकसान होगा। केवल तब वह सनातनी समाज के साथ “सीधे” चलेंगे और “वफादार” रहेंगे। **पीठ पीछे खंजर घोंप ने वालों के लिए डर का वातावरण निर्माण करना जरूरी है।**

257

4.9 अ.भा.क.क.पा. समाज में दूसरी क्रांति

अत्याचारों के सामने विद्रोह

258

समाज में दूरी क्रांति ...

1. क्रूरता और अत्याचारों के सामने विद्रोह:

- झूठे कोर्ट केसों के आधार पर, सतपंथी लोग, सनातनीयों के भोग पर निजी लाभ लेने लगे। सतपंथीयों के सामने लड़ने के लिए, कोई मदद आती ना दिखने के कारण, किसी भी तरह सनातनी लोग केस से पीछा छुड़ाना चाहते थे।
- पद्धतिबद्ध संस्थागत मदद के अभाव में सनातनीयों का मनोबल टूट ने लगा था।
- वातावरण इतना खराब हो गया था के लोग सनातनीयों के हित की बात करने से डर ने लगे थे।
- पर भाग्यवश लोगों ने अपने विश्वसनीय मित्रों के साथ बातें करना चालू रखा और उनके दिल की भड़ास मित्रों के सामने निकालते रहे।
- जल्दी से लोगों को पता चला के वह अकेले नहीं है। अन्य लोगों की भावना और विचारों उनके विचारों के साथ मिलते है।
- लोगों के हृदय की पीड़ा और दुःख ऐसे स्तर कट पहुँच गए थे के बस लोगों के क्रोध का प्रकोप निकलने की ही देर थी।

259

... समाज में दूसरी क्रांति ...

2.निर्णायक बिन्दु (Turning point); प्रमुख साहब की भूल:

- नवम्बर २००८ में अ.भा.क.क.पा. समाज़ के प्रमुख ने सतपंथीयों का नखत्राणा में बनाए गए नए "खाना" (ताकिया की वजह से खाना को निष्कलंकी नारायण मंदिर नाम दिया है।) के उद्घाटन का आमंत्रण मिला। इस खाना का बाह्य रूप एक परंपरागत हिंदू मंदिर जैसा देने में आया था।
- पीराणा सतपंथ के कारण क.क.पा. जाती की जो दुर्गति हुई थी, उसका इतिहास साक्षी है। दोनों, नैतिक और तकनीकी कारणों की वजह से प्रमुख साहब का उस कार्यक्रम में जाना अनुचित था। ऐसे संजोगों में अगर प्रमुख साहब उस कार्यक्रम में जाए तो सामान्य जनता में गलत संदेशा जाएगा, उसमें कोई दो राय नहीं है।
- आमंत्रण का पता चलते ही, रतनशी बापा के पत्र हिम्मतभाई ने प्रमुख साहब को उस कार्यक्रम में ना जाने की सलाह दी। उसी तरह देश भर के अलग-अलग जगहों में रहने वाले लोगों ने भी प्रमुख साहब को वहाँ ना जाने का अनुरोध किया।
- पर दुर्भाग्य वश, लोगों की भावनाओं का ख्याल ना रखते हुए, प्रमुख साहब उस कार्यक्रम में गए।

260

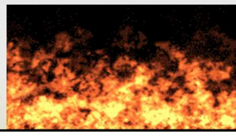
... समाज में दूसरी क्रांति ...

3. लोगों के क्रोध और असंतोष की ज्वाला फुट निकली:

- दूसरी तरफ लोगों के मन में जलती क्रोध और असंतोष की ज्वाला फुट निकालने की कगार पर आ पहुंची थी।
- लोगों को एक नेता की जरूरत थी, जो सतपंथ के अत्याचारों के सामने उनकी भावना व्यक्त करती आवाज केंद्रीय समाज तक पहुंचा सके।
- तारीक ०७-०८-२००९ (07th August, 2009) (i.e., 7/8/9) को श्री हिम्मतभाई रतनशी खेताणी ने १८ मिनट का हृदय हिला देने वाला भाषण, अ.भा.क.क.पा. समाज की आम / जनरल सभा में किया। उन्होंने समाज के नेताओं पर साफ आक्षेप किया की वह समाज को गलत रास्ते पर ले जा रहे है। और समाज के स्थापक सभ्यों ने जो कड़ी मेहनत और खून का पानी बना कर आज के समाज का निर्माण किया है, उसे वह खराब कर रहें है।

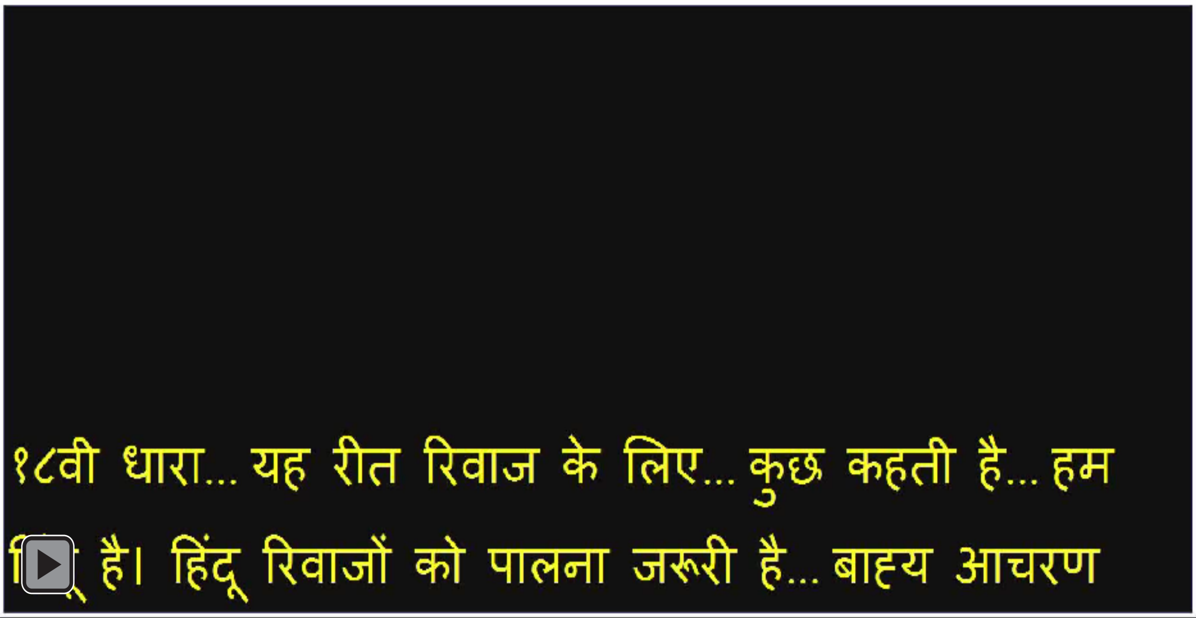
हिम्मतभाई का भाषण: आगामी स्लाइड देखें

- **सनातनीयों के क्रोध और असंतोष रूप ज्वाला को चिंगारी मिली और ज्वाला तो बस भड़क गई**



261

हिम्मत रतनशी खेताणी का तारीक ०७-०८-२००९ (07-Aug-2009) का नखत्राणा स्थित केन्द्रीय समाज में किए ऐतिहासिक भाषण



हिम्मत रतनशी खेताणी का तारीक ०७-०८-२००९ का नखत्राणा स्थित केन्द्रीय समाज में किए ऐतिहासिक भाषण

१८वी धारा... यह रीत रिवाज के लिए... कुछ कहती है... हम हिंदू है। हिंदू रिवाजों को पालना जरूरी है... बाहय आचरण हिंदुओं का होना चाहिए। अगर उसका पालन न करें... तो क्या होगा, उसका क्या प्रावधान है, वह सब रमेशभाई ने पढ़ कर सुनाया। मुझे कहने में अत्यंत खेद है... के अपने समाज का संविधान... जिसके मुखिया प्रमुखश्री हों, उनके सहयोगी हों... उनके ही द्वारा अगर उन धाराओं का उल्लंघन होता हो... तो फिर इस संविधान के धाराओं को कौन पालेंगे?

अभी मैं आपको समझता हु के उल्लंघन कैसे होता है। १८वी धारा में, साफ लिखा है... की हिंदू रीत रिवाजों को पालना। सतपंथ शब्द की व्याख्या क्या है? साफ तौर पर समझ आ जाएगा की वह इस्माइली धर्म का एक भाग है। वह इस्माइली धर्म से अलग नहीं है। साफ लिख देने में आया है, उसकी व्याख्या है। मेरे पास उसके सबूत है। उस सतपंथ का नारायण बापा ने विरोध किया और नारायण बापा को आज हम आदर से देखते है, उनकी पूजा करते है। और दूसरी तरफ... उन्होने जिसका विरोध किया... वह मुस्लिम पीर... कई सारे हिंदुओं को परिवर्तित करने के लिए जवाबदार था... उस पीर का उन्होने विरोध किया। और आज... उस पीर के नामे पर निर्मित होते मंदिरों को हम प्रोत्साहित करते है। वाह रे वाह इस समाज की दोहरी नीति... वाह। कोई कहने वाला नहीं... कोई कहने वाल नई। समझने के बावजूद... कोई कहने वाला नहीं। कैसे मुमकिन है? मैं हाथ जोड़कर सवाल पूछता हु... के यह कैसे शक्य है? एक तरफ नारायण रामजी लींबाणी की आप पूजा करते हो... दूसरी तरफ इमाम शाह के नाम पर बने जाते मंदिरों में जहां ऊमीया माताजी की तस्वीर साथ में रखने में आती है। अरे कितना घोर अपमान होता है, देखो तो सही। आपको पढ़ कर सुनता हु... मेरे पास वह पुस्तक नहीं, आज नहीं लाया हु। मेरे पास है, सभी सबूत है। यह निष्कलंकी नारायण... इमाम शाह बावा इस विषय पर क्या लिखा गया है... इमाम शाह बावा के निष्कलंकी नारायण का जन्म वर्षों पहले हो गया है ऐसा बताया है। वह और कोई नहीं, बावा ने कहा है... के और कोई नहीं, वह... हजरत मुहम्मद पैगंबर के दामाद... हजरत अली... वही निष्कलंकी नारायण है। डॉकयुमेंट में दिखाऊ आपको। अपनी आद्यशक्ति... शक्ति... वह कौन है? इमाम शाह बावा की व्याख्या के अनुसार... बीबी फातिमा। शरम आनी चाहिए शरम... हमें शरम नहीं आती सब कुछ जानने के बावजूद। उसका अपार दुःख है। कोई कहने वाला नहीं है। आज पिछले ४०-५० वर्षों से... यह सब चल रहा है। कोई ओब्जेकशन (विरोध) लेता नहीं। और हमारे जैसे बेवकूफ... किसी समय गुस्से हो जाए... तो ठंडे करने में आते है। अरे... अभी ऐसा नहीं रहा, अब इतना क्रोध न करो... पानी में डंडा मारोगे तो पानी अलग नहीं होगा... हम सब एक है... कैसे एक है? मुझे समझना? आज मुसलमान पीर को मान ने वाले के साथ मैं एक किस तरह... ***चलो मुसलमान पीर को एक्सैप्ट किया (यानी स्वीकार किया) एक बार, पर कैसा पीर... ऐसा पीर के जिसने मेरे पूर्वजों को परिवर्तित करने के लिए कोशिश***

पूरा कर चुका। पर नसीब अच्छा था... पूरे मुसलमान ना हुए... बीच से लौट आए। आज मजे करते होते... सच कह रहा हूँ... यह बुजुर्गों ने सब को परेशानी में डाला। मजे करते होते हम। मियाँ हो गए होते... आज फ़र्स्ट क्लास मौज करते होते हम। यहाँ कुराने शरीफ की आयतों का पठन होता... अल्लाह हो अकबर। पूरे झोर से पुकारते होते। बे शरम लोग।

महेर बानी कर हँसना नहीं, यह सब दुःख हो रहा है... "फरमानजी बिस्मिल्लाह नररहिम सतगोर पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आदि विष्णु निरंजन नरअली मुहम्मद शाह आपकी दुआ... हक लाएलहा इल्लल्लाहो मुहम्मदूर रसूलील्लाहे"... वाह रे हिंदू वाह... वाह हिंदू वाह। इस तरह से पूजा होती थी। हम बेशरम लोग... इस तरह से पूजा करते। आज भी... छिपे तौर पर... इसी प्रकार की पूजाएं चालू है। यह एक इस्लाम धर्म का शाखा है। इस्लाम के दो मुख्य पंथ... शिया और सुन्नी। यह शिया धर्म की शाखा है। इस शाखा का नाम निझारी... इस निझारी के अंदर अन्य शाखाएं है, उनमें से यह सतपंथ। जिस सतपंथ धर्म को पाल कर लोहाणा लोग खोजा हो गए, पाटीदार मुमना हुए, अब उसी सतपंथ में हम है। शरम आनी चाहिए ऐसा इतिहास है हमारा। गौरव जैसा कुछ नहीं है। गौरव अब दिलाना है... सुधर के। पिछले ४०-५० वर्षों पहले बुजुर्गों की मेहनत जो रंग लाई थी... उसके फल स्वरूप... हम सुधरे। हम आज वाद विवाद करते है... धर्म के मामलों में के... रामायण में ऐसा... महाभारत में ऐसा... उसकी जगह हम इस्लाम धर्म के बारे में चर्चा करते होते। खैर बच गए। पर अब वह दूसरी ओर... जुड़े लोग... आज दिन तक... उस झूठी बुनियाद पर खड़ा हुए पंथ को... आज दिन तक जुड़े लोगों के साथ... संबंध क्यों रखने में आते है? अरे संप्रदाय हो सकते है... संप्रदाय यानी हिंदू धर्म के संप्रदाय। आज मुझे कहो... हमारा किसी दिन स्वामीनारायण के साथ झगड़ा हुआ...? आर्य समाजी लोग के साथ कभी झगड़ा हुआ...? नहीं हुआ। झगड़ा हो... तो केवल यह सतपंथी लोगों के साथ ही क्यों...? कैसे होता है? आज हिंदुस्तान में... कई सारे धर्मों का अस्तित्व है। पर हिंसा हो... तब हिंदू और मुसलमानों के साथ ही क्यों होती है? हिंदुओं और पारसियों के साथ क्यों नहीं होती? क्यों? विचार करो... गहन विचार की आवश्यकता है। यह संस्कार गलत है। वहाँ जो हम भटक गए थे, वहाँ के संस्कार गलत है। इसीलिए नारायण बापा जैसे लोगों ने विरोध किया। नहीं तो कोई तकलीफ नहीं थी, हमें सतपंथ। हमें तो धर्म ही पालना और पूजा अर्चना करना ना... उसमें थोड़ा मुसलमानी तत्व हो तो उसमें क्या फरक पड़ता... मरने दो... चलो। पर ना... उसका विरोध किया। नारायण बापा ने सकत विरोध किया। मेरे पिता ने सकत विरोध किया। इसका कारण यही था। इस्लामी विचार धारा थी। समझ लेना, इस्लामी विचार धारा थी उसका यह विरोध है। और आज भी ऐसे यह इस्लामी, जिसे संत कहने में आता है, उस बावा की पूजा करने वालों के साथ, आपका नहीं जमता उसका कारण भी यह है। मेहरबानी कर इसकी नोंध लेनी जरूरी है। इस समाज की स्थापना किसने की, यह इतिहास समझना जरूरी है। कौन से लोगों ने इसमें मेहनत की, किन लोगों ने यह संपत्ति खड़ी की... यह सब विचार करो... बाद में जो निर्णय लेना हो वह लो।

बाकी अब एक बात ध्यान में रखना जरूरी है। समाज में जो युव वर्ग है वह जागृत होता जा रहा है। पहले गरीबी थी। लोग दबे थे। बोल नहीं सकते थे। कुछ गलत प्रस्तुतियाँ मंच ऊपर से होती और उसे चला लेने में आता। विरोध नहीं होता। अब लोग निर्धन नहीं रहे, पैसे आ गए है। पैसों के साथ अभ्यास भी आ गया है। बुद्धि आ गई है। दलील करने की क्षमता आ गई है। इसलिए आप और मैं उन्हें बेवकूफ नहीं बना पाएंगे। और गुमराह नहीं कर पाएंगे। वाद विवाद समाज में होते रहेंगे। इसलिए हो सके इतना समाज में जो कुछ भी आपका संविधान हो, आपकी संचालन की पद्धतियाँ हो, उसने योग्य तौर पर रखो और कानूनी बनाने की कोशिश में रहो। जिससे आने वाले कल में, कानूनी विद्वानों की सलाह ले कर काम करने की जरूरत है। मैं आपको उदाहरण देता हु, पिछली बार चुनाव की प्रक्रिया की आपने। हमने भारत के कोने-कोने में झोन बना दिये। वह झोन के सभ्य यहाँ हाजिर हुए। आपने उन्हें कहा, मौखिक रीत से... अभी तक मौखिक रीत से उन्हें मान्यता दी गई है। आज दिन तक झोन सिस्टम को कानूनी रूप नहीं मिला है। ध्यान में रखना। उन्हें कानूनी रूप देने के लिए आपको संविधान सुधारना पड़ेगा। अभी तक आपने संविधान नहीं सुधारा। आपकी पिछली चुनाव की प्रक्रिया को एक मिनट में मैं अटका सकता था। सब कुछ सुन रहा था। पर मुझे सभा के जूते नहीं खाने थे। देश परदेश से कई प्रतिनिधि बिचारे यहाँ हाजिर हुए थे। खुशी-खुशी आए थे। पहली बार आए थे। और बड़ी संख्या में आए थे। खास कर चुनाव का वर्ष होने के कारण, उत्साह बहुत था। उस उत्साह का भंग मुझे नहीं करना था। नहीं तो चुनाव प्रक्रिया एक मिनट में बंद हो सकती थी। मैं पीछे बैठा था... मेरी आदत के अनुसार मैं पीछे बैठा था वहाँ... सुन रहा था सब कुछ। आज दिन तक झोनल सिस्टम को नियमों के अनुसार मान्यता नहीं मिली। यह सब ध्यान में रखने की जरूरत है। और तुरंत यह सब काम करने की जरूरत है। धार्मिक मुद्दों पर सुस्ती देखना अब बंद होना चाहिए। और जो पक्षपात भरा वलन दिख रहा है, वह तुरंत बंद करने की जरूरत है। अब सहा जाएगा। और अब, अगर आगे यह नीति चालू रहेगी, तो फिर उसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। मैं आपको सच्ची बात कह रहा हूँ। लोगों में अब बहुत सहनशीलता की हद आ गई है। अब सहन नहीं होता। मेहरबानी कर इस पर तात्कालिक कदम उठाओ।

आपने जो भूल की है, उसका आपको आज तक पश्चाताप नहीं होता, उसका मुझे दुःख है। आप खुद पदवी धारक हो कर, अपने बनाए नियमों का भंग करते हो... आप देखो मैंने आपका ध्यान खींचा है। यह बाह्य आचरण... मैंने आपको समझाए। पूजा अर्चना करना यह बाह्य आचरण में है और जो मुसलमान पीर की नाम बनते मंदिर हो... और मुसलमान पीर को ऊमीय माताजी के साथ बैठाने में आएं हो... ऐसे मंदिरों की प्रतिष्ठा में हाज़िरी देकर उसकी शोभा में अभिवृद्धि कर उन्हें प्रोत्साहित करने की इस समाज के प्रमुख और उनके सहयोगियों को कोई जरूरत नहीं होती नहीं। फिर भी आपको सही दिशा बताने में आई थी। आपका ध्यान खींचने में आया था। पर कौन जाने क्यों, उस समय आपकी बुद्धि को क्या हो गया था? मुझे समाज नहीं आता। आपके परिवार जन... आपके मित्र, निकट

के एकदम... सहयोगी, जिन्हें आप पर अपार लगाव हो ऐसे लोगों ने आपको सही रास्ता दिखाया था। इसके बावजूद आप माने नहीं और आप वहाँ गए। बहुत दुःख की बात है। आपने नियमों का भंग किया है। सच पुछो... अब बंद करना चाहता हु मेरी बात, परंतु सच पूछो तो साफ तौर पर यह मामला अविश्वास की दरखास्त के लायक का केस है। मैं इसी समय अविश्वास के दरखास्त और प्रस्ताव यहाँ रख सकने की स्थिति में हूं। पर मुझे ऐसा नहीं करना है। क्योंकि यह रामजी करमशी जैसा इनसान इस समाज को नहीं मिलेगा। कोई ऐब नहीं इस मनुष्य में। इस मनुष्य को बिगड़ने में आया। यहाँ कुछ नाटक बाज लोग है। यहाँ ऐसे कलाकार है, के उनका सर घूमा दिया। पांडुरंग शास्त्री का चुस्त अनुयायी यह मनुष्य, उसका सर भ्रमित कर देने में आया। नारायण बापा के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने वाला मनुष्य... उसका सर घूमा देने में आया। विराणी का यह बेटा, जिसका हमें सभी वीराणीवासियों को गर्व हों, उस मनुष्य का सर घूमा ने में आया। यह नाटकबाजों ने नाटक किया और उनका सर घूमा दिया। इसका मुझे अपार दुःख है। अब मेहरबानी कर इसमें कुछ सुधार हो... तो मैं मेरी जात तो भाग्यशाली मानूँगा... के मैं ने यहाँ दो शब्द आपके सामने पेश किए, आपके कानों में डाले, और उसमें कुछ अच्छा होना होगा, ऐसी आशा के साथ, मैं यहाँ से अनुमति मांगता हूं... अस्तु।

... समाज में दूसरी क्रांति ...

4. रमेशभाई वाघड़िया की समाज के प्रांगण में हुई धरपकड़ – (1 / 2):

- तारीक २७-०२-२०१० को केन्द्रीय समाज के कार्यालय में रमेशभाई की हुई धरपकड़ के किस्से ने सनातनीयों के आंदोलन में तेजी ला दी। इस किस्से के कारण सम्पूर्ण समाज में जागृत हो गया।
- जब हम इस किस्से के पीछे के संजोग और झूठे नाटकों पर नजर करेंगे, तब हमें इस धरपकड़ के किस्से का महत्व समझ आएगा।
- हिम्मतभाई का तारीक ०७-०८-२००९ के भाषण के बाद ज्ञाति में (समाज में नहीं, क्यों की सतपंथ समाज अलग है) दोनों पक्षों के बीच समझौता करने का प्रयास होने लगे।
- दोने गुटों में समझौता हो जाए इसलिए समाधान करने के लिए सतपंथीयों और सनातनीयों के बीच तारीक २७-०२-२०१० को मीटिंग बुलाने में आई।

263

... समाज में दूसरी क्रांति ...

4. रमेशभाई वाघड़िया की समाज के प्रांगण में हुई धरपकड़ – (2 / 2):

- एक तरफ रमेशभाई को समझौते की मीटिंग में बुलाकर दूसरी ओर पुलिस को तैयार करने में आई। अहमदाबाद से पुलिस को खास तौर पर बुलाकर सतपंथीयों के बनाए नखत्राणा के नए "खाना" (निष्कलंकी नारायण मंदिर) में उनकी रहने और खाने पीने की व्यवस्था करने में आई थी। दिन भर पुलिस आराम करती रही।
- दिन पूरा होने की कगार पर आया तब तक रमेशभाई अपनी बात मक्कमता के साथ मीटिंग के सामने रखने में सफल रहे थे। स्वाभाविक है की सतपंथी लोग उनकी बातों में खुद को घेरा हुआ पाया। इसलिए लगभग शाम को ५:०० बजे अहमदाबाद से बुलाई पुलिस मीटिंग रूम में आकार रमेशभाई की धरपकड़ की।
- आश्चर्य की बात यह है की पुलिस के पहुंचने के पहले बिन बुलाए पीराणा सतपंथ के, विभिन्न गांवों से लगभग २०० सतपंथी लोग आ पहुंचे थे। इन बातों से एक पूर्व-नियोजित प्रपंच की गंध आती है और जाने की यह सतपंथीयों को पुलिस की कार्यवाही को पहले से ही जानकारी थी, ऐसा समझा जा सकता है।
- सचमुच शरम की बात है के समाज के एक तो नेताओं के अलावा, बाकी के सारे संकट की इस घड़ी में उस जगह से गायब हो गए थे।

264

... समाज में दूसरी क्रांति ...

5. संबंधों में कटौती – (1 / 3):

- अभी सतपंथीयों के इरादे एक अंधे को भी दिखने लगे।
- एक तरफ समाज में शांति और एकता की बातें करें और दूरी तरफ हाथ मरोड़ ने की रणनीति अपनाई थी।
- रमेशभाई की केन्द्रीय समाज के प्रांगण में हुई धरपकड़ के किस्से ने साबित कर दिया के केंद्रीय समाज के उच्च अधिकारित्व के लिए सतपंथीयों के मन में कोई सन्मान नहीं है।
- जब यह खबर आग की ज्वाला के जैसे फैलने लगी, तब देश भर में से सतपंथीयों के साथ हमेशा के लिए सभी संबंधों को काट देने के कठोर कदम लेने की मांग करने लगे।
- सनातनी संस्थाओं के कई सभ्य खुले आम बाहर आकार इस उचित मांग का समर्थन करने लगे।

265

... समाज में दूसरी क्रांति ...

5. संबंधों में कटौती – (2 / 3):

- अ.भा.क.क.पा. समाज के नेताओं ने परिस्थिति की गंभीरता को समझ कर लोगों की भावनाए को ध्यान में रख कर, गहरा विचार करने के बाद तारीक २५ मार्च २०१० को एक श्वेत पत्र जारी किया। उसमें साफ कर देने में आया की यह समाज सनातनीयों द्वारा, सनातनीयों के हित के लिए निर्मित करने में आई है। उसमें सतपंथीयों के लिए कोई स्थान नहीं है।
- अ.भा.क.क.पा. समाज ने अपने संविधान में और ज्यादा स्पष्टता करते फेरबदल करने में आए। तारीक ०७ में २०१० को अ.भा.क.क.पा. समाज के सभ्यों की सामान्य (जनरल) सभा बलाई थी। जिसमें जंगी २५,००० से भी ज्यादा लोग हजार थे। इस सभा में संविधान में और ज्यादा स्पष्टती लाते फेरबदल पास करने में आए। उसमें खास कर की यह समाज केवल सनातनीयों की थी, है और भविष्य में रहेगी ऐसी स्पष्टता हो गई। अपेक्षा विपरीत संविधान के यह फेरबदल का प्रस्ताव निर्विरोध और सर्वसम्मति के साथ पास हो गया।

  (नोंध: साधारण तौर पर, समाज की सामान्य सभा में २,००० से ज्यादा लोग आते नहीं है। इस सभा में २५,००० लोगों की जंगी संख्या में उपस्थिति, यह सूचित करती है के सामान्य लोग अपने धर्म प्रति कितने चिंतित है और उसके लिए उनके नेताओं को समर्थन करने के लिए वह कितना चिंतित है।)
- सभी संबंधों को काट ने में आए और सतपंथ के मुद्दे पर ठोस रवैया अपना ने की नीति अपनाए।

266

... समाज में दूसरी क्रांति ...

5. संबंधों में कटौती – (3 / 3):

- हिम्मतभाई और उनके साथीयों ने अगणित सभाएं भरने का काम चालू रखा। जहां जाते वहाँ उन्हें नायकों की तरह स्वागत किया जाता। उन्हें लोगों के तरफ से बहुत समर्थन मिला।
- उनकी मेहनत के कारण आज भी सनातनी अभियान की गति बनाई रखी है।
- जल्दी से सनातनीयों की अन्य संस्थाओं ने भी सतपंथी लोगों का बहिष्कार करने के और संविधान में बदलाव करने के प्रस्ताव पारित कर दिये। लगभग सभी संस्थाओं ने ऐसे प्रस्ताव निर्विरोध और सर्वसम्मति से पारित किए। अगर कभी विरोध हुआ भी तो, प्रचंड बहुमत के आधार पर सनातन तरफ़ी बदलावों को पारित करने में आए।

267

... समाज में दूसरी क्रांति ...

6. सतपंथी जिद पर अड़े रहे (1 / 3):

- पर सतपंथीयों ने अपनी जिद नहीं छोड़ी। अपना अहं रखने के लिए, पीठ पीछे वार करने जैसा काम उनहों ने किया। किसी भी तरह से अतिरिक्त चेरिटी कमिश्नर, राजकोट के पास से समाज की तारीक ०७-०५-२०१० की सामान्य सभा और कार्यक्रम में “कच्छ के कड़वा पाटीदारों का इतिहास” नाम के पुस्तक के अनावरण पर रोक का आदेश ले आए।
- शरम की बात है के अतिरिक्त चेरिटी कमिश्नर ने एक विवाद भरा आदेश दिया। कानून के जानकारों के मानना है की कमिश्नर के पास ऐसा कोई अधिकार ना होने के बावजूद, आदेश दिया है। उन्होने कानून के आर्थिक मामलों की धारा का उपयोग सभा को रोक ने के लिए और इतिहास के पुस्तक का विमोचन जैसा बिन-आर्थिक कामों के लिए इस्तेमाल किया है।

268

... समाज में दूसरी क्रांति ...

6. सतपंथी जिद पर अड़े रहे (2 / 3):

- तारीक ०७ में २०१० को बुलाए सामान्य सभा के बाद आयोजित तारीक १२ में २०१० के स्वर्णिम महोत्सव कार्यक्रम में समाज के पंचम अधिवेशन दरम्यान कुछ मुट्ठीभर सतपंथीयों ने उसी नियमों का विरोध किया जिसे समाज ने पहले की मीटिंग में सर्वसम्मति से पारित किया था।
- उन्होने ने शोर किया और प्लास्टिक की कुर्सियों को हवा में फेंक कर महोत्सव को खराब करने का प्रयत्न किया। पर हाजिर पुलिस तुरंत दौड़ आई और परिस्थिति को काबू में कर लिया। इस घटना का वीडियो रिकॉर्डिंग भी है।
- इतना कुछ हो जाने के बाद भी इन लोगों ने सनातनीयों के खिलाफ झूठी पुलिस शिकायत दर्ज कर कार्यक्रम को खराब करने का आक्षेप सनातनीयों पर डाला। पर बंद भीतरी वर्तुले में वह मानते है कि सच्चे गुनहगार तो वह खूब है। सच्ची बात समझ ने बावजूद, सनातनीयों को परेशान करने के हेतु यह झूठी शिकायत दर्ज कि है।
- यह शिकायत में मजे कि बात यह है के कोई सनातनी अपने ही सनातनी कार्यक्रम को क्यों खराब करें? कोई भी सामान्य मनुष्य भी यह बात समझ सकते है। हमेशा की तरह, सतपंथीयों ने सारा सर झूठी और बिन बुनियादी शिकायत दर्ज की है।

269

... समाज में दूसरी क्रांति ...

6. सतपंथी जिद पर अड़े रहे (3 / 3):

- सनातनीयों के खिलाफ झूठी शिकायत दर्ज करने का सिलसिला चलता ही रहा। आज तक धर्म प्रेरित झूठे केस कई जगहों पर दर्ज किए है। ऐसे कई केस है जिसकी नोंध नहीं ली गई है, उन केसों की बातें कई बार सुनने में आती है।
- यह सब बातों का उल्लेख यहाँ करने का मकसद इतना ही है के श्रोताओं का ध्यान इस बात पर ले जाना था के सतपंथी लोगों अपने कर्मों से जताते है की उन्हें अपने गलत काम का कोई पश्चाताप नहीं है।
- उन्हें हिंदुओं की पहचान रखनी है और मुसलमानी निझारी इस्माइली धर्म के साथ वफादार रहना है।

270

... समाज में दूसरी क्रांति

7. सनातनीयों की सच्ची क्रांति:

- सनातनी लोग अच्छी तरह से जानती है की भविष्य में भी उन लोगों को, झूठी पुलिस शिकायतों और कोर्ट केसों की मदद से, परेशान कर उनका मनोबल तोड़ने की कोशिश चलती ही रहेगी।
- सतपंथीयों की रणनीति यह रहेगी के जब उन्हें कोर्ट का फैसला उनके विरुद्ध होगा, तब भावुक अपील करके या शांति और एकता की बातें कर भाई-भाई की जिम्मेदारी की आदर्शवादी बातों का हवाला देकर और मित्रों और परिवार पासे से दबाव ला कर किसी भी तरह कोर्ट के बहार समझौता कर लेंगे। जिस की वजह से उनका कानूनी ट्रेक रेकार्ड अबाधित रहे।
- आज तक वह सनातनीयों के विरुद्ध इस हथियार का भरपूर उपयोग किया है और भविष्य में भी करते रहेंगे इसमें कोई शंका नहीं है।
- पर परमात्मा की कृपा से सनातनीयों ने उनके खिलाफ होती झूठी पुलिस फरियाद और कोर्ट केस के डर के सामने मजबूत प्रतिरोधक शक्ति खड़ी कर ली है। उनका युवा वर्ग बहुत शिक्षित है जिसके कारण उन्हें शक्ति और आत्मविश्वास मिलता है।
- सनातनीयों का आत्मविश्वास, समाज प्रति उनकी प्रतिबद्धता (commitment) और खुले प्रवचन दर्शाता है के उन्होने इस सच्चाई का स्वीकार कर लिया है और आखिरी मनुष्य जीवित होगा तब तक लड़ने के लिए तैयार है।

यह क्रांति हमेशा के लिए है।

271

4.10 आशंकाएं

खरा भय किस का?

272

खरा भय किस का?

- हाल की क.क.पा. जाति में निर्मित दूसरी क्रांति के परिणाम स्वरूप, समय जाते, सतपंथी लोग हिंदुओं से अलग हो जाएंगे और उनकी हिंदू पहचान खतरे में आ जाएगी।
- उसके बाद धीरेधीरे, उनकी मूल पहचान "मुमना मुसलमान" उन पर हावी हो जाएगी।
- एक बार उनकी यह पहचान प्रसिद्ध हो जाएगी तब वह पंथ हिंदू धर्म की पकड़ से छूट कर उसके मूल इस्लामी धर्म तरफ मुड जाएंगे।
- जिस तरह से मूल सतपंथी खोजा लोग धीरेधीरे मूल इस्लाम के तरफ मुड गए, उसी तरह पीराणा सतपंथ धर्म भी उनके नक्शेकदम पर चल कर इस्लाम में मिल जाएंगे।

273

खोजा कौम ने कौन सा रास्ता अपनाया?

- वर्ष १९७५ में, पेरिस में, आगा खान की अगवाई में एक अधिवेशन आयोजित किया और उसमें ऐसा प्रस्ताव पारित किया के जिसके कारण उनके धार्मिक गीनानों को नीचे बताए तीन भाग में विभाजित करने में आया;

1. **समस्या रहित:** जो गीनाननों में "हिंदू तत्व" नहीं हो और खानों (जमातखानों) में उनका पाठ कर सके।
2. **थोड़े हिंदू तत्व:** जो गीनाननों में थोड़े हिंदू तत्व होतें है, उन तत्वों को हटा कर उनकी जगह इस्लामी तत्वों को रख देना। जैसे की "हरी" की जगह "अली", "गुरु", "पीर" इत्यादि।
3. **बहुत ज्यादा हिंदू तत्व:** सतपंथीयों का प्रसिद्ध "दस अवतार" पर उसके वजह से हमेशा के लिए प्रतिबंध घोषित कर दिया।

- इस तरह से धीरेधीरे सम्पूर्ण खोजा कौम, मूल इस्लाम में विलीन हो गई। आधुनिक युग और लोगों के अभ्यास के उच्च स्तर को ध्यान में रख कर, खोजा कौम समझ गई है कि अब ताकियो का प्रयोग करना ठीक नहीं है। इसलिए आज वह पूरे सम्मान के साथ उन्होने घोषणा की के उनका धर्म मुसलमान धर्म का एक पंथ है और सच्चा इस्लाम अपनीने की कोशिश करेंगे। इसके करम उनके अनुयायी सम्मान की अनुभूति करते है और अन्य धर्म के लोग भी उन्हें आदर की नजर से देखते है।
- दुर्भाग्य वश, पीराणा सतपंथ को यह बात समझ नहीं आई है। जितना ज्यादा समय उन्हें लगेगा, उतना ही ज्यादा नकसान होगा। एक बार ताकिया पालने का बंद कर दें और खुद को बिन-हिंदू होने की घोषणा कर देंगे, तो जो अनुयायी उनमें बचेंगे, वह दिल से सतपंथ पालेंगे और सभी सच्चे सतपंथी होंगे। 274

... खरा भय किस का?

- इतना तो स्पष्ट दिख रहा है के जब सतपंथ के धार्मिक नेताओं की पकड़ में सम्पूर्ण समाज आ जाएगा, तब लोगों के पास सतपंथ पालने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा। उसके बाद सतपंथ के धार्मिक नेता चतुराई से उस पंथ में धीरे-धीरे इस्लामी तत्वों को और ज़ौर शोर से मिलकर पंथ को सच्चे इस्लाम की तरफ ले जाएंगे।
- इस तरह से पीर सदरुद्दीन का अधूरा काम पूर्ण होगा।

275

सारांश

276

सारांश ...

- इस प्रस्तुति (Presentation) द्वारा एक बात साफ समझ में आती है कि सतपंथी लोगों ने ताकिया के मदद से चतुराई भरी रणनीति तैयार की है। परिस्थिति के अनुसार गिरगिट के जैसे रंग बदले और अमीबा (आकार बदलता एक जीव) के जैसा आकार बादल सके।
- जब अल्पमत में होंगे तब उनके हाव भाव, वेश भूषा और आचरण बहुमत के जैसा होगा।
- पर, एक बार उनके पास नियंत्रण आ जाएगा, तब उनका सच्चा इस्लामी रूप और आचरण को अपना लेंगे।

277

... सारांश ...

- बाह्य परिस्थिति अनुरूप, वह अपनी पहचान बादल देंगे। कई बार गिरगिट के जैसा रंग बादल कर हिंदू होने का दिखावा करेंगे और अमीबा के जैसे आकार बदल कर हिंदू रीत रिवाजों और परंपरा भी पालेंगे।
- आज सतपंथी लोग सभी तरफ से दबाव में आ गए है। इसलिए सतपंथ को एक तरफ रख कर हिंदू दिखावा अपना लेंगे जाने हिंदू धर्म स्वीकार लिया हो।
- इन बातों को लेकर उन पर विश्वास रखना मूर्खता है और वह असंभव है। उनकी बातों और कर्मों पर विश्वास रखना असंभव है।

278

... सारांश

- इस परिस्थिति में जान ने लायक महत्व की बात यह है के, परिस्थिति अनुकूल सतपंथी लोग अपनी पहचान, साहित्य और श्रद्धा इत्यादि, तीन मुद्दों के इर्दगिर्द घूमती रहेगी।

1. इमाम शाह
2. हजरत अली / निष्कलंकी नारायण
3. पीराणा स्थित इमाम शाह की दरगाह

नोंध: भविष्य में वह नाम बदलेंगे, नई परिभाषा बनाएँगे, साहित्य बदलेंगे (ताकिया पालेंगे) पर उनकी पहचान ऊपर बताए तीन मुद्दों के इर्द गिर्द घूमती रहेगी

- सतपंथ और सतपंथियों पर नजर रखने वालों, विश्वास रखने वालों एवं उनके साथ कोमल व्यवहार रखने वालों को ऊपर बताए मुख्य तीन मुद्दों को अवश्य ध्यान में रखने होंगे।

279

एक हिंदू की पीड़ा

एक हिंदू को इस्लाम की तरफ जाता देख कर कोई भी हिंदू को पीड़ा होगी। पर सतपंथीयों को साथ रखें तो उनकी धर्म परिवर्तन करवाने की युक्ति प्रयुक्ति के कारण ज्यादा नुकसान होगा और बड़ी परेशानी खड़ी हो जाएगी।

क.क.पा. जाति ने सतपंथीयों के साथ संबंध तोड़ कर कम नुकसान वाला रास्ता अपनाया।

280

THANK YOU



Real Patidar

www.realpatidar.com
mail@realpatidar.com
www.facebook.com/realpatidar
Download: http://www.realpatidar.com/satyaprakash

281

https://archive.org/details/bk293_WithVideo/page/n177/mode/1up



पृष्ठभूमि

रीयल पटीदार, एक जन आंदोलन है। श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पटीदार समाज (अ.भा.क.क.पा. समाज) के साधारण लोगों द्वारा शुरू किया गया यह आंदोलन है, जिसका मकसद लोगों को धर्म के मुद्दे पर जागरूक करना है और इस के साथ जुड़े धार्मिक मुद्दों पर प्रकाश डालना है।

शिया मुसलमानों का एक पंथ, जिसका नाम, पीराणा सतपंथ अथवा इमामशाही पंथ है, उस पंथ पर सच्ची जानकारी लोगों तन पहुंचाना यह इस आंदोलन का मुख्य मकसद है। उस पंथ की (सतपंथ की) स्थापना ईरान से आए एक इसमाईली पीर इमाम शाह बावा उर्फ इमाम शाह महाराज ने की था, जिनका मकसद स्थानीय हिंदुओं का धर्म परिवर्तित कर उन्हें मुसलमान बनाना था। इस पीर की दरगाह अहमदाबाद के पास आए पीराणा नामक गाँव में हैं।

इस पंथ को मानने वाले अनुयायियों का एक बहुत बड़ा बहुमत में रहने वाला वर्ग है कच्छ कड़वा पटीदार जाती का। इस जाती के कई लोग सतपंथ धर्म को एक सच्चा हिंदू धर्म है ऐसी गलत फहमी में रहकर पाल रहे है। उन्हें सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है, इस बात की जानकारी नहीं है सतपंथ के बाह्य हिंदू दिखावा के कारण यह लोग भ्रमित हो गए हैं।

ऐसी भ्रम को दूर कर सत्य बात लोगों के सामने लाने के हेतु से यह आंदोलन शुरू किया गया है। निर्दोष और अंजान लोग, जो सतपंथ को हिंदू धर्म का भाग समाज ऐसा अंध-विश्वास रख कर पाल रहे है, वैसे लोगों को जागृत करने का हेतु है। इस आंदोलन को बहुत बड़ी सफलता मिली है।

पीराणा सतपंथ और उसका हिंदू कच्छ कड़वा पटीदार जाती पर प्रभाव - इस विषय पर ठोस जानकारी इस पुस्तक के द्वारा दी गई है। सरकारी दस्तावेजों और सतपंथ विषय के प्रसिद्ध और आदरणीय संशोधन कारों के काम के आधार एवं अन्य मजबूत प्रमाणों को इस पुस्तक में समर्थन रूप में प्रकाशित किए गए है।

धर्म परिवर्तन के मुद्दे में रुचि रखने वाले हर एक व्यक्ति को (वह किसी भी समाज या धर्म का हो सकता है) इस पुस्तक को एक बार जरूर पढ़ने की खास, फिर से खास आग्रह पूर्वक विनति है। वास्तव में धर्म परिवर्तन किस तरह से कराया जाता है, इस पर जानकारी इस पुस्तक में हैं।